राजस्थान पुरातन ग्रन्थमाला

राजस्थान-राज्य द्वारा प्रकाशित

सामान्यतः अखिलभारतीय तथा विशेषतः राजस्थानदेशीय पुरातनकालीन
संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हिन्दी, राजस्थानी आदि भाषानिबद्ध
विविधवाङ्मयप्रकाशिनी विशिष्ट-ग्रन्थावली

प्रधान सम्पादक

फतहसिंह, एम.ए., डी.लिट्.
निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर

ग्रन्थाङ्क १०२

वैताल-पचीसी

—

प्रकाशक

राजस्थान-राज्याज्ञानुसार

निदेशक, राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान
जोधपुर (राजस्थान)

१९६८ ई०

वि० सं० २०२५ भारतराष्ट्रीय शकाब्द १८९०

प्रधान-सम्पादकीय

वैताल-पचीसी से भारतीय समाज चिर-परिचित है। सस्कृत भाषा मे तो यह सर्वत्र उपलब्ध है ही, परन्तु हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं मे भी यह ग्रन्थ प्रकाशित होता रहा है। प्रस्तुत ग्रन्थ संस्कृत वैतालपञ्चविंशतिका का राजस्थानी रूपान्तर है जो १८वी शताब्दी मे श्री देईदान नाइता ने प्रस्तुत किया था।

डॉ० पुरुषोत्तमलाल मेनारिया ने इस ग्रन्थ का सम्पादन सन् १९६५ में प्रारंभ किया था और इसका मुद्रण सन् १९६७ मे प्रारम्भ हो गया था। ग्रथ की भूमिका तैयार न होने के कारण इसका प्रकाशन अब तक रुका रहा। हर्ष का विषय है कि अब यह ग्रन्थ प्रकाशित होकर राजस्थानी भाषा के प्रेमियो को सुलभ हो सकेगा और इसके द्वारा राजस्थानी भाषा की अभिवृद्धि होगी।

विद्वान् सम्पादक ने जो परिश्रम किया है, उसके लिये वे बधाई के पात्र हैं।

जन्माष्टमी, वि०सं० २०२५.
जोधपुर

—फतहसिंह

विषयानुक्रम

प्रस्तावना

संस्कृत-कथा-साहित्य :

सस्कृत-कथा-साहित्य का प्रसार देश-विदेश में अधिक हुआ है। उदाहरण-रूपेण पंचतन्त्र का प्रथम पहलवी रूपान्तर लगभग ढाई हजार वर्ष पूर्व ५७० ई० पू० किया गया। यह रूपान्तर अब अप्राप्त है किन्तु इसके आधार पर रचित प्राचीन सीरियन और अरबी अनुवाद इसके प्रमाण-रूप में उपलब्ध हैं। अब तक विश्व की समस्त प्रमुख भाषाओ मे पचतन्त्र के रूपान्तर हो चुके हैं। इसी प्रकार कथासरित्सागर, हितोपदेश, शुकसप्तति, सिंहासनद्वात्रिंशिका, वेताल-पचविंशतिका आदि कथा-ग्रथो के अनुवाद भी अनेक भाषाओं मे हुए हैं जिससे इनकी लोकप्रियता ज्ञात होती है। ईसप की कहानियो और 'अरबी अलिफ लैला' जैसी रचनाओ में भी उक्त भारतीय कथाओ का प्रभाव स्पष्ट लक्षित होता है।

वेतालपंचविंशतिका और कथासरित्सागर :

वेतालपंचविंशतिका का समावेश कथासरित्सागर के शशाङ्कवती-नामक बारहवें लम्बक[1] में हुआ है। वेतालपचविंशतिका की कथा कथासरित्सागर की मूल कथा से अनूठे रूप में सयुक्त की गई है। राजा मृगांकदत्त उज्जयिनी की ओर जा रहा था कि आकाश मार्ग में उसने अपने मत्री विक्रमकेशरी को एक वेताल के कन्धे पर उड़ते हुए देखा। विक्रमकेशरी राजा मृगाकदत्त को देखते ही अपने वाहनसहित जमीन पर उतर आया। राजा और मत्री दोनो मिल कर बहुत प्रसन्न हुए। तदुपरान्त मत्री ने वेताल को विदा करते हुए कहा "बुलाऊं तब पुनः-उपस्थित हो जाना।"

---

१. लम्बक का मूल सस्कृत-शब्द "लाभ" प्रतीत होता है। शशांकवती लम्बक, मदिरावती लम्बक और पद्मावती लम्बक आदि से तात्पर्य है। क्रमशः शशांकवती, मदिरावती और पद्मावती-लाभ अर्थात् प्राप्ति विषयक कथाएं। हेमचन्द्राचार्य ने 'काव्यानुशासन-टीका' में और सुबन्धु ने 'वासवदत्ता' मे बृहत्कथा को लम्बकों में विभक्त बताया है। वादीभसिंहकृत 'गद्यचिन्तामणि' के अनुसार पत्नी-प्राप्ति विषयक कथाओं को 'लम्ब' कहा गया है। संघदास-गणि तथा धर्मदास गणि ने अपने 'वसुदेवहिण्डी' नामक कथा-ग्रंथ को भी १०० लम्बको में विभक्त किया है। श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव ने अनेक वर्ष परिभ्रमण करते हुए १०० विवाह किये जिनका इस कथा-ग्रथ मे निरूपण हुआ है।

फिर मंत्री विक्रमकेशरी ने राजा को एकान्त में ले जाकर कहा "सर्प के शाप द्वारा आप लोगो से बिछुड़ कर मैं घूमता हुआ ब्रह्मस्थान-नामक ग्राम मे एक बावड़ी के किनारे पहुचा। वहां एक पेड के नीचे बैठा हुआ था। उसी समय एक वृद्ध ब्राह्मण आया और बोला कि यहा एक विषैला सर्प रहता है, उसने मुझे काट खाया है। तुम यहा मत ठहरो, नही तो वह साप तुम्हे भी काट खायेगा। हे राजन् ! तब मैंने अपनी विद्या से उस ब्राह्मण के विष को दूर कर दिया। उस ब्राह्मण ने प्रसन्न होकर कहा "तुमने मेरे प्राण बचाये हैं। मैं तुम को वेतालसिद्धि का मत्र देता हूँ।" मैंने कहा "मत्र लेकर क्या करूंगा ? मैं तो अपने राजा से मिलना चाहता हूँ।" तब ब्राह्मण बोला "वेतालसिद्धि होने से सभी मनोकामनाए पूर्ण हो सकती हैं। जैसे कि राजा विक्रमादित्य ने वेताल-सिद्धि से विद्याधरो का ऐश्वर्य प्राप्त किया था।" तब उस ब्राह्मण ने विक्रमादित्य-सम्बन्धी वेतालपचविंशतिका-कथा सुनाना प्रारम्भ किया।

वेतालपचविंशतिका की कथाए सुन कर विक्रमकेशरी राजा मृगाकदत्त से बोला "मैंने उस ब्राह्मण से मत्र सीख कर उज्जैन के श्मशान मे वेताल को सिद्ध किया है और वेताल की सहायता से ही पुनः आपके दर्शन कर सका हू।"

कथासरित्सागर भारतीय कथा-साहित्य मे सर्वाधिक महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसका आलेखन पण्डित सोमदेव ने काश्मीर के राजा अनन्तदेव की महारानी के लिए सन् १०६३ से १०८१ ई० के बीच किया था। पूरी कथा १८ लम्बको और १२४ तरगो मे विभक्त है। कथासरित्सागर वास्तव मे अनेक छोटी-बडी कथारूपी सरिताओ से परिपूर्ण सागर है। सागर के रूप मे उपमित यह महाग्रथ पैशाची मे गुणाढ्य रचित बृहत्कथा का सार-मात्र है, जिसकी सूचना कथासरि-त्सागर के प्रारम्भ मे ही इस प्रकार उपलब्ध होती है :—

बृहत्कथायाः सारस्य सग्रहं रचयाम्यहम्।[1]

कथासरित्सागर के अन्त में बृहत्कथा को कथाओ-रूपी अमृत की खान सूचित करते हुए लिखा गया है—

नानाकथामृतमयस्य बृहत्कथायाः सारस्य सज्जनमनोम्बुधिपूर्णचन्द्रः।
सोमेन विप्रवरभूरिगुणाभिरामरामात्मजेन विहित. खलु सग्रहोऽयम् ॥१२
प्रवितततरगभगि. 'कथासरित्सागरो' विरचितोऽयम्।
सोमेनामलमतिना हृदयानन्दाय भवतु सताम् ॥१३॥[2]

---

१. कथापीठनाम प्रथमो लम्बक., ३।
२. ग्रन्थकर्तुः प्रशस्ति.. १२, १३।

बृहत्कथा की रचना गुणाढ्य ने आन्ध्र-सातवाहन राजाओं के युग में लगभग प्रथम शताब्दी मे की थी। इस काल मे हमारे व्यापारी जल-थल मार्गों से दूर-दूर तक की यात्राए करते थे जिनका उल्लेख गुणाढ्य ने अपनी बृहत्कथा में किया था। बृहत्कथा की उत्पत्ति-सम्बन्धी कथा भी कम रोचक नही है। शिवजी ने एकान्त में सात विद्याधर चक्रवर्तियो की कथा का वर्णन पार्वती को सुनाया, तब उनके अनुचर पुष्पदन्त ने सूक्ष्म रूप धारण कर उन कथाओ को सुन लिया। पुष्पदन्त ने इन कथाओ का वर्णन अपनी पत्नी जया के आगे किया। जया ने अपनी सहेलियो में इन कथाओ का प्रचार किया तो पार्वती को भी इसकी सूचना मिली। पार्वती ने कुपित होकर पुष्पदन्त को मृत्युलोक मे जन्म लेने का शाप दिया। अनुचर माल्यवान ने अपने भाई पुष्पदन्त का पक्ष लिया तो उसको भी मृत्युलोक में जन्म लेने का शाप दिया गया। किन्तु पार्वती ने जया को शोकमग्न देखा तो कहा "पुष्पदन्त मृत्युलोक में विन्ध्यगिरि के काणभूति पिशाच को ये कथाएं सुनायेगा और माल्यवान इनका मृत्युलोक में प्रचार करेगा तो दोनो की शाप से मुक्ति हो जायेगी तथा वे कैलाश में फिर आवेंगे।" तदनुसार पुष्पदन्त कौशाम्बी में वररुचि-कात्यायन के रूप मे और माल्यवान गुणाढ्य के रूप मे उत्पन्न हुए। कात्यायन ने काणभूति को सातों कथाए सुना कर शाप से मुक्ति प्राप्त की। गुणाढ्य ने अपने दो शिष्य गुणदेव और नन्ददेव के साथ काणभूति नामक पिशाच से उक्त सातो कथाए पैशाची भाषा मे सुनी। गुणाढ्य ने इन सातों कथाओं को चर्म-पत्रो पर रक्त से सात लाख श्लोको में लिखा और राजा सातवाहन के पास भेजा। राजा ने पैशाची मे लिखित कथाओं का आदर नही किया जिससे गुणाढ्य को बहुत दुःख हुआ। गुणाढ्य ने दुःखी होकर इनमें से छः कथाओ को जला दिया। केवल सातवी कथा शिष्यो के अनुरोध से भस्म नही हो सकी। इस सातवी कथा की महानता राजा सातवाहन को ज्ञात हुई तो उसको छः कथाएं नष्ट होने का बड़ा पश्चात्ताप हुआ। राजा ने इस सातवी कथा को गुणाढ्य के पास जाकर प्राप्त की और इसका प्रचार किया।

बृहत्कथा के विषय में नेपाल माहात्म्य अ० २७-२९ में एक अन्य कथा भी है। शिवजी एकान्त में पार्वती को कथाए सुनाने लगे। तब उनके एक भृंगी नामक गण ने भौंरे का रूप धारण कर कथाए सुनी और अपनी पत्नी विजया को सुनाई। विजया से इन कथाओं की सूचना पार्वती को प्राप्त हुई तो उन्होने शिवजी से कहा। शिवजी ने ध्यान लगा कर ज्ञात किया कि यह अपराध भृंगी ने किया है। तब शिवजी ने भृंगी को मृत्युलोक मे जन्म लेने का शाप दिया।

भृंगी ने क्षमा-याचना की तो शिव ने कहा "इन कथाओं को नौ लाख श्लोकों मे लिखोगे तो शाप से मुक्ति मिलेगी।

भृंगी ने गुणाढ्य के रूप मे जन्म लिया। वह बाल्यकाल में ही अनाथ होकर उज्जैन पहुचा। उज्जैन का राजा मदन, रानी लीलावती और राजपण्डित शर्ववर्मन् था। एक समय जल-विहार के समय राजा ने मोदक शब्द का अशुद्ध उच्चारण किया तो गुणाढ्य ने १२ वर्ष में तथा शर्ववर्मन् ने केवल २ वर्ष में राजा को व्याकरण-ज्ञान देना स्वीकार किया। दोनों मे स्पर्द्धा हुई तो शर्ववर्मन् ने 'कलाप-व्याकरण' की रचना कर केवल दो वर्षों में राजा को संस्कृत-व्याकरण का ज्ञान करा दिया। तब राजा ने गुणाढ्य को आदेश दिया कि वह कभी संस्कृत का व्यवहार न करे।

गुणाढ्य राज-दरबार छोड़ कर वन में चला गया, वहां पुलस्त्य ऋषि ने सभी कथाए पैशाची मे लिखने का सुझाव दिया। तदनुसार पेड़ के पत्तों पर वह बृहत्कथा को लिख कर उनका वाचन करने लगा। राजा ने इन कथाओं का माहात्म्य सुना तो स्वयं जा कर गुणाढ्य से दो बार पढ़ने का आग्रह किया। तब गुणाढ्य ने कहा 'मैं तो नेपाल जा कर शिवलिंग की प्रतिष्ठा एवं पूजा करूगा और आप इन नौ लाख पैशाची छन्दो का रूपान्तर सस्कृत मे करावें।' तदनुसार बृहत्कथा का सस्कृत-रूपान्तर प्रसिद्ध हुआ।

बृहत्कथा को ऐसा विशाल सरोवर कहा गया है जिसकी एक-एक बूद से अनेक कथाए बनी—

> सत्य बृहत्कथाम्भोधेर्बिन्दुमादाय संस्कृताः।
> तेनेतरकथाः कन्या. प्रतिभान्ति तदग्रतः॥
>
> —धनपालकृत तिलकमञ्जरी (११ वीं० श०)

बृहत्कथा-ग्रन्थ कालान्तर मे लुप्त हो गया किन्तु इसके चार रूपान्तर प्राप्त हैं—

१. बुधस्वामीकृत बृहत्कथा-श्लोक-सग्रह, नेपाली रूपान्तर, ५ वीं० श०,

२. क. संघदासगणि एव धर्मदासगणिकृत वसुदेवहिण्डो[1], जैन रूपान्तर

---

१. हिण्डी का अर्थ परिभ्रमण है। राजस्थानी भाषा मे यह इसी अर्थ मे प्रयुक्त होता है—

> ढोलो हल्लाणो करे, धण हिण्डवा न देय।
> टग टग झूमे पागड़े, डबडब नयण भरेह॥ (ढोला मारू रा दूहा)

३. क्षेमेन्द्रकृत बृहत्कथा-मंजरी, काश्मीरी रूपान्तर,

४. सोमदेवरचित कथा-सरित्सागर, काश्मीरी रूपान्तर।

वेतालपचविंशतिका का समावेश कथासरित्सागर (१२वें शशांकवती लम्बक, तरग ७५-९९) मे और क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामजरी में (९-२-१९-१२२१) है किन्तु गुणाढ्य की बृहत्कथा मे था अथवा नही यह विषय अब तक विचारणीय बना हुआ है। हर्टेल, लुकात और एजर्टन की सम्भावना है कि वेतालपञ्चविंशतिका की कथाए बृहत्कथा में नही थी क्योकि वेतालपंचविंशतिका की कथाए बृहत्कथा के प्राचीन रूपान्तर बुधस्वामीकृत बृहत्कथा-श्लोक-सग्रह मे नही हैं। प० बलदेव उपाध्याय के मतानुसार भी वेतालपचविंशतिका को बृहत्कथा का अश नही माना जा सकता और इसकी कथा स्वतत्र है।[1]

इस प्रकार वेतालपचविंशतिका का प्राचीनतम रूप वर्तमान में केवल क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामजरी (१०२९-६४ ई०) और सोमदेव के कथासरित्सागर (१०६३-८१ ई०) मे ही सुरक्षित है।

वेतालपचविंशतिका के सस्करण :

डॉ० ए० बी० कीथ के मतानुसार वेतालपचविंशतिका के विभिन्न सस्करण इस प्रकार हैं—शिवदास का संस्करण गद्य-पद्य मिश्रित है। एक अज्ञातकर्तृक संस्करण केवल गद्य में है और क्षेमेन्द्र की बृहत्कथामंजरी पर आधारित है। कालान्तर मे शिवदास के सस्करणो मे क्षेमेन्द्र के पद्य मिलते गये। इसका एक सस्करण जम्भलदत्तकृत है जिसमें पद्यात्मक नीति-वचनो का अभाव है। एक सक्षिप्त सस्करण वल्लभदासकृत है और अनेक भारतीय भाषाओ तथा मंगोल भाषा में इसके रूपान्तर मिलते हैं।[2]

वेतालपचविंशतिका के एक अन्य संस्करण की सूचना थीओडोर आफ्रिट (Theodor Aufrecht) ने दी है और यह व्यकटभट्टकृत है।[3]

वेतालपचविंशतिका के प्रकाशित उल्लेखनीय सस्करण इस प्रकार हैं—

१. वेतालपचविंशतिका—जम्भलदत्त, सम्पा० एन० ए० गोरे।

---

१. सस्कृत साहित्य का इतिहास, पृ० ४३९।

२. सस्कृत साहित्य का इतिहास, हिन्दी अनुवाद, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, पृ० ३४१।

३ कैटलागस् कैटलोगोरम (Catalogus Catalogorum) भाग १, पृ० ६०४।

२. वेतालपंचविंशतिका—सोमदेव, सम्पा० सी० एच० टाने (C. H. Tawney)

३. वेतालपचविंशतिका—हिन्दी टीका-१. सूरतकविकृत, २. शम्भुनाथ त्रिपाठी कृत ।

४. वेतालपचविंशतिका—अग्रेजी, केप्टीन डवल्यू० होल्लीग्ज (Captain W. Hollings)[१]

५. वेतालपंचविंशतिका, शिवदास, (Heinrich Uhle)[२]

साथ ही निम्नलिखित सस्करण भी उल्लेखनीय हैं—

१. विक्रम एण्ड दी वेम्पीरे (Vikrama and the Vampire) अग्रेजी अनुवाद, के० सर० रिचार्ड, एफ० बुरटन, (Captain Sir Richard, F Burton), सम्पा० इसावेल वुरटन (Isabel Burton), १८९३ ।

वेतालपचविंशतिका के रूपान्तर :

सर्व श्री ए० बी० कीथ,[3] आफ्रेट,[४] वाचस्पति गैरोला[५] आदि के ग्रंथो से वेतालपचविंशतिका के अन्य किसी सस्करण अथवा रूपान्तर की जानकारी उपलब्ध नही होती । वास्तव मे देश-विदेश में इस रचना का व्यापक प्रचार रहा है और इसके अनेक रूपान्तर हुए हैं । राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान, जोधपुर के ग्रन्थ भण्डार मे उपलब्ध उल्लेखनीय रूपान्तर इस प्रकार हैं—

१. सस्कृत रूपान्तर, तपागच्छीय साधु-क्षेमकरकृत, ले० का० स० १६१९, ग्रन्थांक १६९८५ ।

२. व्रजभाषा रूपान्तर, ग्रन्थाङ्क ५,३६८, १०६४९ ।

३. गुजराती रूपान्तर, ग्र० ९३४ ।

---

1. Encyclopaedia of Indological Publications. Mehar Chand Lachhman Das, Delhi, p 155

२ वही, पृ० ३४४ ।

३ सस्कृत साहित्य का इतिहास, हिन्दी अनुवाद, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, १९६० ई० ।

४. Catalogus Catalogorum, Franz Steiner Verlag Gmbh. Wiesbaden, 1962

५. सस्कृत साहित्य का इतिहास, चौखम्वा विद्याभवन, वाराणसी, १९६० ।

४. उर्दू रूपान्तर, लिपि देवनागरी, जयपुर के सवाई जयसिंह की आज्ञा से सूरतकवीश्वरकृत ।

५. चौपाईबद्ध रूपान्तर, हरिवल्लभशिष्य हेमानन्द कृत, लि० का० १६००, वि० ग्रन्थाङ्क १६७०५।

६. कवित्तबद्ध रूपान्तर, ग्रन्थाङ्क ७७२२।

७. राजस्थानी रूपान्तर देईदान कृत, ले० का० स० १८५४, ग्रन्थाङ्क ३२४३।

इस रचना के कतिपय अन्य रूपान्तर इस प्रकार हैं—

१. राजस्थानी रूपान्तर, श्रीअचलसिंहकृत।

२. गुरु गोविन्दसिंह के दरबारी कवि प्रह्लाद का लाहोर मे किया पद्यानुवाद, रचनाकाल स० १७६१ वि०, पत्र स० १२७, लिपि गुरुमुखी।[1]

३. गद्यानुवाद, अज्ञात लेखक का, पत्र स० ८१, सेण्ट्रल पब्लिक लाइब्रेरी, पटियाला, ह० लि० ग्रन्थाङ्क १६१६।

४. पद्यानुवाद मण्डी-दरबार के किसी कवि का हिमाचल-पुरातत्व-मन्दिर, मण्डी।

उक्त २, ३, ४ सख्यक रूपान्तरो की सूचना श्री देवेन्द्रसिंह विद्यार्थी, २५१०, सेक्टर १६ सी० चण्डीगढ के सौजन्य से दिनाक १ मई, १६६६ ई० के पत्र द्वारा प्राप्त हुई है तदर्थ सम्पादक आभारी है।

राजस्थानी साहित्य मे रूपान्तर-परम्परा :

हमारे देश मे प्राचीन काल से ही साहित्यिक रचनाओ के भाष्य, सूत्र, टीका, टिप्पणी, सार, अवचूर्णिका, टब्बा, रूपान्तर, बालावबोध, वार्तिक आदि लेखन की परम्परा रही है। इस परम्परा के मूल मे हमारी जिज्ञासावृत्ति ही प्रधान है। मानव द्वारा अपनी ज्ञान-सीमा के विस्तार हेतु प्रकट की गई यह जिज्ञासा-वृत्ति वास्तव मे हमारी सस्कृति का एक प्रेरणा-स्रोत रही है और मानव इसी जिज्ञासा-वृत्ति के कारण चौपाये की पशु-कोटि से उठ कर मानव-कोटि को प्राप्त कर सका है। इस सुविस्तृत ससार मे विभिन्न मानव-समूहो द्वारा समय-समय पर अनेक सभ्यताए, सस्कृतियां, और भाषाए विकसित होती रही हैं। मानव-समूहो मे सामाजिकता के साथ ही परस्पर सम्पर्क-वृत्ति प्रवर्द्धित होती

---

१ सेण्ट्रल पब्लिक लायब्रेरी, पटियाला, ह० लि० ग्रन्थाङ्क २२१४।

गई और इसी सम्पर्क-वृत्ति ने मानव-समाज मे जिज्ञासा-वृत्ति को जन्म दिया। मानव अपने सीमित ज्ञान से कभी सन्तुष्ट नही हुआ और इसने पास-पडौस ही नही सुदूर द्वीप-द्वीपान्तरो मे अवस्थित मानव-समूहो के विषय मे भी अधिकाधिक ज्ञान उनके भाषा-साहित्य द्वारा प्राप्त करने का प्रयत्न किया। अनेक विद्वज्जनो ने देश-विदेश मे प्रचलित विभिन्न प्रकार की भाषाओ मे रचित साहित्य का अध्ययन किया और अपने समाज का ज्ञान-संवर्द्धन करने की दृष्टि से मातृभाषा मे अन्य भाषाओ का साहित्य अनूदित करने की परम्परा चलाई।

राजस्थानी भाषा मे रूपान्तर-परम्परा विक्रमीय १४वी शताब्दी मे प्रारम्भ हो जाती है। राजस्थानी मे निम्नलिखित प्राचीन अनुवाद विशेष उल्लेखनीय हैं :—

१. नवकार व्याख्यान, वि० स० १३५८।

२. सर्वतीर्थ-नमस्कार, सं० १३५९ और ३. अतिचार, स० १३६९।[1]

स० १४१३ मे लिखित टब्बा की प्रति अभय जैन ग्रन्थालय, बीकानेर मे है। बालावबोध की प्राचीनतम प्रति स० १४११ मे लिखित तरुणप्रभसूरि रचित 'षडावश्यक बालावबोध' है। इस बालावबोध मे प्रासगिक कथाए भी दी गई हैं। जैनागम भगवतीसूत्र बालावबोध एक लाख श्लोक परिमाण मे उपलब्ध होता है। १६वी श० से तो सैकडो रचनाए राजस्थानी मे अनूदित रूप मे उपलब्ध होने लगती हैं। राजस्थानी मे अनुवाद सस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, व्रज, बगला, गुजराती, फारसी, अरबी और अग्रेजी आदि कई भाषाओ सम्बन्धी रचनाओ के हुए हैं।

राजस्थानी अनुवाद-परम्परा के विकास मे अनेक विद्याप्रेमी वर्गो का विशेष योग रहा है। राजस्थान के अनेक भक्तो, सन्त-सम्प्रदायो और पण्डितो ने तो स्वान्त सुखाय अथवा सम्बन्धित रचनाओ को जनता मे प्रचारित करने की दृष्टि से राजस्थानी में रूपान्तर किये ही किन्तु शासक वर्ग ने भी अपने और जनता के मनोरजन एव ज्ञानवर्द्धन हेतु विभिन्न रचनाओ के राजस्थानी रूपान्तर करने-कराने मे सक्रिय भाग लिया है। यही कारण है कि राजस्थानी मे मौलिक साहित्य के साथ ही अनूदित साहित्य भी पर्याप्त परिमाण मे उपलब्ध होता है।[2]

---

१. (क) प्राचीन गुजराती गद्य सन्दर्भ, स० मुनि जिनविजयजी।
(ख) श्री अगरचन्द नाहटा का लेख, परम्परा, जोधपुर का अक, नीति प्रकाश।

२. विशेष परिचय हेतु द्रष्टव्य—राजस्थानी भाषा मे अनुवाद की परम्परा, श्री अगरचन्द नाहटा, परम्परा, भाग ९-१०, नीति प्रकाश।

इसी परम्परा मे वेतालपंचविंशतिका का प्रस्तुत रूपान्तर भी एक महत्वपूर्ण रचना है।

वेतालपञ्चविंशतिका का प्रस्तुत रूपान्तर :

वेतालपञ्चविंशतिका का प्रस्तुत रूपान्तर देईदानकृत और बीकानेर के महाराजकुमार अनूपसिंहकारित है। महाराजा अनूपसिंह बीकानेर के परम विद्यानुरागी शासक हो गये हैं। इनका जन्म चैत्र शुक्ला ६, वि० स० १६९५ (ता० ११ मार्च, १६३८), राज्याभिषेक वि० स० १७२६ (१६६९ ई०) और देहान्त चैत्र शुक्ला ७ वि० स० १७२८ (ता० ७ मार्च, १६७१ ई०) को हुआ था।[1] इनके विद्यानुरागी के विषय में स्व० डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा का मत इस प्रकार है—

'वह जैसा वीर था, वैसा ही सस्कृत भाषा का विद्वान्, विद्वानो का सम्मान-कर्त्ता एवं उनका आश्रयदाता था। उसने स्वय भिन्न-भिन्न विषयो पर सस्कृत मे कई ग्रथ निर्माण किए थे, जिनमें अनूपविवेक (तन्त्रशास्त्र), कामप्रबोध (कामशास्त्र), श्राद्धप्रयोग, चिन्तामणि और गीतगोविन्द की अनूपोदय नाम की टीका का निश्चय रूप से पता चलता है। उस अनूपसिंह को राजस्थानी भाषा से भी बडी प्रीति थी, जिससे उसने अपने पिता के राजत्वकाल मे ही शुकसारिका (सुआ बहोतरी) की बहत्तर कथाओ का भाषानुवाद किसी विद्वान् से कराया। खेद का विषय है कि उक्त विद्वान् ने उस पुस्तक मे कही अपना नाम नही दिया[2]। उसके कुवरपने में ही उसकी प्रशसा के कारण गाडण वीरभाण ठाकुरसीहोत ने 'वेलियो' गीतों में 'राजकुमार अनोपसिंहजी री वेल' की रचना की। फिर उसके राज्य-समय में वेतालपच्चीसी की कथाओ का कविता-मिश्रित मारवाडी गद्य मे अनुवाद हुआ तथा जोशीराम ने शुकसारिका की कथाओ का सस्कृत तथा मारवाडी कविता-मिश्रित मारवाडी गद्य मे दम्पति-विनोद नाम से अनुवाद किया।[3]

डॉ० ओझा ने अनूपसिंहकृत और कारित विभिन्न विषयो के ग्रन्थों की सूची दी है जिससे इनके विद्या-प्रेम का प्रमाण मिलता है।[4]

---

१ डॉ० गौरीशकर हीराचन्द ओझा, बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग १, पृष्ठ २५३-२८०।

२ शुकसारिका के अनुवादक देईदान हैं (अगरचन्द नाहटा, नीतिप्रकाश, राजस्थानी-शोध सस्थान, चौपासनी, पृष्ठ १७९)।

३. बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग १, पृष्ठ २८०-२८३।

४. वही।

वीकानेरस्थित हस्तलिखित ग्रंथो का प्रसिद्ध भण्डार 'अनूप सस्कृत पुस्तकालय अनूपसिह द्वारा ही स्थापित किया गया था। औरंगजेब के भय से हिन्दू अपने हस्तलिखित ग्रन्थ नदियो मे वहा देते थे। क्योकि मुसलमान सैनिक हिन्दू मन्दिरो को तोड़ते, उनकी मूर्तियो को नष्ट करते थे। साथ ही प्राचीन ग्रन्थो को भी नष्ट-भ्रष्ट करते और जला देते थे। ऐसी परिस्थिति मे महाराजा अनूपसिह औरगजेब की सैनिक चढ़ाईयो मे रहते हुए भी प्रचुर धन व्यय करते हुए प्राचीन ग्रन्थो को खरीद कर और मूर्तियों की रक्षा कर उन्हे वीकानेर के दुर्ग में पहुचाते थे। अनूप मस्कृत पुस्तकालय मे महाराजा ने सस्कृत के साथ ही सेकड़ो राजस्थानी ग्रन्थो को भी सुरक्षित करवाया।

डॉ० ओझा ने वेतालपचविंशतिका भाषा के विषय में लिखा है—"उसके राज्य समय में वेतालपच्चासी की कथाओ का कविता-मिश्रित मारवाडी गद्य मे अनुवाद हुआ।"[1] वास्तव मे वेताल पच्चीसी की भाषा टीका का कार्य अनूपसिह के पिता महाराजा कर्णसिह के राज्यकाल मे हुआ। अनूपसिहजी तब युवराज थे और उन्होने देईदान को सम्मुख वुलाकर इस कार्य के लिये आदेश दिया। जैसा कि भापा टीका के प्रारम्भ मे ही लिखा गया है:—

राज करइ राठोड़, करने सुरसुत करन सौं।
महि पत्रीया सिरमौड, पत्रवटि प्रमाणा परो ॥४॥
तस सुत कवर अनूपसिघ पराक्रम सिघ सौ।
भेदक भल गुण भूप, घागई तेडि आदेस दीयो ॥५॥
सस्कृत थो सदभाइ, कथा विक्रम वैताल री।
भाषा कहि सभलाइ, तू देईदान नाइता ॥६॥[2]

देईदान ने अनूपसिह की आज्ञा से सिहासन-द्वात्रिंशिका का अनुवाद भी किया था, जैसा कि इस पद्य से प्रतीत होता है।

वैताल री पचवीस, सभलाये सरसी कथा।
सिहासण वत्तीस, लगती लोभइ नाम रइ ॥७॥[3]

रूपान्तर मे शब्द-प्रयोग :

प्रस्तुत रूपान्तर की राजस्थानी भाषा मे सस्कृत तत्सम-तद्भव और देश्य शव्दो के साथ ही चालू अरवी-फारसी के शव्दो का सर्वथा स्वाभाविक प्रयोग

---

१. वीकानेर राज्य का इतिहास, भाग १
२. वेताल पचीसी पृ० १, प्रतिष्ठान की प्रति में 'नाइता के स्थान पर 'दाइता' पाठ हैं।
३ वेताल पचीसी, पृ० २

हुआ है। रूपान्तरकर्ता देईदान भाषा का कुशल अधिकारी लेखक तथा पारखी ज्ञात होता है। उसने शब्द-रूप, विभक्ति तथा क्रियादि मे भाषा के स्वरूप, की रक्षा करते हुए उसको सरल, सरस, आदर्श एव आकर्षक रूप देने का प्रयत्न किया है। इस विषय मे कतिपय उदाहरण इस प्रकार हैं—

क सस्कृत तत्सम शब्द—

प्रस्थानपुर (पृ. २), प्रतापमुकुट (पृ. ६), समस्या (पृ. ११), प्रीति (पृ. ११), सर्वमगला (पृ. ३१), आयुर्बल (पृ. ३२), सयोग (पृ. ४६), सिद्ध-गुटिका (पृ. ६५), और प्रभात (पृ. १०७) आदि।

ख. सस्कृत तद्भव शब्द—

जोगी (सं. योगी, पृ ३), पापणी (सं. पापिनी, पृ. ९), विक्रमादित (स. विक्रमादित्य, पृ. १५), तठै (स. तत्र, पृ २३), एता (स एतद्, पृ. २५), परधान (स. प्रधान, पृ. २९), उजेणी (स. उज्जयनी, पृ. ३५), मारग (स. मार्ग, पृ ३७), आदि।

ग. देश्य शब्द—

वले (पुनः, पृ. १), सभलाइ (सुनाओ, पृ. १), वासइ (पीछे से, पृ. ७), उभो (खड़ी, पृ. ९), तेडइ (बुलाते, पृ. १३), दीकरो (पुत्र, पृ. १७), हिवइ (अब, पृ. २०), वीदणी (दुल्हिन पृ. २०), दिहनगी (दानगी, दैनिक मजदूरी वेतन, पृ. ३१), छानोई ज (चुपचाप ही, पृ. ३३), मुकलावो (गौना, पृ. ३९), षडो (चलाओ, पृ' ४५), और षोसूं (छीनू, पृ. ४९), आदि।

घ. अरबी-फारसी आदि शब्द—

निजर (नजर, पृ. ६), षबर (खबर, पृ. ९), दिलगीर (पृ. १०), तकीये (पृ. १४), तसलीम (पृ. २४, २९), असबाब (पृ. २४), बकसीयो (बख्शीश किया, पृ. २७), तमासौ (तमाशा, पृ. २७), गुनह (पृ. २७), तोफांन (पृ. २८), मुजरो (पृ. २९), और षिजमत (खिदमत, पृ. २९), आदि। रूपान्तर में प्रयुक्त 'रहिसो' रहीस, आवसी' (पृ. ११), नीसरीस (पृ. १५), भोगवीसि (पृ. २६), जैसे क्रिया-रूपो से स्पष्ट होता है कि भाषा पर राजस्थानी की उत्तरी बोली का प्रभाव पड़ा है। रूपान्तरकर्ता बीकानेरवासी था अतएव यह स्वाभाविक ही है। दीठउ, दीयइ, थारइ, किसउ, छइ (पृ ३), और रइ, तीरइ, बइठो, पछइ (पृ. ४) में 'उ' और 'इ' के प्रयोग भाषा पर प्राचीन शैली का प्रभाव बताते है। 'छै' (पृ. ३०, ७३, ९९) प्रयोग भी 'छइ' के स्थान पर मिलते हैं।

कही-कही खड़ी बोलो हिन्दी का प्रभाव भी लक्षित होता है। यथा—"मेरा गुरु जाणे।" (पृ. १३)

प्रतिलिपिकार अपनी ओर से भी क्षेपक जोड़ते रहते हैं। उदाहरणस्वरूप ख. प्रति में प्रतिलिपिकर्ता ने "शाहजादा कुतुबदीन री कथा की ओर प्रसङ्गानुसार सङ्केत किया है—

"तिण दुष करि शाहजादा कुतुबदीन री अवस्था हुई। कुतुबदीन रे तौ ढाढीणी री साहस करि सावधान हुई। ईया रे इसौ कोई नही जिण करी बचाव होवै।" (कथा–२०वी, पृ. ६७)।

प्रस्तुत सम्पादन-प्रकाशन :

इस रचना की एक प्रति ग्यारह वर्ष पूर्व जयपुर मे मुझे थोड़े समय के लिये उपलब्ध हुई तो इसका महत्त्व और उपयोग समझते हुए इसकी प्रतिलिपि करवा ली (प्रति-ग.)। तदुपरान्त जोधपुर मे इस रचना की अन्य प्रति वि.सं. १८२२ ज्येष्ठ शुक्ला १० की अमरकोट मे लिखित प्रतिष्ठान के सग्रह मे प्राप्त की गई। प्रति (ख)। इसकी तीसरी प्रति वि.स. १७७३ में कार्तिक कृष्णा ९ शुक्रवार की लिखित मेरे सम्मान्य मित्र डॉ. नारायणसिंहजी भाटी, निदेशक, राजस्थानी शोध-सस्थान, चोपासनी, जोधपुर के सौजन्य से प्राप्त हुई (प्रति क.) तो इसका पाठ-सम्पादन-कार्य प्रारभ किया गया। यह कार्य पूरा होने पर प्रतिष्ठान के तत्कालीन स० सचालक श्रद्धेय मुनि जिनविजयजी और उपनिदेशक श्री गोपालनारायणजी बहुरा ने सहर्ष इसके प्रकाशन की स्वीकृति प्रदान की और राज्याज्ञा से इस विषय में मनोनीत विद्वत्समिति द्वारा भी सपुष्टि हो गई तो इसका मुद्रण-कार्य दस माह पूर्व प्रारभ हुआ। अब यह कार्य पूर्ण हो कर सुधी पाठको के हाथो मे पहुँच रहा है। जिन महानुभावो से इस महत्त्वपूर्ण कार्य में कृपापूर्ण प्रोत्साहन और सहयोग प्राप्त हुआ है तथा जिन का नामोल्लेख यथा प्रसङ्ग कर दिया गया है, उनके प्रति भी अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापन करता हूं। इति।

—पुरुषोत्तमलाल मेनारिया

राजस्थान प्राच्यविद्या प्रतिष्ठान,
जोधपुर,
पौष कृष्णा ११, स. २०२४ वि.

॥ श्री ॥

देईदान कृत

वैताल - पचीसी

[1]॥ ई० ॥ श्री गणेशाय नमः ॥[1]

[सोरठिया दूहा]

प्रणमुं सरसती[2] पाय, वले विनाइक वीनवुं ।
बुद्धि दे सिद्धि दिवाय[3], सनमुषि थाइ सरस्वती ॥१

[4]आरभी[भि]यो परमांण, चाढे चकि चामुंड रा ।
क्षेत्राधीस षलांण, भैरव भांजे विघन भय ॥२[4]

देश मरुस्थल देषि, नव कोटी मइ[5] कोट नव ।
(पिण) वीकानेर विशेष, मन निश्चय कर जांणी[णि]यइ[6] ॥३

(तहां) राज करइ राठोड, करन सुरसुत करन सौं[7] ।
महि षत्री[त्रि]यां सिरमौड, षत्रवटि षूमांणां षरो[8] ॥४

तस सुत कवर[9] अनूप[10], सिंघ पराक्रम सिंघ[11] सौ ।
भेदक भल गुण भूप, आगई[12] तेडि आदेस दीयौ[दिय] ॥५[13]

सस्कृत थी सदभाइ[14], कथा विक्रम[15] वैताल री ।
भाषा कहि सभलाइ, तू[16] देईदान[17] नाइता ॥६[18]

पाठान्तर—

१. ख ॥ अथ वैतालपचीसी लिष्यते ॥ दूहा ॥ सोरठा ॥ ग. श्री गणेशाय नम. ॥ ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ अथ वैतालपचीसी कथा लिख्यते ॥ दूहा ॥ सोरठा ॥ २. ख. सरस्वति । ३. ख. देवाइ, ग. दिवराय । ४. ग. मे अप्राप्त । ५. ख. में, ग. मे । ६. ख. जांणियो, ग जांणज्यो । ७. ग. रो । ८. ख. षरो, ग. खरो । ९. ख. कुवर, ग. कुअर । १०. ख. अनुप । ११. ग. सीह । १२. ख. आगे, ग. आगै । १३. ग. दीय । १४. ग. दरसाय । १५. ग. विक्रम कथा । १६. ग. तु । १७. ग. दान देइद्र । १८. ख. दाइता, ग. नायता ।

[1]वैताल री पचवीस[1], सभलाये[2] सरसी कथा।
सिंहासण[3] बत्तीस, [4]लगती लोभइ नांम[4] रइ[5] ॥७

[6]अथ कथा-प्रवन्ध[6] [वार्त्ता]

दक्षण देस रइ[7] विषइ प्रस्थानपुर नगर। तेथ[8] विक्रमादीत[9] उजेणी रो[10] राजा[11] मुष्य प्रधान मुहता[12] तीयां सहित सभा मांहि बइठउ[13]। तिको[14] राजा किसडो छइ।

दूहा

रूप सरस कदर्प्प सौं, उदधि जिसौ गंभीर।
जन नूं वल्लभ मेह सो, ससि[15] सौ अमल सरीर ॥१

विधि २ रो सूधो पहिर, रतनांभूषित देह।
सुंभर्टा सिर तप सूर सो, परजा [16]सिरि सुनेह ॥२[16]

वात[17]

तिण राजा नुं[18] सभा मांहि बइठां[19] एक जोगी [20]आंबा रो[20] फल[21] भेट दे मुजरो करि उभो रहीयो।[21] ईण भांति नित्य आंब फल देई। मुजरो करइ। [22]मुख सेती[22] किउं न कहइ। आंबा राजा रा हुकम बिना कोई छेड सकै नही। कोठारी नुं सुपीजै। कोठारी कोठारि धरइ।

पाठान्तर—

१. ख. वईताल पचीसी, ग. वैताल पचीस। २. ख. सभलाए, ग. साभलीयें। ३. ख सघासण, ग. सिघासण। ४. ग. वैताल पचीसी इम। ५. ख. रे, ग कहु। ६ ख. कथा-प्रवध प्रथम कथ्यते। ७ ख ग रै। ८ ख. तठें, ग. तठै। ९. ख ग विक्रमादित्य। १०. ख. नो। ११. ग. घणी राज्य करै छै। एक दिन। १२. ख सर्व प्रधान, ग. प्रधान मंत्री। १३ ख वेठा, ग. वैठो छै। १४. ख. सु, ग सो। १५. ग शशि। १६ ख सिर ससनेह, ग सु सनेह। १७ ख मे अप्राप्त, ग वार्ता। १८. ख. ना ग रै। १९. ख. वैठा, ग. वैठां आगे भी ऐसा ही पाठ है। २० ख. मावै रो, ग आवो। २१. लेइ नें राजा री भेट कीवी। २२. मुहडा सु।

एक दिन जोगी आइ भेट धरि उभौ[1] छइ[2] इतरइ वांनरो[3] आबा नू ले नइ षाण लागउ । तिण माहै एक रत्न नीसरीयो[4] । सो राजा दीठउ[5] । '[6]सिगले लोके दीठउ[6] । ति वारइ जोगी नू पूछीयो । अहो जोगी तू इसडो रत्न[7] फल मांहि घाति[8] [9]भेट दीयइ[9] सु थारइ[10] किसउ[11] कार्य छइ ।

तरइ जोगी[12] कह्यौ—

दूहो

रीतै[13] हाथै न भेटीयइ[14], गुरु देवता राजांन[15] ।
अर फुनि जासू[16] कांम ह्वै[17], शो विशेष वषांणि ॥

वार्त्ता

तरइ[18] जोगी कह्यौ । मइ महाराज नु इसा ही अंबा भेट दीया छै ।

तरै राजा कोठारी नू तेडि[19] कह्यौ । आंबा[20] सगला ही ले आव । तरै आंबा आण भांजीया । महा थी[21] रत्न[22] नीसरीया । तब राजा षुस्याल हुइ जोगी नुं आगै तेडि पूछीयो । थारै किसी चाहि छइ ।

तरै जोगी कहै ।

दूहा [दूहो]

सिद्ध मत्र उषध[23] धरम, गेह-छिद्र विभचार ।
कुआचार भोजन कुकृत, न कहै पडित सार ॥

पाठान्तर—

१. ख. उभौ, ग. ऊबो । २. ख. ग. छै, आगे भी ऐसा पाठ है । ३. ग. वानर । ४. ख नीसरयो, ग. नीकल्यो । ५. ख. दीठो, ग. दीठो, आगे भी ऐसा ही पाठ है । ६. ख. बीजाई सिगला दीठो, ग. अनै बीजा पिण समस्त सभा रै लोका दिठो । ७. ग. अमूलिक रतन । ८. ख. घाते, ग. घाल नै । ९. ख. भेट दीयो, ग भेटणो किनो । १०. ख. थांहरो, ग. थारै । ११. ख किसो, ग. कांई । १२. ग. जोगीशर । १३ ख. ठाले, ग रीते । १४. ख. भेटीयै, ग. भेटीये । १५. ग. राजांनै । १६. ख. जासो, ग. जासु । १७. ग. हूय । १८. ख. तिवरिक, ग. वले । १९. ख. तेडी, ग. तेड नै । २०. ख जोगी री भेट रा आंबा, ग. जोगी रा आंबा । २१. ख. माहि सु, ग. तिण माहि । २२. ख. ग. रतन । २३. ग. ओषद ।

वार्त्ता

[1]तरइ कहै । महाराज म्हारै एक कांम छै[1] । [2]सु एकांत कहिस्यु[2] ।

दूहा[3] [दूहो]

फुटइ[4] छह[5] कांनै[6] तुरत, चिहु कांनै स्थिर[7] होइ ।
तीयइ* कारण मंत्र महि, कीजइ कांनै दोय ॥१

वार्त्ता

एतो[8] सुणि राजा एकांत हुवौ । तरै जोगी कहइ छइ । महाराज गोदावरी नदी रै तीरै वडो स्मसांण[9] छै । तैथ काली १४ म्हारै[10] साधना[11] छै । [12]तीयइ म्हारइ अनै थाहरै[12] [13]अष्ट महासिद्ध[13] होसी । तीयइ कारण थे म्हारइ उत्तर साधक हुवौ । थै ३२ लष्यणा छउ । तिण वास्तइ कहु छुं ।

[14]तरइ राजा बोलीयो[14] । तू जा । बीजी सांमग्री तयार कर । हू आवू छुं । म्हारो बोल छै ।

इसडो राजा रो वचन सुणि[15] पूजारी सर्व सामग्री ले गयो । गोदावरी नदी रइ तीरइ महा स्मसान[16] मांहि जाइ बइठो । पछइ हाथ षड[ग][17] लेई एकलो राजा जाइ प्राप्ति हूवौ ।

पाठान्तर—

१. ख. तो पिण म्हाराज म्हारे कार्य्य छैं । ग. महाराज इतरी वात चौडे न कहणी । २. ख. एकात समय कहिस्यु इण कारणें । ग. तिणसु एकत बात कहिसू । ३. ख. दू०, ग. दोहा । ४. ख. फुटैं, ग. फूटै । ५ ग वहु । ६ ख. काना, ग. कानें । ७ ख. ग थिर । ८. ख. एतरो, ग. इतरी । ९. ख, ग मसाण । १०. ख ग. माहरै मंत्र । ११ ख. साधणो, ग. सोझणो । १२. ख. तिण मत्र करि म्हारें अरु थाहरै, ग तिण थी थाहर माहरै । १३. ख. अष्ट सिद्ध, ग. अष्ट सिद्ध नव निध । १४ ख तव राजा बोलीयौ, ग. इसो वचन सुण विक्रमादित्य बोलीयो । १५. ख. साभली, ग. साभल नै । १६. ख. समसान, ग. समसाण । १७. ख. पड्ग, ग. छुरी ।

---

* पत्र स० १ का ख. भाग पूर्ण, क. भाग रिक्त है ।

ताहरां[1] राजा नू[2] देषि जोगी षुष्याल[3] हुइ कह्यो। अहो[4] राजा अठा थी कोस दोइ वडो मसांण छइ। तठै सीसम वृक्ष उपरि एक मडो छै [5]सु अठै आणि दे[5]।

इसडा[6] वचन सुणि[7] राजा मसाण माहि जाइ सीसम रा वृक्ष तलै ऊभै रहि दीठौ। [8]भूत प्रेत यष्य राक्षस बोलिता पणि[8] निर्भय होई[9] छुरी हाथ ले ऊपरि चढीयो। तेथ[10] मृतक[11] रा बंधन काटि नीचउ नाषीयउ[12]। पछइ आप ऊतरीयो। [13]देषइ तो[13]।

दूहा[14]

मडो त कालो भूत सौ, नील वरण[15] विकराल।
[16]उर्द्ध केस[16] डरावणो, विलब्यो सीसम[17] डाल ॥[१]

वार्त्ता

तरइ राजा [18]अचरिज जाणि[18] वले[19] वृक्ष चढि मडो [20]कांधइ ले[20] ऊतरि नदी रो मारग लीयउ। [21]तठइ वइताल मड़ै मांहि प्रवेश करि बोलीयो[21]। सांभलि हो राजा।

दूहा[22]

पडित काव्य विनोद करि[23], काल गमावइ[24] जांण।
विसन नींद झगडा कलह, करि २ गमइ[25] अजांण ॥१

पाठान्तर—

१. ग. तरे, आगे भी ऐसा ही पाठ है। २ ग नै। ३. ग खुसी। ४. ख. अहो, ग. हे। ५. ख. तिको अठै आंण दे, ग. सो आणी आपो। ६ ख. इसो, ग. इसा। ७ ख. सूणी, ग. साभल। ८. ख यक्ष राषस भृत प्रेत बोलता पिण। ९. ख. थको। १०. ख. तठें, ग पछै। ११. ग. मडा। १२. ख. नांष्यो, ग नाखीयो, आगे भी ऐसा पाठ है। १३ ग. उतर नै देखै तो मडो पाछो शीशम रे डालै जा विलगो। १४ ख. दू०, ग राजा वाक्य। दूहा। १५. ख. चरण। १६ ग. उरघ मुखै। १७. ग. शीशम। १८. ख अचिरज सो जाण्यो, ग अचरिज पांमजो हूवो। १९ ख. वउड, ग पछै। २०. ख. कावे लै, ग कांधै कर। २१. ख तव मडो राजा सु वात करै, ग. तरै मारग मै आगीयो वेताल मडा मै परवेस कर नै वोल्यो। २२, ख. दू०। २३. ग कर। २४. ख गंमावै. ग. गुमावै। २५. ख. गमे, ग. गमै।

वार्त्ता

तिण कारण राजा तू सांभले । हू कथा कहु छुं । वणारसी[1] नाम नगर छइ । तठइ प्रतापमुकुट नाम राजा । तिणरइ मुकुटसेषर[2] नाम पुत्र । तिको प्रधान रा वेटा नू[3] साथ ले नें [4]महांवन रइ[4] विषइ आहेडइ गयो । तठइ त्रिवेणी-सगम तीर्थ छइ । तेथि महादेव श्रीविश्वनाथरी महिमा देषि [5]दर्शन री ताइ भाव हूवी[5] । तरै घोडां थी ऊतरि हाथ पग धोइ स्नांन करि देहरा माहि जाइ दरसण कीयउ । [6]पछइ आगइ बइस नइ[6] स्तुति करइ छै ।

दूहा

धवल छत्र घोड़ा सरस, हस्ती मयमत्त देहि ।
विभव रग रत्ती[7] त्रिया, सकर प्रसन्न थयेह ॥१
स्त्री - हत्या चोरी कनक, मित्र - द्रोह गो - मार ।
वालविनासी [8]अर चुगल[8], सुरापान परदार ॥२
एते पातक [9]होइ तो[9], कीया अरु करुणांह ।
प्रणव एक विश्वनाथ कइ, कीयै छुटै को नाह ॥३

वार्त्ता

तीयै विश्वनाथ रो दर्शन कर बेठो । इतरइ[10] एक नाइका[11] वहिल हू ऊतरि स्नांन करि पूजा करि वाली । [12]तितरइ एक वरे दीठी । कवर नुं कवरीयइ दीठो ।[12] मांहो माहि निजर मिली । कांम रा वाण लागा । उन्मादन, सोपण, सदीपन, [13]मोहन, तापन[13] ए पांच

पाठान्तर—

१. ख. वाणारसी, ग. वाराणसी । २. ख. मुकुटसिपर, ग. मुकटशेपर । ४. ख नु, ग. नें । ४. महा अटवी वन रै । ५. ख. दरसन री मनछा हुई, ग इणारी पिण दर्शण करवारी इछा हुई । ६. ख. अरु, ग. अनै ऊभा । ७. ख राती, ग रति । ८. ख. अरु चूगल, ग. चुगलता । ९. ख. होइ जो, ग. होयजो । १०. ख. तिण समै, ग. इतरै तो । ११. ख. नायिका, ग. नायका । १२. ख. मुगटसिपर नाइका दीठो । नाईका मुकटसिपर नु दीठो । ग. तेहे नें कुमरै दीठी अनै तिणे पिण कुमर नु दीठो । १३. ग. आकर्पण ४ वशीकरण ५ ।

बांण काम रा [१]नाइका रा हीया माहि चुभीया[१]। तरै कुल री मर्यादा छोडि लाज दूर करि शील कनारइ धरि समस्या करि सकेत*-स्थान कह्या।

एक कमल हाथ मांहे लीयो हतो [२]सो माथइ लगाइ[२] पछै कांने लगायो। कांनां थी दाते लगायो। दातां थी पगे लगायो। पगां थी [३]हीयइ धरि[३] चालती हुई।

वांसइ राजपुत्र विरह करि पीडित हुईउ। तरइ प्रधान[पुत्र] राजपुत्र नु कह्यो। [४]तै कुवरी दीठी[४]। कुवरै कह्यौ दीठी। [५]पिण थांसू[५] किसी समस्या कर गई। तरइ राज-पुत्र कहइ छइ। कमल १ हाथ माहे हुतौ सु माथइ लगायो। पछइ काने पछइ दांते पगे लगायो। तरइ प्रधानपुत्र कह्यो। [५]हु समधउ[५]।

दूहा

कहीयौ तौ पशु पिण लषइ[६], [७]हाथी घोड तथेव[७]।
अणकहीयै पडित घटइ[८] बुद्धि तणउ फल हेव ॥१
चेष्टा गति अकार[९] तै, बोलत होठ फुंकार।
भौंह नैन री सैन तइ, जांणइ चतुर विचार ॥२

वार्त्ता

इसो कहि नइ प्रधानपुत्र बोलीयो। पहिलो कमल माथै लगायो सु[१०] तोनु[११] प्रणाम कीयो[१२]। पछइ कांने लगायो सु कर्णकुंज नगर

पाठान्तर—

१. ख. नाईका रा रिदा कमल मांहि चूम्यां, ग. तै कुमर नै लागा। २. ख. माथै लगाइ, ग प्रथम माथे लगायी। ३. खं हाथै धरि, ग. पछै हीयै लगाय नै। ४. ख ते दीठी, ग. तै उण नै दीठी। ५ ख पणि थांना, ग उण थानु। ६. ख मे जाण्यो, ग. मं जाणी। ७ ख लषें, ग. लखै। ८. ख. हस्ती अस्व तथैव, ग घोडा तथैव पिण। ९. ख. कहै, ग. लखै। ९. ख ग आकार। १० ग. सौ। ११. ख. तोंनु, ग. तुम नै। १२. ख कीयो, ग. कर्यो।

---

* पत्र स० २ का क. भाग पूर्ण।

कहीयो। पछइ दांतै लगायो सु दंतसेन[1] राजा री कन्या छुं। पछइ पगे लगायो मु पद्मावती नाम छइ[2]। पछइ हीयइ मांहि थापीयो[3] सु तोनु वर गई छइ।

इतरी वात सुणी[4] ताहरा मुकटशेषर वोलीयो। मंत्रीपुत्र[5]। हुं परणीस नही तउ जीवू नही। इम कहि नइ तुरत[6] वेउ घोडे चढि[6] [7]वहिल रो वांसो कीयो[7]। तरइ वहिल नगर मइ आई। कुंमर मुहतउ एकइ मालणि रइ घरे ऊतरीया। मालण नु पूछीयो। अठइ पद्मावती नाम राजकन्या छै।

तरइ मालण कह्यौ। [8]हुं पद्मावती री मालण[8] छुं। फुलहार चंपो ले जाउ छुं। राते कन्हइ रहु छुं।

तरइ मुंहतइ विचारीयउ। इणइ काम लाइक आ छइ।

दूहा

मालणि विणजारी नटी, नाइण दासी धाइ।
धोवणि और पारोसनी, [9]सू जनि मोसी काइ[9] ॥१
ए दूती इहि कांम कुं, लाइक राजकुमार।
काज तुहारो सरहिगो, जो करि है करतार ॥२

प्रधानपुत्र कह्यो। हे मालणि आज तू पद्मावती पासि जाइ[10] तरइ मालूम करे। [11]राजि श्री महादेव विश्वनाथ रे देहरइ दीठ. हूंतो[11] कुमर[12] सो अठे आयो छै। इतरो कहि महुर १ मालणि नू दीनी।

पाठान्तर—

१ ख. ग. दतवक्र। २. ख. जाणिजै, ग. जाणीजै छै। ३. १०. ख. लगायो, ग. लागायो। ४. ख. सुणि, ग. साभल। ५ ग हो मित्र। ६. ख. दोनुं असवारि हुई, ग. दोनु ही असवार हुय नै। ७. ख. तठै गया, ग मारग मैं चल्या जा[य] छै कितरैक दिने उण नगर गया। ८. ख. हू पदमावती रे नित्य जाउ, ग तिण पासै हु जावु छुं। ९. ख. सू जन मासी काइ, ग. सुणज्यो इसी न काय। १०. ख. जाए, ग. जायै। ११. ख. जिठै श्री माहादेवजी विश्वनाथ रै देहरै दीठो हुतो, ग. श्री विश्वनाथ महादेव रे दीठो हतो। २. ख. कुवर मुकटसिपर, पुरुप।

[1]मालणि षुस्याल हुई[1]। पद्मावती पासि जाइ तरइ मालूम करे। राजि श्री महादेव विश्वनाथ रै देहरइ दीठौ हुंतो कुमर सो अठे आयो छै। पद्मावती पासि जाइ कहीयो।

ताहरां पद्मावती [2]चदनइ नू हाथें लगाइ[2] मालण रा गालां ऊपर चपेटा मारीया अर कहीयो रीसाइ गाली दै। पापणी[3] थारै घरि जा।

ताहरै वुरौ मुंहडौ करि मालण आई। राजपुत्र आगइ उभी रही कहीयो। थारै वासतै मोनु रीसांणी अर गालां ऊपरि चपेटा मारीया।

[4]मुकटशेषर देष दिलगीर हुवौ[4]। ताहरां[5] प्रधानपुत्र विचार कियो। महाराज कुवार चंदन हाथे लगाई चपेटा मारीया छै। तिणरो विचार* छै। [6]जनु दश दिन चांदणपष छै[6]। तितरइ कहीयो छै थै सुसता हुइज्यो।[7]

इतरो[8] सांभलि कुमर धीरज हूवौ। पछै जरै कृष्णपक्ष[9] आयइ महुर १ मालणि नू दे कह्यो। आज तूं पद्मावती नू माहरी वात कहि [10]षबर ले आव।[10]

तरै मालणि कुवरी आगै जाइ कहीयो। राजि हुं उवांनू किसु कहू। तरै पद्मावती रीस करनै हाथ अलतो लगाइ आंगुली करि पेट ऊपरि मारी। पछै[11] गालि दै कह्यौ। पापणी रांड घरि जाह[12]।

मालणि बिलषी होइ घर आइ। राजपुत्र आगइ उभी रही।

पाठान्तर—

१. ख. मालण षुसी राजी हुई, ग. इसो सुण मालण मोहर ले नै खुसी थकी। २. ख. ग. दोनु हाथे चदण लगाय। ३ पापण रांड। ४. ख. मुकटसिषर दिलगीर हूवो, ग. माळण री वात सांभळ नै मुकटशेखर कुमर दलगीर हूओ। ५. ख. तव, ग. तो। ६. ख. जो दश दिन चांदणे पक्ष रा छै, ग. जे दस दिन चांदणे पख रा रह्या छै। ७. ख. हुवौ, ग. रहो। ८. ख इतरी, ग. इसडो। ९. ग. अंधारो पख। १०. ख. षबर दे बात कहि, ग. माहरी खबर दीज्यै। ११. ग. वले। १२ ख. जाहि, ग. जा।

* पत्र स० २ का ख. भाग पूर्ण।

तरइ कुमर पूछीयो। तरइ मालण कह्यो थाहरइ वासतइ दुइ वार मार पाधू। अरु धणियांणी[1] रो बुरो[2] मनायो। [3]पिण थानूं तो क्युही कह्यो नही[3]।

इम सुणि राजपुत्र[4] दिलगीर हुवो। तरइ [5]मुहतइ रो बेटो[5] बोलियो[6]। महाराज अठै कोहेक[7] कारण छै। लाष[8] रै रंग सु हाथ रंग तीन आंगुलीयां सुं मारी छै। सु जांणीजे छइ रितुवंती हुइ छइ। तीयै कारण कह्यो छै दिन ३ सुसता हुवो।

दूहा

प्रथम दिवस चडालिनी, [9]दूजइ ब्रह्मघ्नोह[9]।
तीजइ दिन रजकी गिणइ, सुध्यति चउथै दीह ॥१

वार्त्ता

दिन ४ देषउ। दिन ४ पछइ[10] महुर १ मालणि नूं दै कह्यो। आज पद्मावती आगै[11] म्हारी वात कहि मोनुं पाछो जबाब दै।

तरइ [12]महुर रा[12] लोभ सेती मालणि पद्मावती [13]आगइ जाइ उभी रही।[13] तिवारइ मालणि नू आदर सहित जीमाडि तंबोल दे घड़ी ४ रात्रि गयां जेवड़ी बांधि [14]पछिम द्वारि[14] निकालि दीनी।

तरइ मालणि राजकुमार पासइ आइ सर्व वृतांत कह्यो। अरु थांनु क्यु ही न कह्यो।

प्रधान रै बेटइ विचारीयो। कुमर दिलगीर हूवो। तरइ प्रधान रइ बेटइ कह्यौ। आजि राति थानुं तेडोया[15] छै। घड़ी ४ रात्रि[16] गयां

पाठान्तर—

१ ख. धणीया रो, ग. धणीयांणी नै। २. ग. भुरो। ३. ख. पण थानु तो क्यो ही न कह्यो, ग. नै थानु पिण कइ कह्यो नहीं। ४. ग. कुमर। ५. ख. मंत्री रो बेटो, ग. मंत्रीपुत्र। ६. ख. वोलीयो। ७. ख. क्योहीक, ग. कोईक। ८. ग. अलता। ९. ग. दूजै दीवस वेकार। १०. ख. पछै, आगे भी ऐसा पाठ है। ११. ख. आगे, ग. पाछै। १२. ग. मोहर रै। १३. ख. पासि जाइ ऊभी, ग. नै समाचार कह्यो। १४. ग. पछोकडा कानी। १५. ग. बुलाया। १६. ख. राति, ग. रात।

पाछली कांनी द्वार सेती जेवडी बांधि राषी छै। तेथि हू थांनुं ले जाइसि ।

पछइ घडी ४ राति गई तरइ कुवर मुहतइ जाइ नइ जेवडी[1] हलाई[2]। [3]तठइ पद्मावती अरु सषी[3] षांच नइ मुकटशेषर नू उचउ[4] लीयउ । तरइ मुहतइ रइ वेटइ कह्यो। हु घडो ४ रात्रि पाछली रहिसी तरइ हु अठइ आइ उभउ रहीस । इतरउ कहि डेरइ[5] आयो ।

पछइ मुकटशेषर महल माहि जाइ विनय करि भला भोजन कपूर कसतूरी लवग वोडा षाया । सूधा चोवा चवेल लगाया। संभोग करि मनोरथ पूर्ण कीया। [6]माहोमाहि प्रीति अधिक थई[6] ।

पद्मावती पूछीयो। थे वडा चतुर छउ[7] [8]जउ इसडा भाव समझीया[8]। तरइ राजकुमर कह्यो। म्हारइ मुंहतौ छे सु सही मित्र छे। महाचतुर[9] छइ। तीयइ थांहरी समस्या रो अरथ सर्व मोनु कह्यो[10]।

तरइ कुवरी कह्यौ। हुं उणरी भगति आज महिमांनी[11] करीसि। इसै प्रात हुवण लागो। तरइ मुहतो आयो। नीचो उतारीयो। [12]वेउ डेरइ[12] आया।

मुंहतौ पूछै लागो। थांसु किसी हकीकित कही। तरै कुंमर* कह्यो। आज थांनुं महिमांनी[13] आवसी। तरै मुहतै विचारी कह्यो। विस भरीयो भोजन आवसी।

पाठान्तर—

१. ख. जेंवडी, ग. छीको। २. ग. हलायो। ३. ख. तव पदमावती अरु पदमावती री सषीयां, ग. तरै सहेल्या। ४. ख. ऊपरि, ग. ऊचो। ५. ख. ग. डेरै। ६. ख. माहोमहि प्रीति अधिक हुई, ग. माहोमाहे अधकी प्रीत वधी। ७. ख. छौ, ग. मनुष्य छो। ८. ख. इसा भाव समझ्या, ग बुधवत बिना इसडी समस्या कुण समझै। ९. ग. महाबुधीवत। १०. ग. समझायो। ११. ग. मझवांनी। १२. ख मिल दोनु डेरै, ग. दोनु साथे मिल नै डेरे। १३. ख. महिमानी, ग. मिजमानी।

---

* पत्र सं० ३ का क. भाग पूर्ण।

इतरइ[1] [2]मालणि लाडू भांत-भांत रा ले आवी[2]। केसरीया लाडू कुमरजी नु छइ। गुलालीया मुंहताजी[3] नु छइ। अनै कहीयौ छै आप आपणा आरोगज्यो।

तरइ मुहतइ कह्यो। गुलालीयां माहे विस[4] छइ। तरै लाडू १ [5]कुतरा नुं षवाडीयौ[5]। कुतरो तुरत मूवो। पछै केसरीयो लाडू १ मालण नु षवाडीयो। पछे आप षाया। गुलालीया नांष दीया।

पछै कुमर[6] कह्यो- म्हारइ मुहतइ नुं बुरो चीतवइ तिणसु म्हारै काम नहीं। तरै[7] मुहतइ[8] कह्यो स्नेह रो कारण छइ[9]। स्नेह एके ही सु होइ। अरु ईयरो अभिप्राय नै जो गुणाधिक पणा थी जांणइ छे। मन मन चलतो होइ तीयइ[10] कारण बीजी वात नही। हिवइ हू कहूं छुं त्यु करो ज्युं इयै नुं ले जावा। घणा दिन रहीयां वात [11]प्रगट हुसी[11]।

तउ थे आज राति दारू री [12]बतक दोइ[12] ले जावौ। एकै मइ दारू बीजी मइ पाणी। कुंवरी नु दारू पाइज्यो। थे पांणी रा प्याला पीज्यो। जरइ पद्मावती छाको[13] होइ तरै डावी जांघ पाछणा[14] रा तीन प्रहार कर अनै सोना री जेहड काढनै पग हूंती ले आए।

मुंहतै कह्यौ त्युं हीज[15] करि आयौ[16]। तरइ मुंहतै जोगी रो वेस करि[17] मुद्रा पहिर[18] घणी [19]राष लगाइ मरहठी चाबि तीयै ही रो अंजन करि राती आंष करि मुहडइ अग्न री झाल काढतो

पाठान्तर—

१. ख. इतरै, आगे भी ऐसा पाठ है, ग. इतरी वात करता। २. ख. मालण लाडू भाति-भाति रा ले आवी, ग. लाडू दासी साथ मेलीया। ३. ख. मुहतेजी, ग. मुंहता। ४ ख. ग. विष। ५. ख. कुतरे पाघो, ग. कुत्ता ने घाल्यौ। ६. ख. कुवर, ग राजपुत्र। ७. ख. तव, ग. तद। ८. ख. मत्रीपुत्र, ग मुहतो। ९. ख. छँ, ग ओईज छै। १०. ख. ग. तिण, आगे भी ऐसा पाठ है। ११. ख छानी रहसी नहीं, ग छानी रहै नही। १२ ग. दुपडी वतक। १३. ख. छक छकै, ग. अचेत। १४. कटारी। १५. ख. त्यु, ग. विम। १६. ग. सर्व कीयो। १७. ग. कर नै। १८ ख. घाल। १९. ग. आंख्या लाल कर नै वाघवर बिछाय मसाण मै बैठो छै।

मसांणां माहि षालडी विछाइ मसांण री राष भेली करि घूई वणाई। ऊपर डीबी मेल्हि महांत हुइ बैठो[१६]। [१]अनइ कुमर नू कह्यो[१]। तूही जोगी वेस कर राष लगाइ चोहटइ जाइ जेहड वैंच नै रूपईया ले आव। ठगावै मती। [२]अरु तोनुं[२] पूछै। [३]जैहडि थारइ कठा तउ तू कहे म्हारै गुरु वेचणी दीनी छइ। बीजो हु क्युंही न जांणू[३]।

इतरौं सुणि मुकटशेषर ज्युं मुहतै कह्यो त्युं करि चोहटइ ले गयो। तेथि[४] सुनार सराप नु दिषाली तरइ उलषी[५]। आ राजा रे घर री जेहड छै। तरइ जाइ [६]राजा नु कह्यौ[६]।

तरइ राजा जोगी नु तेडि पूछीयौ। [७]तै जेहड कठै लाधी[७]। तरै जोगी बोलीयो। मोनुं[८] तौ म्हारै [९]गुरु वेचणी दीन्ही छइ[९]। तरइ राजा कह्यौ ईयइनुं तो काठो करो अनै इणरै गुरु नु तेडो। [१०]पकड मंगावौ[१०]।

तरइ राजा रा आदमी गया। आगे मसांण माहे बैठो दीठौं। जोगी री क्रांत[११] दीठी। त्युं पगे लागि हाथ जोडि नै कह्यौ। सांमीजी[१२] थांनू राजा तेडइ छइ।

तरै जोगी ऊठ नै विकराल रूप मुख माहे अग्निज्वाला काढतो थको राती आंष करनै आयो। राजा देष नै [१३]भयभ्रांत हूवौ[१३]। पिण राजा पूछीयौ। थारै जैहड कठा आई।

तरइ जोगी कह्यो। अधारी चवदिस री राति हूती। हुं म्हारै

पाठान्तर—

१. ख. राजकुमार नां कह्यो, ग. कुवर नैं चेलो कीयो नै कह्यो। २ ख अरु तोनु, ग. कोई। ३. ग. मेरा ताइ खबर वाहि। मेरा गुरु जाणै। ४. ख. तठे, ग. तठै, आगे भी ऐसा पाठ है। ५. ख ओलषी। ७. ख राजा ना कह्यो, ग. राजा जी सु मालम कीवी। ७. ख. थै घड कठा हुती पाई। तिवारे कहे म्हारे घर री छै। तो बीजी केथ। ग. थारै कठा सु आई। कना थारा घर री छै। तो वले बीजी जेहड कठै। ८. ख. मुना, ग. मोनैं। ९ ख. गुरु वेचवा दीधी छें, ग. मेरा गुरु जाणे। १०. ख. ले आवो, ग. बुलाय ल्यावो। ११. ख. तेज काति। १२. ख. स्वामी। १३. ख. भयभ्रंत हूयो, ग. चमक्यो।

तकीयै बैठो हूंतो। अनै एक साकरणी मसांण माहि* मडा षांण नुं आइ हूंती[1]। तिणनु देषि नइ मइ त्रिसूल हाथ माहे ले गयो। तरइ मोनुं अनइ म्हारै चेलै नु षावण नु दोडी। चेलो नासि गयो। अनै मै त्रिशूल वाह्यौ[2]। डावी जांघ माहि प्रहार दीयो। तरै शाकनी भागी। तरइ मे [3]बेउ हाथ घालीया[3] हूता पिण माई मुंडी नीकलि गई। उवै री [4]जैहड १ हाथ मांहि रही[4]।

तरइ राजा मन मै विचारीयो। जेहडि तउ पद्मावती री अनै अउ कहइ छइ डावी जाघ माहे [5]त्रिशूल रो घाव कीयो छइ[5]। तो जो त्रिशूल रो घाव डावी जांघ माहि होइ तउ पद्मावती भली नही।

राजा भीतरि[6] गयो। देषइ तौ पद्मावती जांघ रै पाटो [7]बंधावइ छइ[7]। राजा पूछीयो कासू हुवउ जोवां। राजा जोवइ तउ त्रिशूल रो घाव छै।

राजा विलषो होइ बाहिर आइ[8] जोगी नुं कह्यौ[9]। इसडी हूवै तउ तीयै नु कासू[10] कीजइ। जोगी कहइ छइ।

दूहा [दूहो]

ब्राह्मण[11] गाइ[12] स्वगोत्रीयो[13], कामिण[14] बाल अवध्य।
होइ अधिक अपराध तो, घरा निकालण मध्य ॥१

वार्त्ता

राजा प्रछन्न[15] कह्यौ। म्हारी दीकरी[16] छै। किसू कीजइ। तरै

पाठान्तर—

१. आगे ग. प्रति मे यह पाठ है—तब हमारै चैले उवांकु देष हाक कवी। तद षाकनी चैळे कु मारण दोडी। २. ग. चलायो। ३. ख. दोनु हाथ घाल्या, ग पग पकडे। ४ ख. एक षड हस्त मध्ये रही, ग मेरे हाथ जेहड आई। ५. ख. घाव त्रिशूल रो छै, ग. त्रिशूल रो घाव छै। ६. ख. भीतर, ग राजलोक मे। ७. ख. बांध्यो छैं, ग. पाटो खुलाय नै देख्यो। ८. ख. आवे, ग. आय नै। ९. ख. कहो, ग. पूछ्यो। १०. ख. क.सू, ग काइ। ११. ख. ब्राह्मण, ग. बाभण। १२. ख. ग. गाय। १३, ग. सगोत्रीयो। १४. ख. कामणि, ग काम। १५. ख. गुप्ते, ग. छानो। १६. ख. ग. बेटो।

* पत्र स० ३ का ख. भाग पूर्ण।

जोगी कहीयौ । बीजो किही नु सुणावी मतो । म्हारो चेलो डरे पिण हुं [1]पाछली कांनी ले नीसरीस[1] ।

तरै रात्रि समय पद्मावती काढि जोगी नुं दीनी । तरै बेउ[2] जणा घोडइ चाढि ले आया । वांसै राजा रांणी नू कहीयउ ।

राणी राजा नू रीसांणी । तइ[3] मोनू[4] विगर पूछीयां कुंवरी घर माहि थी [5]काढि दीनी[5] । हुं अन्न[6] नवे दांते षाईस[7] । रांणी [8]कुवरी रउ दुष करि[8] मुई[9] ।

तरइ वइताल कहीयो[10] । अउ पाप कुणइनु लागसी । जउ तूं जांणतो न कहिसि तउ हीयो फूट मरीस[11] ।

तरइ राजा विक्रमादित बोलीयो[12] । अउ पाप राजा दंतवक्र नू जिण अविचार[13] कर्म कीयओ ।

गाहा

[14]अविचारित न कुणये पछ्छितावो होइ बहुतर ।
हियए विचारितं कुणिजइ निईसण पामीये तछ्छ[14] ॥१

राजा बोलीयउ सु सांभलि मडो ऊठि[15] सीसम री डाल जाइ लागो । तरै राजा फिरि जाइ सीस्यो री डाल सेती मडै नु ऊतारि [16]कांधइ कर ले हालीयो ।[16]

॥ इति श्री वइताल पचीसी री पहिली कथा संपूर्ण[17] ॥

पाठान्तर—

१. ग. घोडा जोड नै बैसाण नै माहरै तकीयें पुहचायजो । पीछै मे इणने ले जाउगो । २. ख. दोनु, ग. दो । ३. ख. आप, ग. थे । ४. ख. मोना, ग. माहरै । ५ ख. ग. कीम काढी । ६. ख. अन, ग. धान । ७. ख. षावा, ग खासु । ८. ख. कष्ट करती, ग. पुत्री रो दुख कर । ९. ख. काल प्राप्त हुई, ग. मूई । १०. ख. कह्यो, ग बोलीयो । ११. ग. मरसी । १२. ख. ग. बोल्यो । १३. ख. असोच्यो, ग. अण विमास्यो । १४. ग प्रति मे अप्राप्त । १५. ख. उडी, ग. वंध माहि थी नीशर । १६. ख. कांधै करि ले हालीयो, ग. कांधे कर नै चालियो । १७. ख. समाप्तं, ग. सपूर्णम् ।

वैताल-पचीसी री दूजी कथा

[1]ताहरां वैताल बोलीयो[1] । राजा संभलि । धर्मस्थल नांम नगर । तेथ[2] गुणाधिप[3] नांम राजा । तिणरइ [के]सव नामा ब्राह्मण । तीयइरी[4] बेटी मंदारवती[5] नांम । अति रूपपात्र । सर्व लोक जांणइ[6] । तिका वर प्राप्त हूई । ताहरां माता पिता अरु वडो भाई तीनै[7] बेसि विचार कीयो । जउ ईयइ महीनै मइ व्याह करणो । नही तउ वरस ४ सूझइ नही ।

तरै आतुर होइ एक वर बाप बुलायौ । एक वर माता, एक वर भाई, [8]तीन वीद बुलाया[8] । तरै कलेश हूवउ । एक कहै हूं परणीजिसि । बीजो कहै हू परणूं । तीजो कहइ मारूं मरू पिण हुं परणू । अनइ[9] माता, पिता, भाइ आप-आपणो[10] बोल* राष्यौ चाहे । घणो कलेश हुइवा लागो ।

[11]इसइ माहि[11] कालइ सर्प आइ वीदणी नुं षाधी । तरइ मंत्रवादी बुलाया । तीयां[12] झाडो दे कह्यौ । ए असाध्य छइ । कह्यौ छै—

दूहा

[13]छठि नवमि पंचमि[13] तथा, [14]आठमि चवदिस[14] आम ।
वार शनीसर भोम हुवइ[15], तौ मरइ काल डसि जांम ।।१

पाठान्तर—

१. ख वेईताल बोलीयो, ग. तद मडो बोल्यो । २. ख. तठे, ग. तठै । ३. ख. गुणाधिपति । ४. ख. तिणरे, ग. तिणरी । ५. ख. मदनारवती, ग. मदिनावती । ६. ग. प्रति मे आगे यह पाठ है—इसडो रूप कठे ही नही जाण्यो छे । ७. ग. मोमो इण च्यारू जणां । ८. ग च्यारे वीद परणीज[ण] नै पीण एकण साथे आया । ९. ख. तिवारे, ग. ओर । १०. ख. आप-आपणी, ग. आप-आपणो । ११. ख. एतलै, ग. इतरै सामाजोग माहे इसो वृत्त हुवो । १२. ख. तिको, ग. तिणां । १३. ग. पांचम छठ ज आठ में । १४. ग. नवमी चवदस । १५. ख. हुवै, ग. हूवै ।

---

* पत्र सं० ४ का क. भाग पूर्ण ।

मृगसिर आद्रा रोहिण, असलेसा[1] रु विसाष।
कृतका मूल नक्षत्र मइ, डस्यो न [2]जीवइ भाष[2] ॥२

वार्त्ता

सा मंदारवती वात करतां गारडू बइठां मर गई। तरइ केशव नदी तीरइ ले जाइ दाग दीयो। [3]तरइ तीनेई वीद आया[3]। एकै तौ उवइरी राष लगाइ नीकल गयो। बीजो मसाण उपरि मढी कर बइठौ। तीजइ दिन तीजो आइ हाड लै नै गगा माहे घालण गयउ[4]।

पछइ जिको राष लगाइ नइ जोगी हुंवो हुतो सो भमतो-भमतो विद्यावंत ब्राह्मण (ब्राह्मण) रइ घरे गयो। तठइ ब्राह्मण [5]वैसदेवी करि[5] बैठो हुंतो। इतरै जोगी जाइ देवदत्त रो नाम लीयो। तरै जोगी नुं बैसांणि भोजन दीयो।

[6]तिसडै ब्राह्मणी सासू सेती लडाई करी रीसाइ बेठी। दीकरो रोइवा लागो। तरै दीकरै उपरा रीस करि दीकरै नुं मारीयो।[6]

तरै जोगी देष हत्यारा जाणि विण जीमीयइ ऊठीयो। तरइ विद्यावंत[7] बोलीयो। क्युं न जीमै। [8]थारै घरै बालहत्या हुई तिण पांणी न पीवूं।[8]

दूहा[9]

बालक गाइ त्रिया तणी, हत्या सब तइ[10] जोर।
आपघात[10] वेसास घन[11], पाप न इसडौ ओर ॥१

पाठान्तर—

१. ख. ग. अश्लेषा। २. ग. मरद्यो। ३ आगे ख.ग. मे यह पाठ है—इद्री होठ संघाणीया, मस्तक साथल वाहु। नाभ मरम की ठोड मै, मरद्यो (इसीयो ख.) न जीवै काहु ॥३ दाह स्वेद हिडकी वमन, स्वास नाष नै (दे ख.) नाड (नाडि ख)। बकै पुकारै पीड सं, सो असाध्य दे राड (राडि ख.) ॥४। ४. ग. प्रति मै आगे यह पाठ है—चौथो जीमै तरै उण नै कवो मेल नै जीमै। ५. ख. अग्निहोत्र रो मन्त्र साध। ६. ग. इतरै बालक रोयो। तरै बालक नै मरोड नै चुलै मे घाल्यों। ७. ग. ब्राह्मण। ८. ख. हत्यारा रे घरि अतीत अन षाइ तो दोष रो विभागी होय, ग. तै बालक नै चुलै मे बाल्यो सो न जीमू। थे तो हित्यारा छो। थारा घर रो जीमता दोसण लागै। ९. ख. ग. दूहो। १०. ख. ग. ते। ११. ग. वैशाष मत।

वार्त्ता

तरइ[१] [२]ब्राह्मण बोलीयो।[२] ईयइ बालक नूं जीवाडां तौ हत्या मिटइ अनै तू जीमै। तरइ सन्यासी कह्यो। तो हूं जीमूं।

तरै ब्राह्मण मन मैं जांणीयो। [३]जोगी विण जीमियो जाइ।[३] मोटो प्रायछित्त[४] लागै। तोयइ[५] कारण बालक जीवाडि जोगी नूं जीमाडणो। इसो विचार संजीवनी विद्या करि उषध-मंत्र करि बालक जीवाडीयो अर सन्यासी नूं कह्यौ तूं जीम।

ताहरां[६] संन्यासी[७] कह्यौ। हूं [८]जीयै रइ दुष[८] जोगी हूवौ [९]तीये नू[९] जीवाडण री तांई [१०]आ विद्या सीषूं[१०] तौ जीमूं। नही तो [११]एथि हु मरीस। तोनु हत्या देईस। जीमूं नही।[११]

तरै [१२]कह्यो। तू जीमि। तोनूं विद्या सीषाडिसि।[१२] पिण आ विद्या एक वेला फुरै छै।

जोगी कहीयो—म्हारै एक वेला कांम छै। [१३]तरै विद्यावंत जोगी नु जीमाडि विद्या सीषावि सीष दीधी।[१३]

तरै जोगी विद्या सीष [१४]मंदारवती रै मसांण[१४] आयो। उठै[१५] बीजो मढी[१६] माड बैठो छै। मसांण उपरि ईयइ [१७]विद्या करि[१७] मंदारवती जीवाडी।

ताहरां बिन्है लडे लागा। इतरै तीजौ[१८] ही गंगा हूंती आयौ तिको ही लडिवा[१९] लागो।

पाठान्तर—

१. ख. तिवारैं, ग तद। २. ग. भांमणी बोली। ३. ख. सन्यासी न जीमे। ४ ख. प्रायिश्चित। ५. ख तिण। ६. ख. तिवारे, ग. तरै। ७. ग. सन्यासी। ८ जिण रे दूख, ग. जीण कारण। ९. ख. तिण नु। १०. ग आ रसकुपी दे। ११. ख. एथ हीज उपवास करि मरू। १२. ख. विद्यावंत कह्यो। उठि जीम। तोनु सीपाडीस। ग. बांभणी बोली सु उठ जीम। तनै देईस। १३. ग. तद बाभणी रसकुपी दीवी। १४. ग उण नगर मे आप री स्त्री मुइ थी तठै। १५. ख. तठे, ग. तठै। १६. ख. कुटी। १७. ग. छाटो नाख्यो। १८. ख. त्रीजो। १९. ख. लडण, ग. लडन।

तरइ मडो[1] बोलीयो। राजा तू वीर विक्रमादीत[2] वडो राजा। तै घणा न्याव कीया छे। इयांरो न्याव करो। [3]कुणै नू आवइ।[3]

तरै राजा बो*लीयो।[4] [5]रे मृतक तू न जांणइ तउ[5] सांभलि। [6]जिणै जोवाडी सु ती उवै रो[6] पिता हुवै। अनइ हाड[7] ले गयो सु बेटो[8] हुवौ। [9]जिणै स्मसांण री सेवा कीधी[9] सु भर्त्तार। सेवै सु पावइ।[10]

[11]इसडो वचन सांभलि[11] मडौ [12]सीसम री डाल[12] जाइ विलगो। तरइ राजा फिर पाछौ जाइ मडै नू उतारि ले आवतो हुवौ।

॥ इति श्री वइताल पचीसो री बीजो[13] कथा कही[14] ॥

पाठान्तर—

१. ख. वेताल नामें मडो, ग. मडो। २. ख. विक्रमादित्य, ग. राजा। ३. ग्रो ऽस्त्री कुणै री हूसी, ग. उवा स्त्री किण नै आवै। ४. ख. बोलीयो, ग. कह्यो। ५. ख. वेताल, ग. तु जाणै नहीं। ६. ख. जिण जीवाडीयो उण रो, ग. जे जीवती कीवी सो तो। ७. ख अस्त, ग. फूल। ८. ख बेटो, ग. पुत्र। ९. ख. जिण मसाण सेव्यो, ग. कवो दियो। १०. ख पावै। ११. ख. इतरो सुण, ग. इतरो सुणत समांन : १२. ग. शीशम रै। १३ ग. दुजो। १४. ग. सम्पूर्ण।

---

* पत्र सं० ४ का ख. भाग पूर्ण।

वैताल-पचीसी री तीजी कथा

हिवइ तीजी वार मडो ले आवतां बोलीयउ। वात[1] विना पंथ किउं[2] कटै अनै[3] तू म्हारो वाहण छै। तीयइ[4] कारण हूं कहूं छुं। सांभलि[5]। भोगावती[6] नांम नगरी। तठइ रूपसेन राजा। तीयइ रै वि[द]ग्धचूडामणि नांम सूवो। पजरा[7] मांहि रहै छइ। महापंडित छइ। उवइ[8] नू[9] राजा पूछीयो। मो लायक[10] वीदणी[11] तू कठइ जांणइ छइ।

सूवइ[12] कह्यौ। हूं जांणू छुं। मगध देस रइ[13] राजा रइ बेटी सुरसुंदरी[14] नांम[15] सु थारै स्त्री[16] हूसी। अनइ[17] सुरसुंदरी आपणै आवास थकी[18] मदनमंजरी नांम सारिका [19]तीयै नू[19] पूछीयौ। तू जांणइ मो लाइक [20]वीद कुण हुसी[20]।

सारिका बोली। भोगावती नगरी रौ राजा रूपसेन नाम [21]अति सरूप कांमावतार[21] थारो भर्त्तार हूसी।

[22]तिका सांभल नै मदनातुर[22] हूई। [23]सषी कन्हा मा नू कहायो[23]। इतरइ राजा रूपसेन परधांन सगाई करण नू राजा पासि आया। रांणी सांभलि राजा नू कह्यौ।

तरै राजा परधांन तेडाइ [24]सलगनी बेटी दीनो[24]। राजा रूपसेन

पाठान्तर—

१ ख वार्त्ता। २. ख. क्यो। ३. ख अरु। ४. ख. तिण। ५. ख. ग. सांभल, ६ ख. भोगवती। ७. ख. पंजर, ग. पिंजरा। ८. ख. ग. उण। ९. ख. नू, ग. नु। १०. ख. लायिक। ११. ख. ग. वीदणी। १२ ख. श्रुवै, ग. सुवो। १३. ख. ग. रो। १४. ख. सुरसूदरी, ग. सुदरी। १५ ग, नामै छै। १६. ख. ऽस्त्री। १७ ख. अरू, ग. अनै। १८ ख. थकी। १९. ख. तण नु, ग. तिण नै। २०. ग. कुण वर होसी। २१. ग. सकल कला रो जांणणहार छै। महा रूपवत छै। २२. ग. इसो सुणतां इ कामपीडत। २३. ग. सखी नै राजा कनै मैली। २४. ग. पुत्री परणाय नै सीप दीधी।

सुरसुंदरी नूं परणि सारिका सहित ले आंपणै[1] नगर आयो। उथि[2] [3]विदग्ध चूडामणि नांम सूवा रा पंजरा माहि सारिका राषी।[3] तीयइ सारका रो रूप देषि सूवो कामातुर होइ बोलीयो। हे सारिका संभोग कीजइ।

तू[4] योवन रूप भरी छै।[5] संसार माहे [6]षायां पीयां[6] रो फल सभोग हीज छइ। बीजो सर्व निरर्थक छै। तीयइ कारण तोनुं कहूं छुं। जन्म सफलो करे।

तरइ सारका बोली। आ वात तो इम हीज छइ। हूं पिण जांणु छुं सु सांभलि।[7]

दूहा

दीपक होइ निसा समय, अरु उचो आवास।
सक न आवै दपति हि, करतां वचन विलास[8] ॥१
अैसइ जउं आनदं सौं, विलसै इह परकार।
सौई तौ संभोगसुष, और लोक व्यवहार ॥२

वार्त्ता

इतरै रांणी पूछीयो। थे किसी वात करो छउ[9]। तरै सारिका बोली। विदग्धचूडामण कहै छइ। तू मोसुं वीवाह करि।

तरै[10] रांणी कह्यौ। भला कहइ छइ[11]। तूं कुमारी छइ।

पाठान्तर—

१ स. आपरे, ग आपरा। २. स. उथ, ग. तरै। ३. ग. सुवा नै सारका दोनू एकण पिंजरे में रहै। ४. ग तिका शारिका। ५. प्रति मे आगे यह पाठ है—तिण सुवै नै बतलायो। जे तु मनै परणै तो ससार माहे सारवस्तु इतरो ई छै। संसार में जीव सहू बराबर छै। ६. ख. ग. षांणो पहिरणो। ७. आगे ख. ग में यह पाठ है—ख विविध वस्त्र (ग. वस्त्र विवध) गाहणा सुगंध, षान पान बहु भात (ग मांनु)। सवे नि[र]थंक दंपतेहु (ग. जाणज्यो), दंपति विनो दूहांत (ग त्रिया विना सहू छांण) १॥ त्रीया न जाण्यो पुरुष गुण, त्रीय गुण पुरुष अजांण। निर्फल त्यारो (ग. तिणां रो) जीवीयो, गतिराडां री षाण (ग. षांण)॥१ ८. आगे ख और ग. प्रतियों में यह 'दूहा' है—स्वेद हूता पिंडिनि द्रवै, मणणत (ग. मांणन) सक न काइ। वासिकसिज्या हुइ प्रिया, पुरुष प्रमादी थाइ ॥२ ९. ख. ग. छौ। १०. ख ताहिरां, ग. तिवारै। ११. ख. ग. छै।

इसडै[1] पडित नु तू क्यु न परणीजै। इतरइ[2] राजा आइ उभो रह्यउ। तरइ सुक-सारिका आसीस दे विनय करि कह्यौ। महाराज सिंहासण विराजै।

राणी बोली। [3]हे सारिका! सूवा नू किसै वासतै न परणीजइ। सारिका कह्यो।[3] मोनु पुरष रो[4] वेसास न पडै। पुरुष आप स्वारथी होइ। अनै स्त्री रो योवन थोड़ा दिन रहै*। पछै[5] योवन गयां बीजी[6] स्त्री सू प्रीति करइ। पुत्र न होइ तो बीजी परणीजइ[7]। षुन[8] देखइ तउ[9] मारै। विगर गुनह[10] पिण मारै। तउ कुण राषइ। अनै एक[11] पुरुष री वात कहुं छुं। थे वात साभलौ।

कंचनपुर नगर छै। तेथ[12] महाधन[13] नाम वांणीयौ वसइ। तोयइ रो पुत्र धनक्षय वर्द्धमांन सेठ री[14] पुत्री परणी[15]। पिता रइ घरे रही। कितरे दिनै धनष्यय रो पिता मूवउ[16] अरु द्रव्य षाइ गमाइ दरिद्री हुवौ।

तरै[17] स्त्री[18] नू लेवण सासरइ[19] आयो। पछै सुसरै महिमांनी[20] करि घणा गहणागाठा कपडा दे मुकलावो करि [21]विदा कीयो[21]।

पाछै पइडा[22] मइ जातां स्त्री नू कह्यो। अठै[23] घणे[णो]डर छइ। थारौ गहणो मोनुं दै। तरै सर्व गहणौ उतारि दीयौ। पछै पाणी रइ मिसि कूवा उपरि जाई नै स्त्री नू धको दे कूवा मांहि नांषि दीधी अनइ[24] आप गाडो ले घरि आयौ।

पाठान्तर—

१ ख इसै, ग इसा। २. ख. इण संमय, ग. इतरै तो। ३. ख. सारिका कहै छै। ४. ख. ग. री। ५. ग. अनै। ६. ग. और। ७. ख. ग. परणीजै। ८ ख. गुन्हो, ग. गुन। ९. ख. ग. तो। १०. ख. गुन्है, ग. गुनै। ११. ग. फेर। १२. ख. ग. तठै। १३. ग महाधनवत। १४. ख तिणरी। १५. ग. हुती। १६ ख. मूउ, ग मरण पांम्यो। १७ ख. ताहरा, ग. कीतरै दिनै। १८. ख. ऽस्त्री, ग लुगाई। १९ ख. ग सासरै। २०. ग. मिजमानी। २१. ग. शीख दीधी। २२ ख पडै, ग मारग। २३ ख एथ। २४. ख. श्ररु, ग. अनै, अन्यत्र भी ऐसा पाठ है।

---

* पत्र सं० ५ का फ. भाग पूर्ण।

पाछै बीजइ दिन वटाउ[१] आइ पांणी भरिवा डोरी [२]बांधि चरवी घाली[२] । तरइ [३]अस्त्री झालि नइ[३] बोली । [४]हु मांनविण छु[४] । दया कर परही काढ नै घरै आंण नै जीमाड[४] । कपड़ा देइ नइ बाप रइ घरे पहुचाई[५] ।

तरै[६] माता-पिता-भाई-बध पूछण लागा । तरइ कहण लागी । मारग माहे चोर मिल्या । म्हारो गहणो सर्व षोस ले गया । अनइ थांहरइ जमाई नु बांध ले गया । पछै न जाणू [७]किउ ही कीयो । मारीयो कि छोडीयो[७] । हू सचेत हूई तरै उठि आई ।

इसी वात सुणि[८] उवां सोक कीयो । पछै धनष्यय कितरांएक दिनां सर्व [९]माल गमाइ जूयइ हारि बैठो[९] । तिसडइ सुसरा री दिलासा आई ।

तरै फैरि सासरइ[१०] आयो । तठै गाव मांहे पइसतां आपरी स्त्री दीठी तरै मन मांहि डरण लागो । तरै स्त्री[११] हाथ पकडि कह्यो । तूं डरै मती । मैं थारी [१२]कूवा री[१२] वात कही न छइ ।[१३] आप ज्युं पीहर वात[क] ही त्युं हीज सुणाइ ।

घरे ले आई तरै [१४]सासु सुसरो साला मिलीया ।[१४] दिलासा दीधी । भली भांत भोजन कीया । मालीयै [१५]विछांवणा कीया[१५] तठे जाइ सूतो ।

पाछा थी स्त्री सोलै सिंगार करि पारका गहणा मांगि पहिर [१६]सोवण नु[१६] आई । ताहरां बातचीत करि विचारीयो । जो आज पहिलै दिन गहणा पराया पहिर आई छइ । बीजै दिन गहणा पहिरण

पाठान्तर—

१ ख. वाट उपरि कोइ मानवी । २. ख. प्रवेषी । ३ ख. कन्या निसरी । ४. ग. मोनु बारै काढो । ५, ख पोहचाई, ग. पोछाई । ६. ख उवै ना, ग उणानै । ७. ख मारीयो हुसै, ग. मारीयो कनै छोडीयो । ८. ख सांभलि, ग. सांमल । ९. ख. माया सगली हार गमाय, ग. धन हार गयो । १०. ख. सासरे, ग सासरै । ११. ग प्रति मे आगे 'षावद री' पाठ है । १२. ख. कुये री, ग कुवा री । १३. ग प्रति मे आगे यह पाठ है—'श्रो हूणहार थी सु हुई । श्रो थारो दोस नांहि ।" १४. ग सुसरै शाला मिल नै तिणनै माहे ले गया । १५. ख. उपरि षाट वीछाय दीधी । १६. ख. सूवण नू, ग. धणी कनै ।

नु कोई देसी नही। अनै [1]इण कना[1] हूं मांगू तो मोनु[2] न द्यइ। अनै षोसु तौ पुकारइं।

इसो विचार आधी राति[3] छुरी सेती स्त्री रो गलो काटि गहणा ले नीसरि गयो। तिणइ कारणि कहुं छुं। पुरुष दुष्ट महा अपराधी होइ सो प्रत्यक्ष[4] देष्यौ। ताहरां सारीका री कथा सुणि राजा सूवा कांनी दीठौ। तब सूबइ[5] तसलीम करि दूहो कह्यौ।

दूहौ

घोडा हाथी सारस हु, कपडो काष्ट पाषांण।
माहाराज* नारी पुरुष, इनि[6] बहु अतर जांण ॥१

वार्त्ता

राजा बोलीयो। तै पिण इसडी वात सुणी दीठी होइ तो कहि सुणाइ। सुक कहइ छइ।

कचनपुर[7] नगर हंतो। तठइ सागरदत्त[8] नांम सेठ रो बेटो[9] श्रीदत्त। तीयइ श्रीपुर[10] वासी सोमदत्त री बेटी जयश्री नांम परणी। पछै कितराएक दिन सासरै रहि पीहर गई।

वांसइ[11] श्रीदत्त [12]बहुत असबाब[12] लै[13] विणज री तांई परदेस गयो। घणा दिन रह्यो। इतरै जयश्री योवनवंती हूई।

दोहा

जो पिण त्रिया विरूपणी, योवन समय सलूणि[14]।
मस्ती[15] आया नीबरो, [16]पणि फल[16] मिष्ट तरूनि[17] ॥१

पाठान्तर—

१. ख इयं कन्हा। २ ख. मुने। ३. ख. रात्रि, रात रै समै। ४. ख परितष्य, ग. परतक्ष। ५. ख. सूहटै, ग सूवै। ६. ख. इण, ग इतरो। ७. ग. कनकपुर। ८. सारगदत्त। ९ ख पून, ग पुत्र। १०. ग. श्रीदत्तपुर। ११. ख. ग. वासे। १२ ग. वोहत द्रव्य। १३. ख ल, ग. लेइ नै। १४. ख. सलूण, ग. सलून। १५. ख. मसतां, ग. मसती। १६ पिण फल, ग. फल पिण। १७. ख. तरूण, ग तरुन।

---

* पत्र स० ५ का ख. भाग पूर्ण।

वार्ता

तरइ जोवन रा जोर सेती रह्यो न गयो। तव एक युवांन पुरुष सेती प्रीत करी। नित्य उवरइ[1] घरि जाइ सभोग करइ। पीहर रौं कोई पूछइ नही। कहीयो छइ।

दूहा

पीहर-वास विदेस प्रीय, [2]रिति वसत[2] मनि लोभ।
कुस्त्री सग प्रसग नर, ए त्रीय विनशन[3] थोभ॥१
भाई पुत्र पिता पुरुष, रूपवत पति देषि।
कांचा भांडां री परइ, त्रीया वहै[4] जल रेष॥२
नारी ज्युं घी रो घडो, पुरुष अग्नि सम जांणि।
अग्नि कनारइ [5]घृत चलै, त्यु नर ढिग त्रीया वषांणि[6]॥३

वार्ता[7]

[8]उवांइ नुं सुष भोगवतां जयश्री रो भर्त्तार[8] आयो। तांहरां जयश्री दुचिती हुई जु अउ पापी लैण नुं आयो। किसु करू। केथ जाउं। भूष तुस सर्व गई[9]। अति[10] गोष्टी, निरंकुसता, पुरुष-संबध, अउरि घरि जांणो, दूती रो सग, भर्त्तार री ईर्ष्या, एता स्त्री रा विनाश-कारण कह्या।

तीयइ समइ श्रीदत्तरी महिमानी करि रात्रि सोवण[11] नू मालीयै पलिग विछाइ दीन्हउ। अनइ जयश्री नु पिण परचाइ सोवण नुं मोकली। सा भर्त्तार पासि जाइ उपराठी होइ सूती। कहीयो छइ।

दूहा

ऊतर वेग न दीय कछु, देषत सनमुख नांहि।
बइठत[12] उपराठी[13] हुई, भृकुटि चहोरति[14] मांहि॥१

पाठान्तर—

१. ख. उवेरे, ग. उणारं। २. ग. रक्त वशन। ३. ख. विणसिण, ग. विना न। ४. ख. वले, ग. बहे। ५. ख. कनारे, ग. कनारे। ६. ख. वषाण। ७ ग. प्रति मे आगे यह पाठ है—उण सु भोग करै। जीणसु कह्यो है। स्त्री नै घणी पीहर न राखीयै। ८. ग कितरं दिन जातां श्रीदत्त पिण कमाय नै। ९. आगे यह पाठ है—ख. सीत उण्ण क्योही रुचे नही, ग. अन पिण भावै नहीं। १०. ग. घणी। ११. ख. सूवण, ग सूमण। १२. ख. ग. वेठत। १३. ग. उपरांठी। १४. ख. चहोडत।

गुन[1] विसरइ [2]अउगन गनइ[2], परतिष[3] गारी देहि।
दीन[4] वस्तु न लेइ कछू, विरती लछन एहि ॥२

वार्त्ता

तिका जयश्री भर्त्तार पासि विरती थकी सूती[5]। भर्त्तार स्नेह की[6] वात करै सु [7]उवै नुं[7] विष[8] लागइ। मुहि न बोलइ। नीद न आवइ। कहीयो छइ।

[दूहा]

विरती नींद न आवही, पट तूली[9] परितोइ।
राती सुष मांनइ[10] सुवइ, कक्कर उपरि जोइ ॥१

[वार्त्ता]

जयश्री नू नीद [न] आवइ। अनइ[11] श्रीदत्त नींद भरि सूतो। तरइ आधी राति उठि जार पासि गई। तैथि[12] उवै नू[13] चोकीदार तीर करि मारीयो। सो संकेत री ठोडि मालती सषी रा घरि माहि गयो।

इतरइ जयश्री पिण सषी रै घरि[14] आई। इतरै जार बोलीयो। म्हारै[15] तीर लागो छइ[16]। पिण तोनू भोगवीसि[17]। तरइ भोगवतां जयश्री रो होठ मुष मांहि लीयो हूतो। अरु उवै* घाइल नुं धनुष-वाव[18] हुइ दांति लाग गया। अरु जयश्री री होठ दांतां सु कटि नै घाइल[19] रा मुंह मांहि रह्यो। जयश्री सुरडी हुइ। पछतांवण लागी।

पाठान्तर—

१. ग. गुण। २. ख. उगुन गुनै, ग. श्रोगुण गिणे। ३. ख. ग. परसत। ४ ख. दीठो, ग. दीनी। ५. ग प्रति मे आगे ॥छै॥। ६ ग. री। ७. ख उण ने, ग उणनै। ८. ग. खारी। ९ ग. सूती। १०. ख. माने, ग. मानै। ११. ख. ग. अरु। १२ ख. तिवारे, ग. उठै। १३. आगे ख. प्रति मे 'जार आवते ना'। १४. ख घर माह, ग. घरै। १५. ख. मोनु तो, ग माहरै। १६. ग. छै। १७. ख भोगवीस, ग. भोगवस्। १८ ख. धनपय, ग धणुखीयो। १९. ग. जार।

---

* पत्र स० ६ का क. भाग पूर्ण।

जार मुवौ। चोर पिण घर माहे पइठो हूंतौ। [१]तिणे उभै तमासौ दीठौ[१] अर रात थोडी रही।

ताहरा चोर षाली ही घर गयौ। पछइ जयश्री भर्त्तार पासि जाइ नइ तोफान उठाइ पुकारी। [२]इयइ धणी पापीयइ[२] म्हारो होठ [३]काटि षायौ[३]। इसडा कांम बीजो कोइ करै नही। [४]होठ रै दांत सहु कोई घइ छइ[४]। पिण इण दावा कोइ षाइ नही।

तरै श्रीदत्त [५]जागि देख नइ हैरांन होइ रहीयौ[५]। जयश्री बाप भाय [माय] भाई नुं जाइ मुहडौ दिषायौ। अरु जयश्री री मा कह्यौ। आ तौ सुवण नुं जाय ही न हुती। पिण मइ सगति[६] मोकली[७]। तीयरइ रउ फल पायौ। पिण [८]ईयइ नु[८] मारि काठो अरु रावलइ[९] ले जावौ[१०]।

ताहरां चोर विचारीयो। भाई इयइ नु वेगुनाह मारे छइ। तउ हू जाइ नइ कहू। तरइ चोर राजा पासि जाई कह्यो। जीव बकसो[११] तो कहू।

राजा कह्यौ। [१२]जीव बकसीयो[१२]। कहि तू कुण छइ।

तरइ कह्यो। हुं चोर छुं। राति[१३] मइ तमासौ दीठउ। [१४]इयइ मइ[१४] गुनह कोई न छइ। [१५]मती मरावौ[१५]। राति मालती[१६] रइ

पाठान्तर—

१. ख. चोर इसौ तमासौ देषि घर आयौ, ग. इसो तमासो चोरां पिण नीजरे दीठो। २ ख. ग: इण पापी। ३. ग तोड षावो। ४. ख. अधरा रै दात सहि कोई दे छै, ग. होठ रै दांत सब को दे। ५. ख. जाग हैरान हुयो, ग. जागीयो सो देखं तो स्त्री रोवे छै। ६. ख. सकत, ग मांडाई। ७. ग. मेली। ८, ख. इणनु, ग. इणनै। ९. ख रावले, म. रावलै। १०. आगे यह पाठ है—ख. 'तिवारे श्रीदत्त नु मार कूट रावले ले गया। राजा उवारो कह्यौ करि गरदन मारण रो हुकम कीयो।' ग. 'दाघ नै रावलै लाया। ते सर्व बात राजा उणारी सांभली नै मारण को हूकम कीयो।' ११. ख. वकसौ, ग. बगसो। १२. ग. गुनो तुनै माफ छै। १३. ख. रातें, ग, रातै। १४. ख. इणमै, ग. इण ठ मै। १५. ख. ग. इणनु गरदन मति मारो। १६. ख. मे आगे 'सषी रे' पाठ है।

घरि जारि जातो हूंतो। तरै चोकीदारां[1] चोर जांण नइ तीर वाह्यो। तीर लागउ। तरइ दौडि मालती रा घरि मांहि नासि पइठउ[2]।

पछइ[3] आगइ[4] अस्त्री मालती रइ घरि आई। तरै जार पुरुष मिल्यौ। मिल नइ कह्यौ। म्हारइ घाव लागउ[5]। पिण तोनु आलिगन देईस[6]।

ताहरां स्त्री रो होठ मुष मांहि लीयो अरु संभोग करतां वीर्य अरु जीव वरावरि[7] छुटो[8]। पुरुष रा दांत चिहट गया। स्त्री-मुख धंधूणि[9] जोर सुं काढीयो। होठ घाइल रा मुंहडै मांहि छै। पवरि कराडो।

ताहरां राजा मांणस[10] मेल नइ षबर कराडी[11]। होठ घाइल रा मुह माहि लाधउ[12]। श्रीदत्त नुं छोडि दीयौ[13] उवांरै सिर डंड कीयो[14]।

पछइ मडो बोलीयो[15]। महाराज। तू राजा [16]विक्रमादीत छइ[16] तउ कहि। दूनुं मांहि महा अपरांधी कुंण। न कहिसि[17] तउ हीयो फूट मरिसि[18]। अरु झूठ मत कहै।

ताहरां राजा कहीयो[19]। पुरुष महा अपराधी। स्त्री सदा [20]छिनाला करै[20] ही छइ। अरु होठ रइ वासतै तोफांन दीयो।

इतरइ[21] कहतां मडो नीसर सीसम री डाल विलगी। तरइ[22] राजा फिरि जाइ मडो उतारि ले आंवतां मडो वोलीयौ।

इति श्री वैताल पचीसी री ३ तीजी[23] कथा कही[24]।

पाठान्तर—

१ ख. चोकीदारै। २. ख. गयो, ग. पैठो। ३. ख. ग. पछै। ४. ग. उठै। ५ ख. ग. लागी। ६. ख. करिस्यू, ग. करसु। ७. ख. वरावर, ग. साथ। ८. ख. छूटा, ग टुटा। ९. ख. धूघण काढीयो, ग. घूण। १०. ग. आदमी। ११ ग. कराई। १२ ख. पायो, ग. निकल्यो। १३. ग. दीनो। १४. ख. कीयो, ग. कीधो। १५ ख. वोलीयो, ग. वोल्यो। १६. ख. ग. विक्रमादित्य छै। १७. ख. कहिस, ग. कहीस। १८ ख. ग. मरीस। १९. ख. कह्यौ, ग. वोल्यो। २० ख. छनाल कारे, ग छिनाल छै। २१ ख. इतरे ग. इतरो। २२ ख. ग. तिवारै। २३. ख. श्रीजी। २४. ग. सपूर्ण।

वैताल-पचीसी री चौथी कथा

बहुडि[1] मारग मांहि वैताल बोलीयो। राजा सांभलि[2] वर्द्धमांनपुर[3] नगर। सुरुद्रसेन[4] राजा राज करै।

एक समै राजा सभा मांहि बेठो हूतौ[5] मंत्री सुभटां* सहित। अरु किणही देस थी एक वीरबल नांम रजपुत [6]आइ पौल[6] उभौ रह्यौ। पोलीया सुं कह्यौ। माहि जई राजा सुं मुजरो करावौ। तरइ पोलीयँ[7] जाइ राजा सुं कह्यौ।

महाराज एक रजपूत किणही देस थी पोल आइ उभो छइ। महाराज रइ पाव देष्या चाहइ[8] छै।

तरइ[9] राजा परधान सांम्हो दीठउ[10]। परधान पोलीयै नूं कह्यो। भीतर बुलावौ[11]। तरइ वीरबल भीतर आइ मुजरो कीयो। तसलीम कीधी। [12]राजि मोनुं चाकर राषउ[12]। हुं भली भांत राज री षिजमत करीस।

तरइ कह्यौ। थारी किसी दिहनगी कीजै। तरइ वीरबल कह्यौ। पाच सइ टका रोज [13]जीमण नुं म्हारइ लागइ छइ[13]। तरइ कह्यौ राजा। थारइ[14] कितराएक रजपूत घोडा छइ।

तरइ बीरबल कह्यौ। [15]दोइ हाथ, दोइ पग, एक षांडो,

पाठान्तर—

१. ख. वडै। २. ख. साम्लो, ग सुण। ३ ख वरधमान, ग. अपयठाण। ४. ख. रूद्रसैन, ग. प्रजापाल। ५. ख. हुती, ग. छै। ६. ख. आइ गोल, ग. पोल आय। ७. ग. पोलिये। ८. ख. चाहै। ९. ग. ते सुण। १०. ख. देष्यो ग. देख्यो। ११. ग बुलाय ल्याव। १२. ख. मो सारीषे रजपूत री (ग. मे आगे 'चाकरी री') चाह हुवे (ग. हूवै) तो दीहाडी कीजै (ग. दिहाडा री रोजगार कर राखीजै)। १३. ख. ग. पाक तो रहू। १४. ख थारे, ग थारैं। १५. ख. हाथ दोई षाडो १ छे।

---

* पत्र स० ६ का ख. भाग पूर्ण।

इतरा छै[१४] । तरइ राजा कह्यो । म्हां वतइ[१] राखीयो न जाइ । तरइ वीरबल सीष[२] करि हालीयो[३] ।

तरइ परधान फेरि बुलाइ राषीयो । दिहनगी[४] दस भर दीन्ही छइ । जांणीयो इतरो[५] मांगै छइ । सु क्युं हेक गुण छइ[६] ।

तिको[७] वीरबल[८] आधो देव ब्राह्मण नु द्यइ । तिण सुं आधो फकीरां[९] नुं द्यइ[१०] । बाकी रहै तिकौं स्त्री बेटा नुं घरे द्यइ । पछइ चाकर थको [११]प्रोल ऊभउ[११] रहै । घडी च्यार जीमण री तांई घरि जाइ । बीजूं राजा जरै पूछइ कोइ अठइ छइ । तरइ वीरबल कहइ । हुं हाजर छुं । पछइ जिकोई कार्य राजा कहै सो आप करइ । इसी भांति सुं चाकरी करइ ।

एक दिन अंधारी [१२]चवदिस की[१२] राति आधी गई छइ । तिस इकाएक रोवती स्त्री सुणी । तरइ राजा बोलै । कोई छै एथि[१३] ।

तरइ[१४] वीरबल बोलीयो । हु छुं । कीसुं हुकम करौ छउ । तरइ राजा कहीयो । देषि[१५] आव । कुण स्त्री रोवै छै ।

तरइ[१६] बीरबल तसलीम करि नीसरीयौ । राजा विचारीयो । इसडी[१७] अधारी रात्रि रजपूत नुं एकलो [१८]मेल्हीजइ नही[१८] । मोटो रजपूत छइ । तरइ राजा षडग ले [१९]वांसै हुवौ[१९] ।

आगइ वीरबल छै । वांसे राजा छांनौ जाइ छै । तरै नगर सुं नीसर मसांण मांहे गयौ । देषइ तो एक स्त्री वस्त्र आभरण पहिरीया [२०]दयावणी वैठी[२०] रोवै छै ।

पाठान्तर—

१ ख वते । २ ख. मुजरो । ३. ग. चालियो । ४. ख. दिहाडी, ग दैनगी । ५. ख ग इतरो । ६. ग छै, ग होसी । ७. ख. तिको, ग. होवै तै । ८. ग. प्रति में आगे 'धरम नीमत' । ९. ख. ग. फकीरा । १०. ग वैंच दैवे । ११. ख. ग. पोल ऊभो । १२. चोदसरी । १३. ख. अठे । १४ ख. तिवारै । १५. ख. जोइ, ग. देख । १६. ग तरै । १७. ख. ग. इसी । १८. ग. कठै मेल्नियो । १९. ख. वासे २ हालीयो । २०. ग. दया आवै तिण भाति, ग. वीजा राम मै दया आवै इसी तरहे ।

तरै वीरबल पूछीयो । तू कुण छै । 'किसै[1] दुषै' रोवै छइ । तरइ बोली । हूं राजा सुद्रसेन[2] री बेटो[3] सरीषी लिखमी छुं । मइ[4] राजा री भुजा बहुत दिन विश्रांम लीयो[5] । हमइ[6] ईयरो राज भंग हुसी[7] । हु अठा थी परही जाईस । इणरै वियोग[8] थी रोऊं छुं ।

तरइ बीरबल कह्यौ । किण ही प्रकार राज[9] भंग न होइ अनै थारौ रहणो होइ ।

तरै लिक्ष्मी[10] बोली । एक छै । जो राजा रै वीरबल रजपूत छै । ति*को जउ आपरउ[11] बेटउ सर्वमगला देवी नइ[12] बलि द्यै तउ राज भग न हवै [हुवै] । हुं पिण बहुत दिन रहूं । एतो[13] कहि अलोप हुई अनइ राजा पिण प्रछन्न[14] थकै लक्ष्मी रा वचन सांभलीया ।

वीरबल घरि आइ स्त्री पुत्र जगाइ लक्ष्मी रा वचन कह्या[15] । ताहरां स्त्री बोली । एतउ कार्य राजा रौ नही करो तो एती दिहनगी[16] षातां क्यु छुटोला ।

पछै पुत्र नु[17] पूछीयो । तम्र पुत्र कह्यौ । धन्य[18] हुं । जउ म्हारौ शरीर[19] इसडइ काम आवै । तो पिताजी बिलंव[20] क्युं करौ[21] ।

तरै तीनूं एक मना हुइ नै देहुरइ[22] गया ।

पाठान्तर—

१. ग. किम । २. ग. प्रजापाल । ३. ग. स्त्री । ४. ख. ग. मै । ५. ख. लीयौ, ग. कियो । ६. ख. हवे, ग अवै । ७. ख. हौसी, ग. होसी । ८. ग. बिजोग । ९. ख. राजा रो, ग. राजा । १० ख. ग. लक्ष्मी । ११. ख. वीरबल नाम. ग. रजपुत वीरबल नामै छे तिण रो । १२. ख नु ग. नै । १३. ख. इसो, ग इसो बचन । १४. ख. प्रछन. ग. छानै । १५. ग. सुणाया । १६. ख. दिहाडी, ग. रूजगार । १७ ख. नु, ग. नै । १८ ख. धंन, ग. धॅन । १९. ख. सरीर. ग. जमारो । २०. ख. विलब, ग. ढील । २१. ग. प्रति में आगे यह पाठ है—'राजा पिण छानो थको सर्व बात सुणे छै ।' २२ ख. ग. सर्वमगला देवी रै ।

---

* पत्र स० ७ का क. भाग पूर्ण ।

दूहा

सुस्थित थको न षाइ कछु, सुइ न सकै निद्राल।
वञ्छित सब मन मइ रहै, चाकर नुं दुष जाल ॥१
आरभीयौ रहइ आपरउ[1], पर कारिज सावधांन।
जिण तन वेच्यो आंपणो, सुष न तीयै नुं जांण ॥२
मूंन[2] कीयइ गूगो कहइ, बहु बोलतै लवाल।
क्षमा कीयां डरणो कहइ, न सहै तउ जंजाल ॥३
धीठ कह्यौ नइडै[3] रह्या, अलगइ कह्यइ अमत्त[4]।
जलो विडांणी चाकरी, जियै न सुष सुरत्त ॥४

वात[5]

किसू करइ वीरबल। पराया चाकर। देवी आगइ ऊभो रहि कह्यो। देवी राजा सूद्रासन[6] बहुत[7] वरस राज करो। चिरंजीव हुवउ। एतउ कहि [8]पुत्र नुं माता आगै चढायौ[8]।

पछइ पुत्र रइ वियोग वीरबल आप कमल-पूजा कीधी। पछै पुत्र (स्त्री) रइ वियौगै भर्त्तारइ वियोगइ स्त्री पणि सिर-छेद कीयो।

इसो ष्याल[9] देषि राजा विचारीयो। हूं ईयांनू मूवा देषि जीविवौ[10] बूझइ नही। मोनुं पिण मरिवौ। इम जांणि राजा षड[ग] लेई [11]कमल-पूजा करिवा[11] लागौ।

तब देवी प्रगट होइ राजा रो हाथ पकडि कह्यौ। [12]तू मरि मां[12]। तरै राजा बोलीयो। माता म्हारी जो दया[13] करौ छौ तो म्हारी आयुर्बल[14] रा दिन ईयां तीनां [15]नइ वांटि द्यौ[15] तब देवी संतुष्ट[16] होइ कह्यो। जा थारा सेवक तूं बहुत वरस जीवो।

पाठान्तर—

१. ख. ग. आपरो। २. ख. मुन, ग. मन। ३. ख. नेडा, ग. नैडो। ४. ग. प्रमत्त। ५ ख. वारता, ग. वार्ता। ६. ख. सूद्रसेन, ग. प्रजापाल। ७ ग. घणा। ८. ख पुत्र को मस्तकि काट्यो, ग. देवी ने चाढ्यो। ९. ख. ग. अचरिज। १०. ख. राज करु, ग राज्य करुं। ११. ख. मस्तक काटण, ग. माथो काटण। १२. ग. पुत्र तु अमर हुवो। १३. ग. दंयो। १४. ख. आवरेषा, ग. आयु। १५. ग. नै सरीखी वेच देवो। १६. ग. राजी।

तरै वीरबल स्त्री-पुत्र सहित [1]ऊठि ऊभौ हूवौ[1]। तरै राजा [2]छांनोई ज[2] घरि[3] आयौ। वीरबल नुं जणायो नही। पछै वीरबल स्त्री-पुत्र घरि पहुंचाइ पउल[4] आइ ऊभो रहीयौ।

राजा पूछीयो [5]वीरवल आयो। कासू हुतौ। कुंण रोवै हुंती[5]। वीरबल कहीयौ। एक स्त्री [6]रोवइ हुंती[6]। मोनु देषि छिप[7] गई। बीजी[8] वात कांई नही।

दूहा

ज्ञांनी[9] [10]जो न करै गरब[10], करि नय मावै सूर।
दाता दे मीठो चवै, ए तीन भलाई पूर ॥१

वार्त्ता

प्रात[11] समै राजा सभा मांहे बइसि वीरबल[12] री अस्तुति करी[12]। वीरबल बुलाइ वात कहाई। [13]अघराजीयो कीयो[13]। सांमधर्मा पणो पद दीधउ। अइसी कथा[14] कहि राजा नू* वइताल[15] पूछीयो। महाराज ईयां[16] माहै सर्वाधिक[16] कुण। [17]सर्वाधिक राजा सूद्रसेन[17] जीयै स्त्री पुत्र आत्मा सहित तृण बराबरि गिणीयो। अरु [18]सांम काम भला सेवक सदा[19] आवै।

एतो[20] राजा री वचन सुणि वेताल[21] वहुडि सीसम री डाल विलगीयौ[22]। ताहरां राजा पाछौ जाइ सीसम री डाल थी उतारि मडो ले[2] आवतो हूवौ[23]।

॥ इति श्री वइताल पचीसी री[24] चौथी कथा कही[25] ॥

पाठान्तर—

१. ग. घरे आयो। २. ख. विना लषीया। ३. ख. महले। ४. ख पोलि, ग. पोल। ५. ग तो रात रा समाचार कहो। ६. ग रोवती थी। ७. ग पाछि। ८. ख. और, ग और। ९ ख. ग्यान, ग. ग्यानी। १०. ख. गरब (ग. गर्व) करै नहो। ११. ग. प्रभात। १२ ग. नै बखाण्यो। १३ ख. अर्द्ध राज दीयो, ग. आधो राज दीधो। १४ ग. बात। १५. ख. वेताल, ग वेताल। १६. ख इया, ग इणा। १७. ख ग. सत्वाधिक। १८. ग. राजा रो सत्य अधिक। १९. ग सेवक तो काम आवै ही। २०. ख. इसो, ग. इतरो। २१. ग. मडो। २२. ख. विलगो, ग. विलगो। २३. ख. हालोयो। २४. ख नी। २५. ग. सपूर्णम्।

---

* पत्र सं० ७. ख. पूर्णं।

वैताल-पचीसी री पांचमी कथा

हिव[1] वले मारगि चालतां वेताल राजा नू बतलायो[2]। राजा न बोलै[3] तरइ कहइ छइ।

उजीणी[4] नगरी। तेथि महाबाहु[5] नांम राजा। तीयरइ हरदत्त[6] नामा ब्राह्मण। तीयरइ पुत्री अति रूपवंत मदनावती नांम वर-प्राप्ति[7] हुई।

तरइ[8] [9]ब्राह्मण हरदत्त[9] विचारीयो। [10]कुणइ नुं[10] दीजै। तब बेटी कह्यौ[11]। जीयइ माहै गुण कला चतुर हुवै तीयइ नूं देज्यो।

[12]तीयइ समइ[12] बाहु[13] नांम राजा हरदत्त[14] नूं दक्षणाधपति पार्श्वे[15] मेलीयो। हरदत्त[16] जाइ राजा सू मिलीयो।

राजा आदर करि पूछीयो। किसडी[17] वेला वहइ छइ। हरदत्त कहै।

दोहा

महाराजा नर पूछीयो, साच कहइ[18] नही कोइ।
क्रूर निजर हाकिम तणी, तइ[19] वसुधा[20] उजड होइ॥१

चोर मुसै घर[21] पारको, सुजन[22] क्षीण दीसति।
पूतहि पिता न वेससइ, कष्टइ दिन घासति॥२

दाता भजइ दरिद्र की, कृपण सदा[23] धन होइ।
पापी जीवइ बहुत दिन, धर्मी चलत ही जोइ॥३

पाठान्तर—

१. ग. फेर। २ ख बोलीयो, ग बतलावतो हुओ। ३. ख. बोलीयो। ४ ख. उजैणी, ग. उज्जेणी। ५. ग बाहू। ६. ग. हरदास। ७. ख. ग. प्राप्त। ८ ख. तब, ग. तरै। ९. ख ब्राह्मण मन मे, ग बामण। १०. ख. किण नु। ११ ग बोली। १२. ख. तिण समय। १३. ख. महाबाहु। १४ ख. हरदास। १५ ख. पास। १६ ख. हरदास। १७. ख. ग. किसी। १८. ख ग. कहै। १९. ख. ग. तिण। २०. ख. घरि, ग घर। २१ ग. धन। २२. ख. सोजण, ग. सज्जन। २३. ख. बहुत, ग. सदिन।

सजन सीदावै मनहि, विलसै विभव असंत।
पूत मरै जीवइ पिता, ए कलिजुग रो मत।.४

वार्त्ता

तेथि[1] हरदत्त[2] ब्राह्मण रइ बेटी कुंवारी सुणि एकै ब्राह्मण आइ मागी। तरै हरदत्त[3] कहीयौ। जीयरइ ज्ञांन गुण[4] भलो हूसीय[5] तीयै नू देईस।

तरइ ब्राह्मण बोलीयौ। मो मांहि भलो गुण छइ। इतरौ कहि आपरइ हाथ रो संवारीयो रथ आणि दिषायौ। अर कहीयो ईयइ[6] रथ रो इसडो प्रभाव छइ [7]जठैइ मन कीजै[7] तठइ जाइ।

तरइ हरदत्त[8] कहीयो। तोनूं कन्या दीनी। [9]प्रभात समइ[9] रथ लेई आवै ज्युं बैऊं रथ बैस नइ उजेणी जावां।

तरइ रथ बैसि उजेणी आया। तरइ पछइ वांसइ एकै ब्राह्मण हरदत्त[10] रै वडइ बेटइ नुं कहीयो। थारी बहिन मोनुं दै। तरै उवइ कहीयौ। तौ मांहि किसु गुण छै।

तरइ ब्राह्मण कह्यौ। [11]तीन काल री वात जांणु[11] छुं। वांसै हूवौ[12] सु कहु। होसी[13] सु कहुं। हुवइ छइ सु कहुं।

ताहरां हरदत्त[14] रे बेटइ कह्यो। इसो गुण छै तोमै तउ म्हारी बहिन तोनुं दीन्ही।

पाठान्तर—

१ ख. ग. तठै। २. ख. ग. हरदास। ३. ख ग. हरदास। ४. ग. हुनर। ५. ख. हूसी, ग. हुवै। ६. ख. ग इण। ७. ख. जठे मंन करै, ग. जिको मन में चितवै। ८. ख. हरदास। ९. ग. प्रभातै। १०. ख. ग. हरदास। ११. ख. ग. त्रिकालदर्शी। १२ ख. ग. वात हुई। १३ ख. हूसी, ग. हुसी। १४. ख. ग. हरदास, आगे भी ख. ग. प्रतियौ में 'हरदत्त' के स्थान पर 'हरदास' पाठ है।

तरै किणही एक ब्राह्मण माता पासि मांगी। माता* कहीयो तो माहि किसुं गुण छइ। तरै कह्यौ। धनुष विद्या जांणुं छुं। वाल बांधी कवडी[1] मारू। सबद वेधूं आंषि बांधि करि। तरइ माता कह्यो तोनुं कन्या दीनी[2]।

तरइ वीवाह रो समय हुवौ। तिवारै तीनेई वर[3] आया। माहो मांहि कोलाहल कीयो। तठइ कोलाहलि एक यक्ष आयो। तरइ मदनावती रो रूप देष वंध्याचल पर्वत ऊपरि[4] ले गयो।

दूहा

अति सरूप नांहिर भलउ[5], ना अति भलउ[6] गुमांन।
अति दईणो भी नां भलो, [7]ए त्रय[7] वचन प्रमांण॥१

वार्त्ता

जाहरां[8] प्रात हूवौ। ताहरां तीन[9] वर आया। उवां[10] मांहि ज्ञांनी हुंतो तीयइ नुं पूछीयो। मदनावती रात री न लाभइ छइ। तिका कठै छै। तरइ ज्ञांन सुं करि देषइ तौ वंध्याचल छइ। जक्ष ले गयो छै।

बीजै वर बांणवेधी छै। तीयइ कह्यो नजरे देषू तउं तीर कर मारू। ति वारइ तीजो वर बोलीयौ। म्हारै रथि चढि[11] चालौ।

ताहरां[12] उवै रथ तीनै वैस वंध्याचल जाइ नै [13]राक्षस नुं[13] मारीयो बांणबेधइ। पछइ रथ ऊपरा बैस मदनावती[14] नुं ले नइ आया। पछइ तीनेई माहो माहि [15]वाद पडीयो[15]। पिता पिण सोच

पाठान्तर—

१. ख फोहो। २. ख. ग. दीघी। ३. ख. वीद। ४. ख. ऊपर। ५-६. ख ग. भलो। ७ ख. एतै, ग. ये त्रिय। ८. ख. जव, ग. जितरै। ९. ख. ग. तीनै। १० ग उणां। ११. ग. वैस नै। १२. ख. तिवारे, ग हिवै। १३. ग. राषस नै। १४. ख मदनारवती। १५. ग. लडवा लागा।

* पत्र सं० ८ का क. भाग पूर्ण।

करिवा लागौ। कुंणै नुं दीजै। कुंणै नुं न दीजइ। [१]तीनां ही माहै[१] गुण बराबरि। [२]तीनेई पर ऊपगारी[२]।

वइताल बोलीयउ। [३]महाराज कहौ[३]। आ अस्त्री[४] कुणइनु आवइ। अरु कह्यां हौ वणइ।

राजा कहइ छइ। रथी अरु ज्ञांनी वेइं ऊपगारी हूवा। अरु जीयइ बांण करि राक्षस मारीयो [५]तीयै नुं[५] आवइ।

इतरै कहतां ही मडो[६] जाइ सीसम री डाल विलगीयौ। तिवारइ राजा फिरि जाइ मडो ले आवतां मारग मांहि चालतां वैताल बोलीयौ[७]।

इति श्री वैताल पचीसी री पाचमी कथा [८]कही छइ[८] ॥५

पाठान्तर—

१. ख. सर्व मांहि, ग. इणा मैं। २. ग. निवैडो ब्राह्मण नै आवै नही। ३. ग. अहो राजेंद्र। ४. ग कन्या। ५. ख. तिणना मदनारवती, ग. तिणनु मदनावती। ६. ख. वेताल। ७. ख. कथा कहै छे। ८. ग. सम्पूर्णम्।

वैताल पचीसी री छठी कथा

हिवइ वइले वेताल कह्यौ छै। महाराज[1] सांभलौ[2]। [3]धर्मपुरी नगरी[3]। धर्मपाल राजा। तीयै गांव रइ गोरिमइ चडिका रो देहरो करायो। चोकोर कोट वाग करायो। राजा सदाई पूजा करि दरसण करि नैं जीमइ।

एक दिन राजा रो मित्र बोलीयो। महाराज ईश्वरी[4] स्तुति करो ज्यु इहलोक परलोक सुष हुवइ।

दूहो

पुत्र विना सूनो सदन, यद्यपि जन बहु साथि।
आप मूयैं[5] पीयैं[छै] सपुत विण, कुण राषे आथि ॥१
गति न लहे अपुत्तीयो, पिंड न पितर लहंति।
तीयइ[6] कारण पुत्रमुष, दीठां सुष चाहंति ॥२
[7]मात भगति तइ पाईय, पुत्र भलो महाराज।
सुष देणो चिर जीवणो, राषण री कुल लाज[7] ॥३

वार्त्ता

इसा वचन मित्र बोलीयो। राजा सांभलि वहुत* भाव सेती विध पूजा करि स्तुति करतौ हूवौ।

दूहो[8]

भाव थकी भव तारणी, सुर तेतीसां राइ।
महा लिक्ष्मी छत्र धारणी, भगतां आवै भाइ ॥१

पाठान्तर—

१. ख विक्रमादित्य, ग राजा। २ ग. बात विना पथ कटं नही सो हु कहुं छुं। ३. ख. धर्मपुरु नाम नगर, ग धर्मपुर नगर। ४ ख. ईश्वर री, ग. माताजी री। ५ ख. मुवै, ग मुवा। ६ ख तीयें, ग जिण। ७ ग सुख देणो चिर जीवणो, राखे कुळ री लाज। आई पुत्र आयो इसो, राखै घर को राज ॥२ ८. ख प्रति मे तीनों 'दूहा' नहीं हैं।

---

* पत्र सं० ८ का ख भाग पूर्ण।

'पूजा करि[1] कर जोड दुइ, एक पाइ थिर होइ।
सुत दे जस दे विजय दे, प्रभु म्हारी दिसि[2] जोइ ॥२

[3]पुत्रादिक तीनूं दीया, चोथो विभव अधिक।
देवी तूठी सवि दीयउ, अरु दीयौ मन ठिक्क[3] ॥३

वार्ता

[4]इयुं करतां[4] जिको ध्यावे सो पावइ।

[5]हमइ राजा नै मित्र देहुरै आया हुंता[5]। तठइ एक धोबी री बेटी राजा दीठी। रूपइ रंभा जिसी। महा दिव्य रूप लावन्य देषि राजा[6] देवी आगै कह्यो। माता इयै सुं म्हारो वीवाह हुवइ तो थारइ आगइ आइ कवल[7]-पूजा करूं।

इसो कहि आपणइ[8] घरि जाइ वात कर सगाई कीवी। पछइ परण राजा षुस्याल होइ रहीया।

पछइ कितरेके दिवसै मित्र सहित मुकलावो ले आवतां देवी रइ[9] देहरइ नइडा[9] आया। तरइ यादि करि [10]मित्र स्त्री नु कहि[10] गाडी उभी राषी।

पछइ आप एकलो देहरइ जाइ कमल-पूजा करी[11]। पछइ वेला घणी लागी[12] तरइ मित्र [13]अस्त्री नु[13] कह्यो। थे ऊभा रहो। हूं देहरइ[14] जाइ षबर ले आवुं।

मित्र मांहि जाइ देषइ तो सिर धड जूदा २ हुवा पडीया छै। तरइ मित्र[15] विचारीयो। जउ हू जाइ कहीस तउ वहू[16] जांणसी

पाठान्तर—

१. ग. कर पूजा। २. ग. ठा। ३. ग. प्रति मे यह दूहा नही है। ४. ग इसी विध। ५. ख एक दिन (ग. में आगे 'एक') धोबी मित्र सहित देवी रे (ग. देवी रो) देहरै दरसण (ग. दरशन) करण आयो। ६. ग. धोबी। ७ ख कमल, ग. कमल। ११. ग ८. ग. आपरै। ९. ख. देहुरै नेडा, ग देहरै नैडा। १०. ग. मित्रां ने कही। कीधी। १२. ख. हुई, ग. लागणी मांडी। १३ ख उणरे, ग. उणनै। १४. ख. भीतर, ग माहे। १५. ख. ग. धोबी रे मित्र। १६. ग सगला ही।

इणरा हीज [1]कांम छइ[1] । तरइ मित्र पिण कमल-पूजा कीधी ।

इतरै घणी वेला हुई । बेउ[2] पाछा नाया । तरइ स्त्री वहिल षडि देहुरइ आवी । पछइ देहुरा माहि जाइ देखइ तउ बेउं रा धड पडीया दीठा ।

तरइ अस्त्री विचारीयो । इयां बिहु री कलक [3]मोनू आवइ[3] जउ हूं न मरू तउ ।

इसो जाणि स्त्री पिण [4]कमल-पूजा करिण[4] लागी । तरइ माताजी हाथ झालीयउ । बेटी[5] हू [6]थारइ साहस करि तूठी[6] । वर मांगि[7] । ताहरा स्त्री वर मांगीयौ । [8]अइ बेउं जीवाडौ[8] । तरइ माताजी कहीयौ । तीन ताला हु द्यु जितरइ आपो आपरो मस्तक धड उपरा जोडि ।

तरइ स्त्री उतावली चूकि । भर्त्तार रो मस्तक मित्र रइ धड जोडीयो । मित्र रो मस्तक भर्त्तार रा धड ऊपरि जोडीयो । तरइ बेउ बइठा सजीव हुवा । माहो माहि वाद लागौ । देवी अदृष्ट हुई । झगडौ करइ । एक कहै स्त्री हु लेईस[9] । बीजौ कहै हू लेईस ।

तरै वैताल बोलीयौ । महाराजा[10] । तूं वडो विक्रमादित्य न्याव कीजइ । स्त्री कुणै नू आवै । तरइ राजा दूहो कह्यौ ।

[दूहो]

उषधीयां अमृत अधिक, सब पांने पांनीय ।
सुषं नीद्र भोगै[11] स्त्रीया, गात्रे मस्तक कीय* ॥२

पाठान्तर—

१. ग मार्‌यो छै । २. ख दोनु, ग. दोनु । ३ ग. माहरै माथै आवसी । ४. ख गलो काटण, ग. माथो काटवा । ५. ग. बेटा । ६. ख. मागि तुठी । तु मर मती । ७ ख. ग. मांग । ८. ख. ए दोनु जीवै, ग दोनु नै जीवाडो । ९. ख लैस, ग. लेस्यु । १०. ग. राजा । ११. ख. भोगी ।

---

* पत्र सं० ९ का क भाग पूर्ण हुआ ।

वार्त्ता

अर्थात्[1] जीयैरइ[2] सिर तिणरी त्रीया[3] । इतरौ राजा रा मुख थी सुणि मडो सीसम री डाल जाइ लागो । तरै राजा फिर जाइ मडो ऊतार ले आयौ ।

इति श्री वैताल पचीसी री छठी कथा जाणवी[4] ।६

पाठान्तर—

१. ख इणारो अर्थं उ (ग ओ) छै। २ ख ग जिणारो। ख ग आगे यह पाठ है—मस्तक समीप (ग. लारै) च्यार इद्री। आख १, नाक २, कान ३, रसना ४ (ग. मुख ४)। तिण वास्तै मस्तक उत्तमांग नांम (ग तिणसु माथा नै आवै) सरीर इकेंद्री छै (ग डील लारै एक इद्री छै) माथै साटै ऽस्त्री आवै। ४. ग. संपूर्णम्।

वैताल-पचीसी री सातमी कथा

वले मारग चालतां वैताल बोलीयउ[1]। राजा सांभलि। चंपावती नांम नगरी। तेथ चंपकेश्वरि[2] राजा भुवनसुंदरी बेटी[3] वर प्राप्ति हुई।

तरइ राजा कहीयो। स्वयवरा मंडप रचीजइ। बेटी योग्य वर आंणीजइ[4]। बेटी ६४ कला री जांण [कार] छइ। चतुर छइ।

[दूहा][5]

कह्यो करइ गुरजन तणो, लजा सहित विवेक।
धीरज अरु गभीरता, उत्तम पुत्री एक ॥१
तेरइ वर कारण चिंतवि, पूछी जांणी जाम।
पृथवी रा राजा सकल, कहि सभलाया तांम ॥२

वार्त्ता

सांभलि भुवनसुंदरी[6]। पिताजी हूं क्युं ही न जाणूं। जीयइ मइ तीन गुण होइ तिको वर देष आंणउ[7]।

ताहरां रांणी राजा बैसि प्रतीत रा मांणस[8] मेल्हि गुण पूछाया। स्वयंबरा मडप माहै राजवी सर्व छइ। कुवरा रा गुण छइ सु दिषावौ।

तरै राजपुत्र एकण कहीयौ। मो मइ वडौ[9] गुण छइ। मइ[10] सीषीयो छइ। एकइ दिहाडइ[11] पछेवडी ५ वणू नीपजावू। एक देवता

पाठान्तर—

१. ख बोलीयो, ग कहतो हुवो। २ ख चपकेस्वर, ग. चपकेसर। ३ ख ग. पुत्री। ४. ख. ग आणीजे। ५ ख. ग मे आगे यह दूहा है—

रूप चतुरता माधुरी, साभाविक (ग. सुभाविक) गुण एह।
मृदु भापण स्थिर (ग. थिर) भाषणी, विना चपलता देह॥

६ ग त्रिभुवनसुदरी। ७ ख आणो, ग आणजो। ८. ग. आदमी। ९. ग. मोटो। १० ख मैं, ग मैं। ११. ख. दिन, ग दिहाडा मै।

नू चढावूं। बीजी व्राह्मण नू द्यू। तीजो बेर[1] नूं द्यूं। चौथी आंपणै कांम लगाऊं। पांचमी वेचि पांन षाऊं।

एकणि[2] कहीयौ मैं बहुत शास्त्र पढीया छइ। तीजैं कहीयौ। पसु पषो देस देश की भाषा समझू। चोथइ[3] कहीयो। मो सरीषउ बल किण ही मइ नही। महाबलवत छुं। इम कह्यौ।

हमइ राजा कह्यौ। बेटी[4] तौनुं रुचे सुं कहि[5]। पुत्री लाजतो न बोली। तरइ[6] वैताल बोलीयो। महाराज [7]गुणी तौ सगलाई छइ[7]। पिण भुवनसुंदरी[8] कुणै नू दीजइ।

तरइ विक्रम बोलीयो। बलवत पुरुष नै दीजै। वैताल बोलीयौ। बीजा क्यु निषेधीया[9]। राजा कह्यौ। पट[10] वर्णं सु सूद्र रौ आचार। सास्त्र पढीयो सु व्राह्मण रौ आचार। भाषा समझै सु वैश्य कहीजै[11]। बलवंत क्षत्री कहीजै। तीयइ कारण क्षत्री परणी। वीवाह कर परणाई।

एतौ राजा रो कह्यौ सांभलि[12] वैताल[13] सीसम री डाल जाइ विलगौ। तरइ राजा फिरि जाइ ऊतारि ले [14]आवतो हुवौ[14]।

इति श्री वैताल पचीसी री कथा सातमी कही[15]।७

पाठान्तर—

१. ग. स्त्री। २. ख. बीजो राजपूत्र, ग. एकरण राजाकुवर। ३. ख चौथो, ग. चोथो। ४. ग. पुत्री। ५. ग. वर वरो। ६. ग. हिवै। ७. ख. गुणवत सगला छै, ग. गुण तो बराबर छै। ८. ग. त्रिभुवनसुंदरी। ९. ख. निषेध कीया। १०. ग. कपड़ो। ११. ख. रो आचार। १२. ख. सांभल, ग. सुण। १३. ग. मडो। १४. ख. हालीयो, ग. चाल्यो। १५. ग. सपूर्णंम्।

वैताल पचीसी री आठमी कथा

मारगइ चालतां वैताल बोलीयो[1]। कुसमावती नगरी गुणाधिप[2] राजा। तीयै री चाकरी करण नुं एक राजपुत्र दश मांणस साथै ले आयो। नित्य मुजरो करण जाइ पिण मुजरौ न पावै।

इयुं करतां वरस वितीत हूवो। [3]षरच निषूट गयौ[3]। तरै ऊवइ रा चाकर छोड़ि ग*या। रजपूत एकाएकी[4] रहीयो।

तरइ एक दिन राजा आहेडै[5] चढ़ियो हूंतउ। ताहरां वांसै घोडै रे लागौ[6] आयो। [7]वीजा सर्व तूटि रह्या[7]। राज[ा] मार्ग भूलि गयो। त्रिषा लागी। चिंतातुर हुवउ। तव देषइ तउ एक रजपूत आवइ[8] छै।

राजा पूछीयो[9] तुं कुंण छइ। रजपूत तीन तसलीम[10] कीधी। पछै कहण लागौ। महाराज हूं चाकर रहण आयो हुंतो। वरस दिन तांई रह्यो पिण मुजरो न पायो। [11]षरच हुतो सु षायो[11]। चाकर नफर छोडि गया।

राजा बोलीयो। तइ[12] बहुत दुष पायौ। राजपूत बोलीयो।

दूहा

वांछित जो [13]नाहि न लभ्यहइ[13], प्रभ कुं दोस न देइ[14]।
जउ घूघू देखइ नही, सूरिज कहा करेइ[15] ॥१

पाठान्तर—

१ ख. कहै राजा सुणो, ग. कही छै राजा साभल। २. ख गुणाधिपति। ३. ग. षरचो पूटी। ४. ख. एकाएक, ग एकाकी। ५ ख. सिकार। ६. ख. समीप। ७. ख. वीजो साथ सगलो रहि गयो। ८ ख ग आवे। ९ ख. पूछीयो, ग. पूछीयो। १०. ख. सिलाम, ग सलाम। ११. ख षरचो हुती सो षाधी ग. सर्व पुटी। १२ ख. तो ते ग थे। १३. ख. लाभे नही। १४. ख. ग. देह। १५ ख. ग. करेह।

---

* पत्र सं ९ का ख भाग पूर्ण।

राजा-वाक्यं

आयु विभव विद्या मरण, उदर भूति[1] ए पंच ।
सिरजे सिरजनहार सब, गर्भ मांहि जिय सच[2] ॥२
सेवा की सापुरिस की, निफल कदे न जाइ ।
कालंतर वीता वले, जब तव सहु भरिपाइ ॥३

वार्ता

राजा कह्यउ–तिस लागी, भुष लागी छइ । गांम कठै छइ ।

तरइ रजपूत दउड नै जोवण लागउ । जोवतां [3]पांणी निजर आयो[3] । अरु जांबू रउ रुंष फलीयउ छइ ।

ताहरां पांणी पीयो । फल षाधा । षुसी हूवा । तरै रजपूत कहइ । म्हारइ पूठइ[4] घोड़ो षड़ो । इम[5] साहस बंध नइ आवतां [6]जिके वांसइ[6] रहीया हुता तिके आइ मिलीया ।

सर्व साथ भेलो हुदो । तरइ राजा रजपूत री प्रसंसा कीधी । राजा घरे आयउ । रजपूत नूं सिरपाव दीयो । रोजगार करि नइ राखीयउ । उपगार मांनीयो[7] ।

पछइ[8] एक दिन रजपूत नदी री दिस जंगल गयो । तठइ देवी रो देहरउ[9] देषि मांहि जाइ दर्शन कीयो । तितरइ[10] एक नाइका[11] देवी री पूजा करि चली । रजपूत दीठो[12] । मन मइ घणी चाहि राखी । पिण उवइ मानीयो नही ।

पाठान्तर—

१. ख. वृति. ग. वृत । २. ख प्रति मे आगे यह पाठ है— 'रजपूत वाक्य' ३. ख. एकै ठोड पाणीं छैं, ग. एक ठिकाणें पांणी मिल्यो । ४. ख. पूठे, ग. पाछै । ५. ख. इये भांति, ग. इण भांत । ६. ख. पवास पासेवान पुठे । ७. आगे ख. ग. में यह सोरठीया दोहा है—

जिको करें उपगार, उह फिर तासो उपगरै ।
दोउ उतारण भार, उ रहै कारण भार को ॥ १

८. ख. एके समे, ग. हिवे । ९. ख. देहुरो, ग. देहरो । १०. ख. उण समय (ग. समै) ११. ख. नायिका, ग. नायका । १२. आगे यह पाठ है— ख. देषी मुरछावत हुयो, ग. मोहीत थयो ।

रजपूत राजा नूं आइ नाइका रा रूप री वात कही। ताहरा राजा कह्यो। 'प्रात समै[1] मोनूं ले जाइ दिषावउं[2]

तरइ बेऊ स्नांन करि माताजी रउ दर्शन करि बेठा। एतइ नाइका देवगना सी आइ पूजा कर चाली। तब राजा सेवक[3] सहित नजरि पड्यौ। राजा रो रूप देषि वोली। राज [4]आग्या द्यो सुं करूं[4]।

राजा कह्यो। म्हारौं चाकर छइ। तिण नू वरि। नाइका वोली। म्हारी प्रीत तोसु छै। राजा कह्यो। म्हारी आज्ञा छइ। इयइ नूं वरि।

तब राजा सेवक[5] नू परणाय आपणी[6] राजधानी आया। इतरी वात कहि वेताल बोलीयो। महाराज ईयां बिहुं माहि सचाधिक[7] कुण।

राजा कह्यो सेवक सचाधिक[8]। वेताल कह्यौ। राजा देवांगना सी* पाइ चाकर नू दीन्ही। सु सचाधिक क्युं न कह्यो।

विक्रम कहै छइ। सेवक पहिली उपगार कीयो[9]। अरु नाइका सुद्री[10] हती।

[दूहा]

कीयइ[11] ऊपर सब करै, उपगारे उपगार।
अण कीयइ[12] उपर करइ, सो सचाधिक सार ॥१

[वार्त्ता]

इतरी वात सुणाइ राजा रा मुप थी ऊतरि वइताल सीसम री डाल जाइ लागो[13]। राजा फिरि[14] कांधइ कर ले चल्यौ।

इति[15] श्री वइताल पचीसी री आठमी[3] कथा [16]पूरी हुई[16] ८ ॥

पाठान्तर—

१. ग. प्रभाते। २. ख. दिषाय, ग. दिपाले। ३. ग. राजपुत्र। ४. ग. हाजर छु। ५. ग. सेवग। ६. ख. ग आपरी। ७ ख. सत्याधिक, ग. सत्यवादि। ८. ख. सत्वाधिक, ग. सत्यवादि। ९. ख कीयो, ग. कीनो। १०. ग शूद्र। ११. ख. कीये, ग. कीय। १२. ख. कीयें। १३. ख. ग. विलगो। १४. ख. प्रति मे आगे यह पाठ है—"जाइ उतारि वैताल नु"। १५ ख वेताल पचीसी नी अष्टमी, ग वैताल पचीसी री आठमी कथा। १६. ग. सपूर्णम्।

*पत्र स० १० का क. भाग पूर्ण।

वैताल पचीसी री नवमी कथा

फिर वैताल नू [1]ले आवतां[1] राजा आगै वैताल कथा कहै छइ। सुणि[2] हो राजा।

मदनपुर नगर। मदनराइ राजा राज करइ। तीयरइ हिरण्यदत्त[3] वांणीयउ। तीयइरी बेटी कांमसेना सषीयां साथै सांवण री तीज षेलण[4] नुं बाहिर गई।

तेथ धर्मदास रो बेटउ सोमदत्त मित्र सहित ष्याल देषण नुं आयौ। तीयइ कांमसेना नू देषि कह्यौ। इसडी स्त्री जे होइ तउ जीवित[5] सफल।

इसो[6] चिंतवि रात्रि सूतौ। नीद न पडै। [7]कष्टइ करि प्रात लीयौ[7]। तरइ उठि ऊदास थकौ जंगल नूं गयौ। तेथि[8] दैवसंयोगइ कामसेना मिली[9]। ताहरां सोमदत्त कह्यौं। मोसू संभोग करइ[10] तउ हूं जीवू। नहीतरि तउ तो ऊपरि मरीसि। तौनूं हत्या[11] देईस। म्हारै कांम रो तीर कालिजइ मांहि लागउ छइ मरम ठोड। तीयै रौ उपचार पाटो तू छइ। तरै कामसेना दूहो कह्यौ।

[दूहो]

अद्‌भुत विद्या काम री, छोडइ तीर अनेक।
घाव न दीसै तन किहू, करइ कालिजइ छेक ॥१

वार्त्ता

इतरौ सुणि कामसेना कहण लागी। हू कवारी[12] छु। कवारी

पाठान्तर—

१. ख. ल्यावतां। २. ख साभलो, ग. साभल। ३ ग. हिरणदत्त। ४ ख. रमण। ५. ख. जीव, ग जिवतव्य। ६. ख इसो, ग. इम। ७. ग. घणां कष्ट सुं रात्र वोलाई। ८. ग. तठै। ९. ग साहमी आई। १०. ख. ग. करिस। ११. ग. हित्या। १२. ख. कुमारी, ग. कुवारी।

रो पाप लागसी । हमारुं काई वात नह वइ । तू धीरज पकडे । म्हारो बोल छै । हुं परणीजिसि[1] तरइ पहिली तो आगइ आइसि । पछै धणी सुं रमिसि । पछइ[2] सोमदत्त कह्यौ । थारो व्याह कदि[3] हूसी । तरै कह्यो दिन पांच मैं हूसी[4] । तउ तूं सुस करि । ताहरां कामसेना सुंस करि घरि आई ।

सोमदत्त घरि गयौ । पछै पांचमइ दिन वीवाह हूवउ । तरै परणीज नई मालीयइ गई । ताहरां भर्त्तार आलिंगन[5] री तांई पकडी ।

तरै भर्त्तार नू कह्यो । मोनुं सुंस[6] छइ । अनइ सोमदत्त री वात सर्व भर्त्तार आगै कही ।

तरइ भर्त्तार कह्यौ । थे अबार[7] ही तुरत आभरण[8] पहिरीयां ही जाइ आवउ । ढील न करउ ।

तरइ कांमसेना मालीयै थी ऊतरी नइ सोमदत्त रइ घर नुं हालो[9] । विचै आवता चौरै पकडी । कह्यौ तू कुंण छै ? तरै कह्यौ हिरण्यदत्त री बेटी छुं । कांमसेना नांम । सोमदत्त पासि बोल री बाधी[10] जाऊं छुं ।

तरै चौर बोलीयो । इसडो[11] बोल थारो छै तो मोसुं[12] बोल करि जा नही तउ आभरण ऊतारि लेईस । ताहरा* चोर सू पिण बोल दे आगै गइ ।

पाठान्तर—

१. ख परणीजीस, ग. परण सु । २ ग. तरै । ३. ग. कद । ४. ख. हुंसी, ग. होसी । ५ ख. आदि व्योहार, ग. आलिगन व्यवहारादिक । ६. ख. सोस ग. पण । ७. ख मवाष्ट, ग. हमारीज । ८. ग. गैहणा शृगार । ९. ख. गई, ग. चाली । १०. ग प्रति मे आगे यह पाठ है—"भर्तार कनै शीख माग नै । ११ ख. इसो, ग इसो । १२. ख मोसो ।

---

*पत्र स० १० का ख भाग सपूर्ण ।

सोमदत्त बैठौ हुतो । जाइ उभी रही । तरै सोमदत्त कह्यौ । 'इयइ वेला[1] कुण छइ । तरै कह्यौ । हुं कामसेना छुं । में तोनुं[2] बोल दीयो हुतौ । तिका आज परणी छुं । पहिली[3] तो कन्हे आई छुं । म्हारौ वचन हुंतौ ।

तरइ कह्यौ । सावासि तोनुं । तइ थारउ भलो बोल पालियो । वले साबासि थारइ भर्त्तार नुं । इसडो साहस कीयो । तोनुं अठै मेल्ही छइ । हु पिण हमारुं म्हारी अस्त्री सुं भोग संयोग करि नै बैठो छुं । अस्त्री पिण बईठी छइ ।

तरइ कांमसेना नुं मालीयै माहै बुलाइ नै कह्यौ । तू म्हारै धर्म बहिन छइ । तरइ वेस ग्रहणौ माला पहिराइ नइ सीष दीन्ही ।

तरइ उठा थी [4]नीसर नइ[4] चोर पासि आई उभी रही । चोर पूछीयो । तोसु कासुं कीयो । तरै [5]साच बोली[5] । धर्मदत्त मोनुं [6]बहिन कर[6] वैस ग्रहणौ दे नइ सीष दीनी ।

तरइ चोर देष नइ विचारीयो । इण रउ धणी[7] तउ इसडौ साहस कीयउ । आपरी अस्त्री [8]पर पुरुष कन्हइ[8] मेली । नइ ऊवइ रो धीरज[9] सराहीजइ । इसडो रूपवत माणस । तिण तु वस्त्र दे ग्रहणा दे बहिन करि मेली । तउ ईयइ नू षोसू तउ मोनुं धिक्कार[10] ।

इसउ[11] विचार करि कह्यउ । बाई तोनूं मइ[12] छोडी । तू बीहइ मती । हुं साथै हुइ नइ पहूचावु । तरइ चोर साथै हुंइ नइ मालीयइ[13] ताई पहुचाइ[14] आपरइ घरि[15] गयौ ।

पाठान्तर—

१. ख. इस वेला, ग. इस समै । २ ग. थानै । ३. ग प्रति मे आगे यह पाठ है—भर्त्तार कनैं सीष मांग । ४. ख नीसरि, ग. शीष कर चाली । ५. ग. उण साची बात सर्व कही । ६. ख. धर्म बहिन कहि, ग. बैहन कर बोलाई । ७. ख. भरतार, ग. भर्तार । ८. ख. परण बीजै पास, ग बीजा पाश । ९. ग. धीर्य । १०. ख. ग. धिकार । ११. ख. ग. इसो । १२. ख. मे. ग. मेह । १३ ख. मालीयें, ग. घर । १४. ख. ग. पोहचाय । १५. ख. घरे, ग. ठिकाणे ।

तरइ वइताल बोलीयो। (चोर क्युं सच्चाधिक) महाराज इयां तीनां माहे कुण सच्चाधिक।

विक्रम कहै छइ चोर सच्चाधिक। तरइ वैताल बोलीयो। चोर क्यु सच्चाधिक कहइ छै। भर्ता तो कामंध। अर ऊवै नुं सोस। बिजही[1] दिन सोमदत्त पासि विनां गयां आविसी[2] नही। तीयइ कारण तुरत मोकली। अरु सोमदत्त वीर्य विना हूवउ[3]। अनइ राजा रो डर पर[4] स्त्री सू रमीयां। तीयइ कारण छोडी। पिण चोर निकारण छोडी। तिण वास्तइ चोर सच्चाधिक[5]।

इसी[6] वात सुणि वइताल[7] नीसरि सीसम री डाल जाइ विलगउ। राजा फिरि जाइ वैताल नुं ऊतारि कांधइ ले आवतउ हूयउ।

इति श्रीवइताल[8] पचीसी री नवमी कथा कही॥

पाठान्तर—

१. ग. बीजेइ, ग. बीजै। २. ख. आवसी, ग. रैहसी। ३. ख. हुवो, ग. हुग्रो। ४ ग. पारको। ५. ग. सत्यवान हुवो। ६. ग. इतरी। ७. ग. मडो। ८. ख. वेताल, ग. वेताल।

वैताल पचीसी री दसमी कथा

फिर मार्ग्र[र्ग] [1]ले आवतां[1] वइताल बोलीयो[2] । राजा सांभलि । गौड देस रै विषइ पुन्यवर्द्धन नगर छइ । तेथ गुणसेषर राजा । तीयरइ अभयचद [3]वाणियो परधांन[3] । तीयइ राजा नू शिवधर्म हुंता जैनधर्म आंणीयो[4] । ताहरां प्रजा पिण जेनधर्म हूई ।

दूहा

जिसडौ होवइ राजवी, तिसी[5] प्रजा पिण होइ ।
जिण मारग राजा चलइ, तीयउ[6] चलइ सहु कोइ ।।१।।

ताह राजा सू चोर न डरइ । चोरी करइ । वाट[7] पाडिवा लागा । राज मा*हि उपद्रव होवण लागा । प्रजा षराब हुई । यूं करतां कालांतरेण राजा मृत [हुओ] ।

तीयरइ[8] पुत्र धर्म्मध्वजकुमार राजिपाट बैठो । तीयइ[9] रीस करि अभयचद परधांन नु पकडि लूटि षोसि देस बाहिर[10] काढीयउ अरु देश मांहि आपणी आंण[11] वरताई । चोर मारीया । दुष्टा नुं पकडि सजा दीनी । तरइ सर्व धर्म चलइ लागा । निकंटक राज करइ लागा । पूजा भागी हंती सु सर्व [12]करिवा लागा[12] ।

[13]एक समय[13] धर्मध्वज राजा जनांनौ करि सर्व रांणी साथि

पाठान्तर—

१. ख. माहि आवता, ग. मैं चालतां । २. ग बोलायो । ३ ख नामे साह परधान, ग प्रधान । ४. ख. आणीयो, ग. आंण्यो । ५. ख. तिसी, ग. तिसडो । ६. ख. तीये, ग तिणै । ७. ग मारग । ८. ग. तिण रै । ९. ख. ग. तिण । १०. ग. बारै । ११. ख. आण-दाण, ग. आंण-दान । १२. ख. चालण लागी, ग. हूवण लागी । १३. ख. एके समे, ग हिवै एक दिन ।

---

*पत्र स० ११ का क. भाग पूर्ण ।

ले नइ वागि गयो। तेथि जलक्रीडा करतां एक कमल सषी आंणि[1] रांणी चद्रावली रइ हाथ दीधउ। दैतां छिटक पगां ऊपरि पडीयउ[2]। [3]तीयइ सू[3] रांणी रा पग जपमीया मुरड पडी। बीजी रांणी रइ चंद्रमा रा किरण लागा तेथ[4] छाला हुवा। तीजी रांणी वागे माहे हुती। अर गांव माहे मूसल सूं धांन षांडतौ[5] सांभलि हाथ दूषण[6] लागा।

इतरी वात साभलि नइ वैताल राजा नू पूछीयउ[7]। इयां तिहूं रांण्यां माहे अति सुकमाल कुण।

राजा बोलीयो। जीयइ रा एथ[8] बैठी रा हाथ दूषीया तिका अति सुकमाल।

इसडी वात सुणि वैताल[9] उडि सीसम री डाल जाइ विलगो। राज फिर उथ जाइ उतारि कांधइ[10] करि ले आवतउ हूवउ[11]।

इति श्री वइताल पचीसी री दसमी कथा कही[12]। १०

पाठान्तर—

१ ग. घालीयो। २ ख. ग. पडीयो। ३ ख. तिणसी, ग. तिण सुं। ४. ख. [illegible], ग. [illegible]। ५. ख. पाछीजतो, ग. [illegible]। ६. ग. दुखवा। ७. ख. [illegible], ग. [illegible]। ८. ख. [illegible], ग. ठिकाणे। ९. ग. मडो। १०. ख. काधे। ११. ख. [illegible]। १२. ग. [illegible]।

वैताल पचीसी री ग्यारमी कथा

फेरि[1] राजा ले आवता बोलीयउ[2]। राजा साभलउ। रत्नाकर[3] नाम नगर। तेथ भल्लभ[4] नांम राजा अरु केसव नांम प्रधांन। भार्या लिषमी[5]। राजा मन मइ चितव्यउ। प्रियांगना सेती संभोग[6] सुष कोजइ। सोई जन्म रो फल।

दूहा

जीवीजै त्रीय कारणइ, और प्रयोजन नाहि।
त्रीया नहि अरु सेज[7] नहि, तो काहे भार मरांहि ॥१॥

वार्त्ता

तउ जब तांई त्रीया अरु तेज छइ तब तांई संग कर लीजइ। न करसी तउ पछतावसी। इसौ[9] विचार [कर] राजा परधान नुं राज सौंपि आप अतेउर[10] माहि पइठउ। राज री चिंता रहित हुवौ।

एक समइ[11] परधांन आंपणइ घरि बइठो हंतो अरु[12] स्त्री पूछीयौ। आज कालिह तौ थांहरौ [13]डील दुर्बल दीसइ[13]।

तरइ परधांन कह्यौ। राज्य री चिंता रहइ तीयै कारण दुर्बल छु। तरइ स्त्री कह्यौ। राजा सू वीनति करउ। तीर्थ-जात्रा चालौ तौ मास ४ चिंता थी छुटउं।

तरै राजा नू कह्यौ। तब राजा राज [14]बीजां नुं भलायो[14]। परधान नुं सीष दीनी।

पाठान्तर—

१. ख. फिर, ग. फेर। २. ख बोलीयो, ग. बोल्यो। ३. ख. रतनागर। ४. ख. ग. वलभ। ५. ख. ग. लक्ष्मी। ६. ग सगम। ७ ख. तेज, ग. नेह। ८. ग. जठां। ९. ख इसो, ग. इम। १० ख. मोहल, ग. अतेवर। ११. ख. समे, ग. दिन। १२. ख तिवारे, ग. तिवारै। १३ ख. डील दूरबल हुयो, ग. डीले दूबला हुआ। १४. ख. बिजे ना सोपा, ग. ओर नु सुप्यो।

तरइ आपरो साथ ले 'सेतबध रांमेसर' हालीयो[2] । उठै जाइ श्रीरांम लषमण सीता हनुमांनजी रो दर्शन करि बइठउ[3] । तठै समुद्र माहे एक कलपवृक्ष[4] ऊपरि रतनजडित साषा मोतीयां रा गोछा प्रवाली [5]पल्लव* तीयै ऊपरि सोनारइ पलिग ऊपरा[5] एक देवंगना दीठी । वीणा वजावती [6]दूहा पढती दीठी[6] ।

दूहा

पृथी मइ[7] मांनव ऊपजी, कीयौ न त्रीय[8] विलास ।
सो पाछै पछतावसी, मरतौं लेहि[9] ऊसास ॥१॥
[10]सार देवी[10] जगत सहु, सुर नर दैत तिर्यंच[11] ।
तिण कारण लसरो सवइ, जो चाहउ महि मच[12] ॥२॥
पुव्वै[13] जांणी जालीया, अर नहि जांणी जांह ।
वइ विलसइ घन कांमनी, बाया[14] वैरागो मांहि ॥३॥

वार्त्ता

तीन दूहा कहि जल मांहि अलोप हुई । इसो तमासो अंधारी चवदिस हूंती तिण दिन मत्री दीठो ।

कितराएक दिन मुहतो तीर्थ करि घरि आयो । राजा सूं[15] मिलीयौ । राजा पूछीयो । कठइ ही तमासो दीठउ ।

मत्री कह्यौ एक अजरिज[16] दीठो । अंधारी चवदिस एक कलप-वृक्ष री साषा दरीयाव सू बाहरि आवइ छइ तठे देवंगना दीठी । सर्व सरूप दीठउ । तिसडउ राजा नू कह्यउ[17] ।

पाठान्तर—

१. ख. ग स्वेतवध रामेस्वर । २. ख. ग गयो । ३. ख. वेठो, ग वैठो । ४. ख. कलपवृप सोने पिलग । ५. ख. प्रति मे यह पाठ नही है । ६. २ राग रग करती । ७ ख. मे, ग मैं । ८ ख. त्रीया, ग. त्रिया । ९. ख लहे, ग. लहउ । १०. ख सारे दीवी, ग. सौहै देवी । ११ ख. त्रिजच, ग. तिरजच । १२. ग. संच । १३ ख. पूछे, ग. पूजो । १४. ख वीया । १५ सो, ग. सु । १६. ख. अचरिज, ग. तामासो । १७. ख. कहि सुणायो ।

---

* पत्र सं. ११ का ख भाग पूर्ण ।

तरइ राजा सांभलि आपरो राज [1]मुंहतां परधान[1] नुं भलाइ सेतबंध रांमेसर फरसण नुं हालीयो[2] । तठइ जाइ तीर्थयात्रा करि द्रव्य षरच बइठा छइ ।

तिसडै[3] नाइका सहित कल्पवृक्ष [4]बाहिर आयो समुद्र थी[4] । तीयै ऊपरा देवंगना सी बइठी देषि । राजा जाइ कन्हइ [5]उभउ रह्यउ ।

तरइ देवंगना पूछीयौ । केथ आईस । राजा कह्यो । [6]तो पासि आईस[6] । नाइका बोली । हूं तो कवारी छुं । अंधारी चवदिस मोनू बकसो[7] तो परणीजूं ।

राजा ऊवइ रउ कह्यउ करि परणी । पछइ अंधारी चवदिस आई । तरइ स्त्री बोली मोसू दूर[8] रहिज्यौ[9] ।

तिसडइ एक राप्यस आयौ । स्त्री रो हाथ झालि[10] कांमचेष्टा करण लागउ । तरइ राजा बोलीयउ । रे पापिष्ट राप्यस मो जीवतां तू भोगवि सकइ नही । मोसू संग्राम करि ।

इसौ वचन सांभलि[11] राक्षस राजा [12]नइ मारण धायो[12] । राजा खड्ग काढि राप्यस [13]नइ मारीयो[13] । राक्षस मूअउ । रांणी देषि कह्यौ । धन्य धन्य हो सुभट । मोसूं वडो उपगार कीयो[14] । म्हारै वडौ कलक हुंतो सु तइ दूरि कीयौ ।

दूहा

गिर गिर हीरा होइ[15]नही, गज गज मोती नांहि ।
वन वन चदन होइ नहीं, सुभट न हूइ सब ठांहि ॥१॥

पाठान्तर—

१. ख. ग मन्त्रीश्वर । २. ग. चाल्या । परणीजण रो मनोरथ करनै चाल्या । ३. ख. उण संमै, ग. तिण समै । ४. ख ग. समुद्र थी बाहिर आयो । ५. स. पास, ग. पासै । ६. ग. दूर देशातर थी थां पासै आयां छा । ७. ख ग. बगसो । ८. ख. दूरि, ग. अलगो । ९. ख. प्रति मे आगे यह पाठ है—'तब राजा षड्ग लै प्रदिष्ट थको समीप रह्यो ।' १०. ख. झाल, ग. पकड़ । ११. ग. सुण । १२. ख. साहमो हूवो, ग. साहमो आयो । १३. ख. रो मस्तक छेद्यो, ग. रो मस्तक काट्यो । १४. ख. कीयो, ग. कीधो । १५. ख. न्है ।

वार्त्ता

राजा कह्यौ। किसइ[1] कारण काली चवदिस तोनइ राक्षस लागइ। रांणी कहइ छइ। हुं सुरसुंदरी नांम विद्याधरी। सो म्हारौ पिता मो विना [2]भोजन करइ[2] नही।

एक दिन अंधारी चवदिस हूती। हुं भोजनवेला हाजरि न हुई। ताहरां मोनू सराप दीयउ। काली चवदिस तोनू राक्षसि[3] लागसी। तरइ मइ कह्यो। म्हारो सराप [4]मोक्ष कदि होसी[4]। तब पिता कह्यो तोनुं मनुक्ष[5] परण राक्षस नुं मारसी तद सराप पूरो होसी। [6]ति*को तिम हीज हूवौ[6]। राष्यस मारीयो। हमइ[7] म्हारा पिता कन्है जावां[8]।

तरै राजा कह्यौ। म्हारौ कहीयौ करो तउ म्हारो नगर राजधांनी देष नइ [9]पछइ पीहर जास्यां[9]।

तरइ राजा आपणी राजधांनी आइ षबरि दीधी। तरै मुंहतै हाट बाजार सिणगारीयौ। [10]बत्रीस बद्ध नाटक रच्या[10]। गाजा वाजा करि मूहव स्त्री गीत गावतां वर बेहडो कुंभ कलस वंदाइ राजा नुं माहै लीयो।

राजा आइ सुष भोगविवा लागउ। [11]ति वारइ[11] कितराएक दिन वितीत हूवा। तरै रांणी राजा नू कह्यौ। [12]पिता रइ[12] जाईस। राजा कह्यौ थांहरइ दाइ त्युं करो।

रांणी आंपणो परिग्रह [13]ले विद्या संभाली। विद्या फुरी नही। तरइ राजा पूछीयो। क्युं विद्या फुरी नही।

पाठान्तर—

१. ख. किम, ग. किण। २ ग. जीमतो। ३. ख राष्यस, ग. राक्षस। ४ ख. कदि मोष्य हुसी, ग कद उतरसी। ५. ख ग. मनुष्य। ६. ख ग. तिका (ग ते) वात साची हुई। ७. ग. हिवै। ८. ख. ग. चालो। ९. ख पछै थारे पिहर जासां, ग पछै आपै साथे जावसां। १०. ग अनै घर २ रंग वधामणा हुआ। ११. ग. इम सुख विलसता। १२. ख. ग. पीहर। १२ ग. परिवार।

---

* पत्र सं० १२ का क. भाग पूर्ण।

तरइ रांणी कह्यो हुं विद्याधरी हुंती अरु मनुष्य सुं 'आसक्त हुई' तीयइ कारण विद्या फुरी नही। (तरइ राजा पूछीयौ क्युं विद्या फुरी नही।)

तरै राजा मन मैं हर्षित[2] हुवौ जो म्हारइ विद्याधरी स्त्री। बीजइ घरि मनुष्य रइ विद्याधरो नही। इसौ जांणि सैदांना[3] वजाया। नोबत नगारा वजाइ महोच्छव कीयो। तीयइ महोच्छव करतां मुंहतउ[4] हीयो फूट मूअउ।

दूहा

क्षमावंत आचारसुध, जांणइ सास्त्रविचार।
ततवेता अरु उद्यमी, दाता श्रीमंत सार ॥१

सत्यवादी इंद्रीदमन, उपगारी मतिवंत।
इसौ मंत्र[5] कहां पाईयइ, मन वच क्रम करि संत ॥२

वैताल वात कहि पूछीयो। महाराजा विक्रमादीत प्रधान किसै कारण मूंअउ[6]।

तरइ राजा कह्यौ। मंत्री 'असहमांन थकउ' मूअउ। जउ राजा रइ घरि विद्याधरी आई। राजा ईयइ सुं स[सु]ष भोगवस्यैं। मुंहतइ देवंगना रो रूप दीठउ हूतौ। तिणइ सह्यौ[8] न गयौ। अनइ अर्द्ध राजीयो हुंतो। तियइ कारण मूयउ।

इसौ वात सांभलि वइताल[9] पाछौ जाइ सीसम री डाल जाइ लागउ[10]। तरइ राजा फिर जाइ ऊतारि ले आवतउ हूअउ।

इति श्री वइताल पचीसी री कथा इग्यारमो[11]।

पाठान्तर—

१. ग. भोग कीयो। २. ग. पुस्याल। ३. ख. साद्यना, ग. नगारा। ४. ख. मंत्री, ग. मंत्रीशर। ५. ख मन्त्रि। ६. ख मूंवउ, ग. मूवो। ७. ग. अकिस्मात। ८. ग. सेहणी। ९. ग. मडो। १०. ख. विलगो, ग. टंगो। ११. ग. सपूर्णम्।

वैताल पचीसी री बारमी कथा

'राजा मार्ग्र[र्ग] रइ विषइ ले आवतउ हूंतउ'[1]। वैताल बोलीयो। सांभलि हो राजा।

चोडापुर[2] नगर। तेथ छत्रमणि राजा। तीयरइ देवस्वामि[3] नांम पुरोहित। पिण किसडो छै।

दूहा

रूप जिसो मनमथ हुवइ[4], वांणी वृस्पतिवार[5]।
द्रव्य कुबेर जिसो करी[6], ज्ञानी जोवन सार॥१

तीयइ किणही ब्राह्मण री बेटी तारालोचनी परणी। तीयां[7] बिहूं मांहि प्रीत अधिक हूई। एकद उस्नकाल[8] मालीयै रइ चउक चांदणी रा विछावणा करि सूता। वसत्र दूरि कीया छइ गरमी रइ वासतै। तिण समै एक विद्याधर आकासगामी तारालोचनी नागी[9] देषि ऊठाइ ले गयौ। पछै देवस्वामि[10] जागि नइ देषइ तौ* स्त्री नही। अर्द्ध रात्रि समय घर सोधि दीठी नही।

प्रात हूवौ तब ढढेरो दिवरायो[11]। नगर सारो ही सोझीयो[12] पिण लाधी नही। तरै स्त्री रो वियोग सह्यो न जाइ। तरै घर थी नीकलि विलाप करण लागउ। हे प्रिये केथि गई। मोनुं दर्शन दै। हे प्रिये जो पवन थारी देही लाग नइ म्हारै शरीर लागै छइ तीयइ सो सजीवइ छइ।

पाठान्तर—

१. ख. मोरग चालता। २. ख. चडपुर. ग. चद्रपुर। ३. ग. देवसर्मा। ४. ख. हुवै, ग. हूवै। ५ ख. ग. गुरूवार। ६. ख. ग. कहै। ७, ख. ग. तिण। ८. ख. ग. ग्रीष्म रित। ९. ख वस्त्रहीन, ग. नग्न। १०. ग. देवशर्मा। ११. ख. दिवाइ, ग. फेरायो। १२. ख. दीठौ. ग, जोयो।

---

*पत्र सं० १२ का ख भाग पूर्ण।

दूहो

वर्षाकाले हल्लणा[1], योवन[2] समय[3] वियोग ।
वृद्धावस्था वैखरच, तीन दुष महा सोग[4] ॥१
एहु इवडी अवछडो[5] , कै मालीयइ कि वृक्ष ।
कइ करिनो[6] तन वोदणी, कइ करि माला अक्ष ॥२

अइसो[7] विचार तापस[8] [9]रो वेस करि देवस्वामि[9] देसांतर गयौ । तेथ मध्यान समइ मार्ग्र(र्ग) चालतां पलास रा पांनां रो पुडीयौ करि ब्राह्मण रइ घरि जाइ भिक्षा मांगी । देवस्वामि[10] विचार करइ छै ।

दूहो

पूर्व जन्म नाना कीयो, मांगित[11] आयौ गेहि ।
इयइ जन्म तो सुषीयो, घोषि लीयो देहि ॥१
सौ मइ विरलौ सूरिमो, सहस[12] पंडित होइ ।
कहणो सात सईकडां, पिण दाता व्है[13] कि न होइ ॥२

वार्त्ता

ब्राह्मण री स्त्री गुणवंत जाणि तीयै रो पुडीयो क्षीर षांड घृत सेती भरि दीयो । सो भिक्षा ले[14] तलाव गयौ । तेथ[15] वड री छाडी पुडीयो मेल्हि आप स्नान करण री तांई गयो ।

वांसइ कालइ सर्प नीसरि[16] मुष पसारीयो । नीचइ पुडीयो हुंतौ तीयइ मांहि गरल सपडीयौ हुंतो । ब्राह्मण आइ अग्यांन थी षीर षाई । घडी एक पछइ ब्राह्मण नू लहरि वाजी ।

तरइ घूमतो घूमतउ ब्राह्मणी[17] रइ घरि जाइ पडीयो अरु कहीयो । तइ मोनु विष च्यूं दीनौ ।

पाठान्तर—

१. ख. चालणो, ग. हालणो । २. ख. जोवन, ग जोबन । ३. ख समे । ४. ख. ग. रोग । ५. ख अवथडो । ६. ख. करणो, ग. करनो । ७ ख. इसौ, ग. इसो । ८. ख. ग. तपसी । ९. ग. होय । १०. ग. देवसर्मा । ११. ख. मगत, ग मांगवत । १२. ग. सहजै । १३. ख. होय, ग. होवे । १४. ख. लें. ग ले ने । १५. ख. ग. तठें । १६. ख. प्रति में आगे "दोनें उपर" पाठ है । १७. ख. ब्राह्मण, ग. बाभण ।

इसो कह्यां थकां लोक भेला हूवा । लौकै दोठउ ब्राह्मण मूग्रउ । तरइ ब्राह्मण अस्त्री नुं हत्यारी कहि घर हुंतो 'परही काढी'[1] ।

तरै वइताल[2] कहीयो राजा नुं ब्राह्मण री पाप कुणैनु[3] । राजा कहीयौ सर्प्प[4] रई[5] मुषि[6] तौ विष सदा रहई । तीयई नू काहिण री पाप । ब्राह्मणी भिष्या भक्ति कर दीनी । तिण नू पाप को नही । ब्राह्मण अज्ञान थी षायउ । तीयै नू पाप नही । जिको अण विचारीयो कहइ तीयई[7] नु पाप ।

इसा वचन राजा रा सुणि वैताल[8] जाई सीसम री डाल जाई लागउ । फिर राजा जाई ऊतारि [9]ले आवतऊ हूयउ[9] ।

इति श्रीवैताल पचीसी री कथा बारमी कही[10] १२॥

पाठान्तर—

१. ख. काढ दीवी, ग. बाहिर काढि । २. ख. वेताल, ग. वैताल । ३. ग. किण नुं । ४. ख. ग. सर्प । ५ ख. ग. रै । ६. ख. ग. मुख । ७ ख. ग. तिण । ८. ग. मडो । ९. काधे कर हालीयो । १०. ग. सम्पूर्णम् ।

वैताल पचीसी री तेरमी कथा

मारगै[1] चालतां वैताल कहइ छइ। राजा सांभलि। चंदेला नाम नगर। रिणधीर राजा। तीयै नगर मांहि चोरी बहुत होवण लागी। [2] दिन २[2] पुकार आवै।

राजा चिंता करि एक षोजी राषीयो जिको अधारइ षोज[3] काढइ। पांणी मइ षोज काढइ। वरस दिन सू षोज पिछाणइ[4]।

एकै दि*न आधी रात धर्म्म ध्वज[5] साह रै घरे चोर पइठौ[6]। ताहरा साह री बेटी सुक्षोभिता[7] नाम रांड हुई हुंती। घर बाहिर नीकलती न हुती। अर घर मांहि मरद को आवतो नही। अर चोर आयौ। तीयइ मरद जांण[8] कांमचेष्टा हुई[9]। चोर हाथ छोडाइ गहणा ले नाठउ।

(प्रभातइ[10] षबरि हूई।) रातै चोर नीकलण लागो तरइ सुक्षोभिता चोर रउ हाथ गहरीयउ। चोर जांणीयो मोनू पकडइ छइ। चोर हाथ छोडाइ गहणा ले नाठो। अस्त्री रो मनोरथ मन मइ रहीयउ। जांणीयउ इणसुं काम सेवा करुं। पिण नीकलि गयउ।

तरइ चोर री षबर हूई। पछइ प्रभातइ साह रावलइ पुकारीयउ[11]। तरइ राजा कोटवाल नू कह्यौ। षोजी ले जावौ। चोर

पाठान्तर—

१. ख. मारग। २. ख. ग. नित्य। ३. ग. पग। ४. ख. पिछाणै। ५. ख. ग. धर्मध्वज। ६. ख. घुसीयौ, ग. चोरी कीधी। ७. ख. सुषोभता। ८. ख. ग. नु देषि। ९. ख. प्रति मे आगे यह पाठ है—"चोर जाणियौ मोनु पकडै छै"। १०. ख. प्रभात, ग. प्रभाते। ११. ख. पुकारीयौ, ग. पुकारयो। १२. ख. ना तेडाय, ग. ने तेड ने।

---

*पत्र सं० १३ का क. भाग पूर्ण।

नुं [1]जीवतउ ले आवौ पकड नइ[1]। घणी चोरी कीधी छइ। इयइनुं कुमीच मारणो छइ[2]।

ताहरा राजा री हुकम पाइ कौटवाल षोजी नुं ले खोज काढतउ थकउ पग ले नइ चोर रइ घरि आयो। तरइ चोर नु बेटा बेटी अस्त्री माल सहित पकडीयो। पिण चौर जिसडो देसोत[3] हुवइ तिसडो दीसइ। महा रूपवंत। आंणि राजा रइ हजूर कीयौ।

राजा कहीयो। ईयइ नुं नगर मांहि[4] फेरि सूली द्यउ[5]। तरइ चौहटइ फेरतां २ धर्म्मध्वज साह [6]रइ वारणई[6] आया। तरई[7] साह री बेटी रूप देष नई सकाम हूई। छुटई तउ भलउ।

तरइ बाप[8] नुं कहीयउ। इयइ[9] चोर आंपणउ घर मुसीयउ। तीयइ वेई सूली दीजइ छइ सु अपराध तोनुं[10] छइ। कइ थे इण नूं छोडावौ। म्हारै सासरै रउ ग्रहणौ छइ। सु हुं दया करि देईस। [11]धर्म नइ[11] जस थानुं होसी।

इम पिता नु कहि चोर सू [12]निजर बाजी लगाई[12]। चौर साह री बेटी रउ विचार साभल नई कहइ।

दूहा

मूरष घरि लिषमी हुवइ[13], अरु विद्या अकुलीन।
महिला मांनइ नीच कुं, वरसइ मेंह गरीन[14] ॥१

जूवारी साच[15] न कहइ, काग पवित्र न होइ।
काम न त्रीय रो उपसमइ[16], राजा मित्र न होइ ॥२

पाठान्तर—

१. ख. जीवतो पकडजो। २. ख छै। ३ ख. दैसौत। ४. ख माहि, ग दोलो। ५ ख. द्यो, ग द्यो। ६ ख रे वारणे, ग. रा गर कनै। ७. ख. जो, ग. तिसै। ८. ख. साह, ग. पिता। ९ ख. ग. इण। १०. थानु। ११ ग. इण काम थी। १२. ख. नेत्र जोडोया। १३. ख हुवें, ग. हुवै। १४ ख गिरीन, ग गिरिण। १५. ख. सति, ग सत। १६ ख. ऊभमै।

ए दोइ दूहा कहि हसीयो अनै तुरत[1] रूनउ[2] ।

इतरी कथा कहि वैताल विक्रम नू पूछीयउ । चोर हसीयो अनइ रूंनउ क्युं[3] ।

विक्रमादीत बोलीयउ । हसीयो सो चोर जांणीयउ साहरी बेटी रंभा सरिषी म्हारइ आवसी । मोसुं [4]निजर लगाइ छइ[4] । आगइ पिण अस्त्री सषरी छइ । तरइ[5] दुइ स्त्री होसी । इसो मनोरथ करि हसीयो ।

नइ रूनउ क्युं । (राजा) चोर नु संकल्प विकल्प आयो । जो राजा न छोडसी तउ म्हारी वेऊं रांड हूसी ।

[6]इतरी कथा सुणि मडउ[6] सीसम री डाल जाइ लागउ[7] । राजा फिर जाइ मडो उतार ले आवतउ हूयउ ।

इति श्री वैताल प*चीसी री कथा तेरवीं कही[8] ।१३

पाठान्तर—

१. ख. ततकाल, ग. फेर । २. ख. रूनो, ग. रोयो । ३. ख. किसं वासतै, ग. किण कारणै । आगे ख. ग, प्रतियों मे यह पाठ है—'न कहिसो तो चोर री चोरी कीधी रो पाप लागसी ।' ४. ख. नेत्र जोडे छै । ५. ख ताहरा । ६. ख. इतरो वचन राजा रा मुष थी सांभल । ७ ख. विलगो, ग. टंग्यो । ८. सम्पूर्णम् ।

*पत्र स० १३ का ख. भाग पूर्ण ।

वैताल पचीसी री चवदमी कथा

मार्ग चालतां राजा नूं वैताल कह्यौ[1] सांभलि । कुसमावती नगरी । सुविचार नाम राजा । तीयरई[2] चंद्रप्रभा नाम पुत्री वर प्राप्ति हुई ।

[3]एक समइ षेलणी तीज आई[3] । अनै सषीयां साथि तीज षेलण गई । तेथ[4] एक ब्राह्मण युवांन सरूप दीठो । अर उवै राजकन्या दीठी । मांहो मांहि [5]प्रीत लागी[5] ।

पछै रमि षेलि नै विरह कर पीडित आंपणै आवासि गई अरु ब्राह्मण काम वसि होई तेथ ही पडीयौं । विसुद्ध[6] हुवौ । आपौ न संभालई ।

इतरइ शशिदेव मूलदेव आया । ब्राह्मण वेसुद्ध पडीयो देषि मूलदेव शशिदेव नूं कह्यौ । देषो ब्राह्मण री अवस्था । तरै शशिदेव दूहौ कह्यो ।

[दूहा]

तब लग वस[7] विवेक हिय, सास्त्र थकी सुख चइन[8] ।
नैण बांण मृगलोचनी, लगइ न जब लग मइन[9] ।।१
[10]तांम सयानप ताम कूण, तप जप सजम तास ।
वंक तिरछे लोइनां, नइन निरषै जांम [स][10] ।।२

वार्त्ता

मूलदेव पडीयइ[11] नुं पूछीयो । रे ब्राह्मण थारी कउण अवस्था । ब्राह्मण [12]कहइ छइ[12] ।

पाठान्तर—

१. ख. बोलीयो, ग. बोल्यो । २. ख. ग. तिणरे । ३. ख. श्रावण री तीज, ग. एक श्रावण रो महीनो तीज रो दिहाडो छै । ४. ख. ग. तठे । ५. ग. राग हूवो । ६. ख. विसुध, ग. अचेत । ७. ख. ग, वसे । ८. ख. ग. चेन । ९. ख. नैंन, ग. नेन । १०. ग. प्रति में नहीं है । ११. ख. पडीये, ग. पडोया थका । १२. ख. कहे छै ।

[दूहा]

दुरक[1] [ष] तिहां परकासीइं जो दुख[ष] भजाख समच्छ ।[2]
यह रोवइ वह रोइ ग्रइ, कौण प्रकासइ तच्छ[3] ॥१

[वार्त्ता]

थारो दुष दूर करिस्युं[4] । मूलदेव इसो वचन ब्राह्मण नइ कह्यौ । ब्राह्मण कहइ छइ । मोनु कोई जीवाडइ[5] तौ सुविचार राजा री बेटी चद्रप्रभा मिलावइ[6] । कुवरइ वियोग हु मरू छुं ।

ताहरां मूलदेव कहीयो । तोनूं बहुत द्रव्य नइ ब्राह्मण री बेटी सुंदरी परणाऊं । तूं चंद्रप्रभा नुं [7]कासु करीस[7] ।

ब्राह्मण कहइ छइ ।

[दूहा]

दडो[8] राजा जन हसउ[9], पिष्यउ[10] बौलो कोउ ।
हू चितू[11] मन कीजई, ज भावइतं[12] होउं ॥१
स्त्री कारण धनम्र जीयइ, साजो त्रीया न होइ ।
तउ किह कारण धन सपदा, उह वइरागी होइ[13] ॥२

वार्ता

ताहरां मूलदेव कहीयउ । उठ ब्राह्मण तोनु मइ राजकन्या दीनी[14] । इतरउ कहि एक सिद्ध गुटिका ब्राह्मण नु दीनी । कह्यौ तूं मुष माहि राषि ।[15] तैयै सुं बारह वरस री रूपवंत कन्या हुई ।

पाठान्तर—

१. ख. ग दुष । २. ख. ग. समरथ । ३. ख. ग. तथ । ४. ख. करिसो, ग. क सु । ५. ख. जीवाडे, ग जीवावे । ६. ख. मिलावे, ग मेलवे । ७ ग. कांई करसी । ८. ख. ग. डडो । ९. ख. ग. हसो । १०. ख वकौन, ग पखोन । ११. ख. चितो, ग, चित्यो । १२. ख ग भावे । १३. ख. ग. प्रति मे आगे यह दूहे है—

सामल चीया प्रसाद ते, राजा अरु पतिसाह ।
रूप अधर कुच रग मोह, कीया बराबर ताह ॥३
भरीयौ अमृतकुड सौ, अरु सब सूख कठी रास ।
भिनधान संभोग कौ, त्रिया विराजे पास ॥४

१४. ख दीवी, ग. दीन्ही । १५. ख. राष, ग. राखन ।

तीयइ नुं हाथि पकडि राजद्वारि ले गयौ। राजा री हजूर जाइ आसीर्वाद दै बइठौं[1]। राजा पूछीयो। कठा आयो[2]।

तरै मूलदेव कहीयौ। गंगा परव सू। अर ईयइ देस बेटौ परणायो हूंतौ। तीयरइ मुकलावइ नू स्त्री पुत्र सहित आया हूंता। सगइ दिन दस राषि भली भांत मुकलावउ कीयौ[3]। ताहरां[4] मुकलावउ ले आवतां राति री धाडि पडी। असबाब चोर ले गया। बेटो किथे[5] गयो। [6]वैर किथै[6] गई। बेटा री वहू नुं ले नगर मइ[7] आयौ। एथ इसडी ठौड बीजी काई नही जठै १२ वरस* री वहू नुं मेलि स्त्री-पुत्र री षबर करूं। तरंइ [8]राज कन्हइ[8] आयौ। सु महाराज ईयइ वहू नुं दिन २[9] राषइ। ज्युं म्हारी वहु बेटा री षबर[10] करु।

तरइ[11] राजा बेटी नुं कहीयौ। मूलदेव री बेटा री वहू छै। इण नू दिहाडा २ तो कन्है सुवाणै। भोजन मागै सु देई। सोहरी राषै[12]। पछै आय लैसी।

तहरां राजा री आग्या सेती राजकन्या ब्राह्मण-वधू रो हाथ झालि[13] भीतर ले गई। तेथ मेवा मिष्टान षायइ पी नै सुषै दिन वितीत करि रात्रि समय नू एकइ सिय्या[14] सूती।

माहो माहि वार्त्ता करतां ब्राह्मण-वधू पूछीयो। तूं राजकन्या। तौनुं किसौ सोच छइ। तूं उदास रहै सु किसै वास्तै।

ताहरां[15] राजकन्या कह्यौ। म्हारा मन री वात [16]कहण योग्य[16]

पाठान्तर—

१. ख. वेठौ, ग वेठो। २ ख. ग.-सु आयो। ३. ग. दीयो। ४. ख. तब, ग. तरै। ५. ख. कठे। ६ ऽस्त्री कठे। ७. ख. माहि, ग. माहे। ८. ख. ग. इण ठोड। ९. ख. दोइ, ग. वे। १०. ग. वीगं। ११. ख. ताहरां, ग. तिवारै। १२. ख. रापे, ग. राखजे। १३. ख. पकड, ग. पकड नै। १४. ख. सेझ्या, ग. ढोलीये। १५. ख. ताहरा, ग. तिवारै। १६. ग. कहीण जोगी।

---

*पत्र सं० १४ का क. भाग पूर्ण।

न छै। पिण तौनुं कहीस। जीयै नुं आंप पूछीजै तीयइ नुं आंपणी वात पण कहीजइ[1]।

राजकन्या कहै छइ। हूं सषीयां साथ तीज षेलण गई हूंती[2]। तैथ[3] एक ब्राह्मण रौ पुत्र[4] महा रूपवंत युवांन दीठउ। माहे माहि द्रिष्ट लागी। अरु ब्राह्मण उथ[5] ही रह्यौ। हूं तीज षेलनै आंपणै आवास आई तीयै[6] दिन थी मन ऊदास रहइ। किसूं कीजइ। राजा घरि जन्म अनइ "उवै रो" नांम स्थान गोत्र किऊ[8] ही न जांणू। उवइ[9] दिन सू म्हारी इसडी अवस्था हूई।

ताहरां ब्राह्मण-वधू बोली। उवै ब्राह्मण नु मेलु[10] तउ कासुं वधाई द्यइ। तरइ राजकन्या बोली। तउ थारी दासी सदा होऊ[11]।

ताहरां मूलदैव सिद्ध री गुटिका मुष [12]सु परही[12] काढी। तीस[13] वरस रो ब्राह्मण रूप प्रगट कीधउ। तिवारै रूप देष नै [14]लज्या कीधी[14]। मन संतोषाणउ। कांमभोग-विलास किया[15]।

दिन ऊगै गुटिका मुष माहै राषइ। कन्या-रूप दीसै। रातै पुरुष हुवइ। सिद्ध-गुटिका रै प्रभावइ मन-वछित सुष भोगवै। इम करतां राजकन्या नुं गर्भ[16] रहीयउ[17]।

एक दिन राजा मुहत[18] रै सपरवार निहतरीयौ[19]। तैथ जीमण नु गया हुंता। तठै मुहतै रइ बैटै ब्राह्मण-वधू दीठी। तरै पूछीयो। आ कुण[20]।

पाठान्तर—

१. ख ग. कहीजै। २ ख. ग. थो। ३. ख तठें, ग. तठै। ४. ग. बेटो। ५. ख. उरे। ६ ख तिण। ७. ख ग उणरो। ८. ख. क्यो। ९ ख. ग. उण। १०. ख. देखालू, ग. देखांउ। ११. ख रहूं, ग. रहसु। १२. ख. महा। १३ ख. २०, ग बीस। १४. ख. लाज सी आवी, ग. लाज आवी। १५ ख. प्रति मे आगे यह पाठ है—'जठे भावतो मिले तिण सुष रो कासू कहीजै।' १६. ग आधांन। १७. ख. ग. रह्यो। १८. ख. मत्री, ग. प्रधान। १९ ख. नहितरीयौ, ग. नैहतरीया। २०. ख. कोण, ग. कुण।

तरइ कहीयो । ब्राह्मण-वधू छइ । इणारो सुसरो मेल गयौ हुंतो[1] । राजा रै हुकम सेती राजकन्या राषै छइ ।

तरै मंत्री रइ बेटइ विचारीयो । हूं नही लेउं तो कोई बीजउ लेसी । [2]इसडी रूपवंत मांणस[2] कुण छोडै । अनै इणरै वासइ कोई नही । जो कोई हुवै तउ वि दिहाडा[3] कहि गया हूंता । वि मास हूवा । अनै इणरो सुसरो मुवौ[4] तो बीजौ उणनुं कोइ जांणै नही[5] ।

इसो विचार करि मित्र गोठा[6] बाप[7] नूं कहायौ । अनै इसडौ हठ झालीयौ[8] । का तौ ब्राह्मण-वधू परणावै का तौ मरूं[9] ।

तरै प्रधान राजा सूं वीनती कीधी । महाराज म्हारौ बेटो[10] मरै छइ । दिन ३ हूवा धान षाधां । ब्राह्मण-वधू दीजै ।

तरै राजा कह्यौ । इसौ अधर्म कठे हुवै[11]जु पराइ अमांन कोइ परचै । ब्राह्मण आवै तो हू किसो जबाब करूं* ।

राजा न मानै । तरै परधान अमराव पवासवांण[12] नूं कहि राजा नू कहायौ । उवां कहीयौ । महाराज मुहतै रे एक बैटौ छै । सु ब्राह्मण रो बेटी नु[13] मरै छै । अनै बेटै मूवां परधांन[14] मरसी । तरै राज्य माहे पलहलो[15] पडसी । अनै ब्राह्मण-वहू रौ किसो सोच । ब्राह्मण गयो मूवौ । थे ब्राह्मणी मुहतै रै बैटइ नुं द्यउ[16] ।

तरइ उवारइ कह्यं राजा ब्राह्मणी बौलाइ[17] कह्यौ । तरै ब्राह्मणी बोली । इसडो अधर्म क्युं[18] होइ । एक वार परणी सु बीजी वार क्युं परणींजइ[19] ।

पाठान्तर—

१. ख. छै, ग. छो । २. ख. इमी रूपवत नु । ३. ख. दिन । ४. ख. मूउ । ५ ख न छै । ६. ख. साथ, ग. सघातै । ७. ख. मत्री, ग. पिता । ८. ख. कीयो, ग कीधो । ९. ख. अन पाणी छोडि मरिसी । १०. ख. ग. पुत्र । ११ ख. ही सूणीयो नही । १२. ख. ग, पवास पामवान । १३. ख विना, ग. बीगर । १४. ग मत्री, ग. बाप । १५ ग. घणी खोट । १६ ख दीजै ग. द्यो । १७. ख. बोलाय, ग. बुलाय ने । १८. ख. कयो, ग किम । १९ ख. परणीजं, ग. परणीजे ।

---

* पत्र सं० १४ का ग भाग पूर्ण ।

राजा कह्यौ । म्हारइ[1] राज्य री रक्षा करौ तौ [2]मुहतै रै बेटइ घरि जाह[2] । तरइ ब्राह्मणी बोली । म्हारो कहीयो करइ तो एक वार गगा जाइ आवै । तो पछै म्हारै हाथ लगावै ।

तरै[3] राजा मुहतइ रै बेटै नुं कह्यो । ब्राह्मणी तोनु द्यां छां पण तू गंगा जाइ आव । तितरइ तू घरे ले जा पिण हाथ मत लगावइ ।

तरइ तसलीम[4] करि ब्राह्मणी नुं ले आयो । आपरी स्त्री नुं कह्यौ । इयै नुं सोहरी राषै । भेली ले नइ सुइजै[5] । कठइ जांण मती द्यउ[6] । हुं गंगा जाइ आवुं छुं ।

इसो कहि[7] नइ गंगाजी नुं हालीयो । वांसइ बेऊ एकइ सय्या सूती । वात करण लागी । जो म्हारइ धणी री इसडी स्वभाव छइ । मोनुं बाहिर नी[क]लण द्यै[8] नही । अरु अठे पुरुष रो प्रसंग नही । इसडो म्हारो योवन अहिलो जाइ छइ । अनइ तूं ही म्हारै कनारै दुष दैवण[9] नुं आई ।

तरै ब्राह्मणी बौली । तू कथै[10] न कहइ । तउ[11] तोसुं भेद भांजू । थे कहो हु किण ही नु नही कंहु । मोसु मन मेल री वात करी[रो] ।

तरइ ब्राह्मणी कहौ । हू [12]रात रो पुरुष हुवु[12] छुं । दीहां स्त्री दीसु छुं । तरइ पुरुष रो रूप प्रगट कीयउ[13] । उलसीयो हीयो । बेउ षुस्याल हुवा । माहो माहै रंग मिलिया । षुस्याल थका रहिवा लागा ।

[14]इम करतां[14]कितरैकै दिनै मुंहतै रो बेटो गोरिवइ[15] आइ ऊतरीयउ । मांणस आइ वधाइ दीधी[16] । तब बिहूं जणी नइ सोच हुवउ[17] । अभागीयो पापी आयौ । आपणो लाज नही रहै ।

पाठान्तर—

१ ख. माहरी, ग. महारा । २. ख. ग प्रधान रे घर (ग. घरे) जावो । ३. ख. ताहरा । ४. ख. ग. सलाम । ५. ख. सूवै, ग. सूए । ६. ख. देई, ग दीजे । ७ ग भोलावण स्त्री नु दे । ८. ख. ग. दै । ९. ख. ग. दैण । १०. ख. ग. कठे । ११ ख. ग. तो । १२. ग. पुरुष । १३. ग. देखाल्यो । १४ ग हिवै । १५. ख. गाम रे वाग, ग. नगर बाहिर बाग मैं । १६. ग. दीनी । १७. ख. हुयो, ग. थयो ।

इम जांण नइ ब्राह्मणी [१]मुह अंधारो[१] हूवउ तरइ पुरुष रो वैस कर[२] नीकल नइ मूलदेव सिद्ध री गुफा आयौ। [३]अरु गर्भ रहीयै रो सर्व[३] वृत्तांत मूलदेव नुं कह्यौ।

ताहरां मूलदेव सांभलि कह्यौ। नाथ भलां करसी। पछै[४] बीजइ[५] दिन ससिदेव शिष्य बुलाइ वृद्ध ब्राह्मण होइ शिष्य नू बेटो करि लै नइ राजा पासि जाइ आसीस दै नइ कहीयौ। महाराज! हूं वणारसी जाइ बेटो ले आयो। हमइ बेटो बहू मांगइ। वहू मंगाइ द्यौ। [६]दुष पावइ छइ। आतुर छइ[६]।

तरै राजा नमस्कार करि पाए लागी[७] कह्यौ। स्वामी म्हांसू[८] वडी चूक पडी। थांहरो वहू [९]मुहत(ते)रइ[९] बेटे नुं दीन्ही। मास दो हूवा छै। अरु थे मवडी[१०] षबर लीनी। लो*कै कह्यौ मूवा गया। अरु थे कहौ स करां।

एती वात कहतां मूलदैव सिद्ध कोप करि बौल्यौ। का म्हारी बहु नुं ल्याव। का थारी दीकरी[११] म्हारै दीकरई नु परणाइ। का तौ म्हारो बेउ[१२] हाथै सराप झेलि[१३]।

तरइ[१४] राजा रांणी परधांन भेले हुइ विचार कीयो। जउ सांमी[१५] सराप द्यइ[१६] तउ भस्म करइ। तोयइ कारण चंद्रप्रभा ब्राह्मण [१७]रइ पुत्र[१७] नुं द्यउ। आगइ पिण राजवीए बेटी दीधी छई।

ईसौ विचार करि चद्रप्रभा ब्राह्मणपुत्र नु परणाई। तरई राज-

पाठान्तर—

१. ख गोधूलिक वेरा, ग. गोधूलीक री वेला। २. ख. धरि। ३. ख पाछलो, ग. सर्व। ४. ख. पछै, ग. हिवै। ५. ख. ग. बीजै। ६ ख यो वहू विना बहुत व्याकुल छै। ७. ख. लाग, ग. लागो। ८. मोसू, ग. मोमै। ९. ख. परधान रे। १०. ख. ग. मोडी। ११. ख. वेटी, ग. पुत्री। १२. ख दोनु। १३. ख. झाल, ग. ले। १४. ख. ताहरा, ग. तरै। १५. ख. स्वामी। १६ ख. दे, ग दै। १७. ख. रे वेटे, ग. नै।

---

*पत्र स. १५ का क. भाग पूर्ण।

कन्या लै नइ मूलदेव 'आंपणइ तकीयइ आयउ'[1] । तेथि बाह्मण रइ पुत्र राजकन्या नुं देषि कहीयउ । इयइनूं म्हारउ गर्भ छइ[2] । शशिदेव शिष्य कह्यौ । मइ परणी म्हारी स्त्री ।

वइताल[3] बोल्यौ । अहो विक्रमादीत[4] । चंद्रप्रभा कुणइ री स्त्री । चंद्रप्रभा[5] रइ गर्भ तउ ब्राह्मण रउ । प्रीत घणी तउ ब्राह्मण सु अनै परणी शशिदेव ।

तरै राजा कहीयो । स्त्री जीयै नू पिता परणाई तिण री अस्त्री । इतरो[6] वचन सांभलि राजा रौ वइताल[7] सीसम री डाल जाइ लागउ[8] ।

राजा फिर तेथ जाइ मडइ[9] नुं ऊतार लै आवतउ हूवउ ।

इति श्री वइताल पचीसी री कथा १४मी कही[10]।

पाठान्तर—

१. ख. आपरे मट आयो, ग आपरं ठिकाणं आयो । २. ख. छे, ग. छै । ३. ख. ग. वेताल । ४. ख. महाराजा, ग. महाराज । ५. ख. राजकन्या । ६. ख. इसी, ग. इसो । ७. ख. वैताल । ८. ख. ग. विलगो । ९. ख. वैताल । १०. ग. सपूर्णंम् ।

वैताल पचीसी री पन्दरमी कथा

फिर मार्ग[1] ले आवता वैताल बोलियो। अहो राजा[2] सांभलि। कथा कहुं छुं।

हिमाचल पर्वत [3]रइ विषइ[3] हेमावती[4] नांम नगरी। तेथ विद्याधर जीमूतकेतु राजा। तीयै रइ पुत्र नही। तिण कारण श्रीभगवतीजी रो आराध[5] कीयउ।

आराध करतां श्रीभगवती प्रसन्न हूई। कहीयौ थारी पटरांणी [6]रइ पुत्र[6] हूसी। [7]महा धर्मात्मा हूसी अनै चिरंजीव हूसी[7]। श्रीभवांनीजी रइ प्रसाद थी दसमे मासि पटरांणी रइ पुत्र हुवौ।

राजा पुत्र रौ महोच्छव[8] कीयौ। नगर लौकै उछाह[9] कीयौ। [10]घर २ धवल मंगल गाजा वाजा हुइवा लागा[10]। लोक षुसी हुवा-दातार हुवा। दुर्जन था सु सजन हूवा। चोरे चौरी छोडी। चुगले चुगली छोडी[11]।

इसी हर्ष करि दसोठण कीयौ। छत्रीस पवन जीमाया। सतर भक्ष भोजन कीया। मस्तक तिलक कीया। पांन बीडा मुंछण दीया। सर्व मनुक्ष भेलै हुइ नै पुत्र रौ नांम जीमूंतवाहन कुंमर दीधउ। तीयरै प्रभावइ प्रजा सुषी हुई। घणा मेह हुवा। वृक्ष सर्व फल्या।

हमै कुमर मोटो हुवौ। अनै कुमर रौ सांईनो[12] रिष पुत्र मधुकर नांम मित्र। तीयैरइ साथि षेलतां रमतां घोडै चढीया। मलया-

---

पाठान्तर—

१. ख. मारग। २. ख. महाराजा। ३ ख ग. रे विषे। ४ ख ग, हिमावती। ५. ग आराधन। ६. रे पुत्र। ७ ख ग प्रतियों मे यह पाठ नही है। ८. ख. उच्छव। ९ ख उत्सव, ग. उछाह। १०. ख ग. प्रतियो मे यह पाठ नही है। ११. ख प्रति में आगे यह पाठ है–'धरती माहि मनवछित मेह वरसण लागा। सर्व धान नीपजा[ज]वा लागो। वृष सर्वदा फलवा लागा। १२ ख. मित्र, ग. साथी।

चल[1] पर्वत गया। तठे देषै तउ ईस्वरी रउ देहरउ। तरइ घोडां सुं ऊतरि दर्शन तांइ भीतरि गया। तठे सषियां साथि वीण वजावती गीत-गान करती दीठी। राजकन्या महा रूपवंत।

तीयै[2] कन्या यै जीमूतवाहन दीठउ[3]। देष नइ सषी साथइ पूछाडीयउ[4]। थै कुंण छउं।

तरइ रिषपुत्र* कहीयो। राजा जीमूतकेतु रो बेटउ[5] जीमूतवाहन छइ। पछइ सषी नुं रिषपुत्र पूछीयौ[6]। आ कुमारी कन्या कुण छइ। तरइ सषी कह्यौ। मलयकैतु[7] राजा री बेटी मलयावती नांम छे।

एती[8] वात सुणि जीमूतवाहन घरै आयौ।[9] अनै मलयावती घरि[9] मा नूं कहायौ। राजा जीमूतकेत रौ बेटो छइ। महा चतुर छइ।

रांणी समझि[10] राजा नूं कहीयो। मलयावती परणाई जोइजइ। तरइ राजा (वीवाह करनै) जीमूत नु घणा लाड कोड कर नइ परणाई। [11]पछै दाइजो घणो दीयो। हलांणो करि घरै गयौ।[11]

पछै कितरैकै दिनै सासरै आयौ। तरइ एक दिन सासरै रहतां धनुष-बांण ले सिकार गयो। वन माहै सिकार षेले छइ।[12] तिण समइ देषै तौ एक स्त्री रोवै छे।[12]

तीयइ नू रोवती देषि जीमूतवाहन पूछीयो। तुं कुण छइ। ऊवइ कहीयौ। हूं ब्राह्मणी भूषी पुत्र सहित बोरां नू वन माहि आई[13] हुती अनइ जक्ष[14] म्हारा बेटा नु पकडि षावण नु ले गयौ। तरै मइ कहो-

---

पाठान्तर—

१. ग. मिलीयागर। २. ख. ग. तिण। ३. ख. दीठो, ग दीठो। ४. ख. पूछीयो, ग. पूछायो। ५ ख ग बेटो। ६ ग. पूछ्यो। ७ ग. मालकेत। ८. ख. ग इतरी। ९. ख. ग. में यह पाठ है — "अरु मलयावती घरे जाइ विरह पीडत हुई। सषीया साथ" १०. ख. सांभलि, ग. समझी। ११. ख. जीमूतवाहन घरे रहै। सासरे रहै, ग. वडो जस लीषो। १२. ख. ग. तठे १ (ग एक) अस्त्री वुढी रोवती दीठी। १३. ख आवी। १४ ख. जख्य।

---

*पत्र स. १५ का ख. भाग पूर्ण।

यउ मोनुं लेजा[1]। तरइ कहइ तूं वूढी। थारी मांस वेसवादो[2]। त
बैटइ नुं ले गऊ। तिण वास्तइ रोऊं छुं।

तरइ जीमतवाहन विचारीयौ।[3] जो चोर नाहर जष राष
गहरीयौ[4] सांभल नइ ऊवइ नूं छोडावइ तउ षत्री नुं गालि छइ।

इसडो विचार नै वूढी नुं कहीयो। तूं दुष [5]म करि[5]। था
बेटा नुं हूं छोडाईसि[6]। इतरो कहि नइ जक्ष लारा गयो। आगइ देष
तौ जष्य री गुफा छइ। तैथ संषचूड नुं [7]बाध नै नांषीयो छई[7] अन
यक्ष छुरी लगावइ छइ।

तरै जक्ष नुं कहीयउ। [8]अउ तउ[8] म्हारो लहुडो भाई छइ। ईय
नुं छोडि दै। मोनुं भक्ष। इणरै[9] थोडउ मांस छइ। म्हारइ घणो छै

तरइ यक्ष कहइ छइ।

दूहा

चंदन[10] थोडउ ही भलउ[10], न गाडउ भर्‌यो पलास।
तांणी[11] ही तरुणी भली, ना वूढी रो इकलास ॥१
पाठै रो मांस ही भलो, नां वड बाकर कालेज।
मिश्री थोडी ही भली, नां गोल्हा[12] रो नेव[वे]ज ॥२

वार्त्ता

दोइ दूहा कहि पूछीयो। कहि तूं कुण छै। तरै कुंवर कहीयौ
जीमूतकेतु राजा रो बेटो। जीमूतवाहन म्हारो नांम।

तरइ शांभलि नइ शषचूड[13] वोलीयउ[14] राजकुमार थै सो

पाठान्तर—

१. ख जाइ, ग. जावो। २ ख वैस्वावो, ग. निसवादो। ३. ग वोल्यो। ४. ख
ग पकडीयो। ५. ख. ग. मत करे। ६. ख. छुडाईस, ग. छोडावस्यु। ७ ख. बां
नाषियो छे। ८. ख. यै। ९ ख. ओ। १०. ख. ग. थोडो ही भलो। ११
कांणी। १२. ख. गोल्हा, ग. गुल। १३. ख. ग. संखचूड। १४. आगे ग. प्रति
यह दूहा है—

"आप निमत मृत ओर की, जो अरु जीवै आप।
उण री गती होवै किसी, कहि समलावै बाप ॥३
जीमूतकुमार वाक्यं—
हु जाणू कहि वापडा, गत उण री छै काय।
जांणीजै गत बाप नै, सो कन हरावे राय ॥४

सरीषो सरीर परायै निमित्त क्युं द्यउ । अर म्हां सरीषो नांन्हउ लोक घणउ ऊपजइ[1] अर [2]विलय जाइ छइ ।[2] अनइ थां सरीषो परोपगारी केथ[3] पइदा होइ । अर थे रहिस्यौ तो म्हारी मा की प्रतिपालना[4] करस्यो । अर [5]थांहरइ आश्रइ[5] घणा लोक [6]सुषी हूसी ।[6] अनइ हूं जीवीयो तो प्रिण तिसौ । मूयो तो ही तिसौं ।

तरै[7] जीमूतवाहन कह्यौ । म्हारो पण जाइ । षत्री* पणो लाजइ । तिण वास्तइ तू थारी मा कन्हइ जाइ ।

इतरइ कहतां जक्ष बोलीयो ।[8] रे षत्री पुरष । तूं कांइ मरइ पारकै अर्थइ । तरइ कुमर कह्यउ । क्षत्री री वट छइ । आप मरइ । बीजइ नुं राषइ ।

इम यक्ष नू कहि संषचूड[9] री जाइगा आप आइ बइठो[9] । यक्ष नुं कह्यो । मोनु मारि पिण इणनुं मारण न द्युं[10] । म्हारी मउत नू लेइस । बीजइ नुं लैण न द्यू ।

दूहा[11]

गउ ब्राह्मण साधु नर, मित्र प्रजा त्रीय नाथ ।
इण कारण भूझै मरइ, सो पावइ सुर साथ ॥१[12]

[वार्ता]

इसउ धीर्य देष नइ बिहू रो वाद सांभलि कहीयउ । थे

पाठान्तर—

१. ख. उपजे छै । २. ख. विलेजीये छै । ३. ख. कठे । ४. ख. प्रतिपाल । ५. ख. थारे आश्रे । ६ ख. जीवसी । ७. ख. ताहरां । ८ ख. आइ जीमूतवाहनु पकडीयो । ९. ख. ना बीच आइ पडीयौ । १०. ख. द्या । ११. ग प्रति मे दूहा नही है । ख. प्रति मे आगे यह दूहा अधिक है—

"आप न भषे अब फल, औरा देत पसाउ ।
आप षडो रहे छाह करि, लोक स बेठा उमाउ" ॥१

१२. ख. प्रति मे आगे यह दूहा है—

"आप निमित मृत और की, हुई अरु जीवै आप ।
उणरी गति हुवै कोणसी, कहि समझावो बाप ॥२

---

*पत्र स० १६ का ख. भाग पूर्ण ।

दूनुं घरि जावउ । वाद मति करो । हूं किण ही नै न मारूं । थांहरउ सत धीर्य देष नइ तुष्टमांन हूवउ ।

तरइ[1] वैताल बोलीयो । महाराज ईयां बिहूंवां माहि सच्चाधिक कुण । तरै राजा कहै । सषचूड सच्चाधिक । अरु क्षत्री निमित्त प्रांण त्यागै ही त्यागै । ऊवैं रो कार्य । अरु धन्य सषचूड वैश्य जीयइ रइ सत करि बिन्हे छूटा ।

इतरो[2] राजा रो वचन सांभलि वैंताल[3] छिटक गयो । सीसम रो डाल जाइ बइठो । तरइ राजा इ मडै नुं ले आवतो हूवो ।

इति श्री वैताल पचीसी री पनरमी कथा [4]पूरी हुई[4] ॥१५

पाठान्तर—

१. ख. ग. इतरी वात सुणाई (ग. कही) । २ ख. इसो । ३. ग. मडो । ४. ग संपूर्णम् ।

वैताल पचीसी री सोळमी कथा

फेर[1] मार्ग ले आवतां वैंताल[2] बोलीयो। राजा सांभलि। विजयपुर नगर। तैथ धर्मसील राजा रत्नदत्त सेठ रहै। तीयैरइ उन्मादनी बेटी। [2]तिण रो रूप अधिक। रंभा सरिषी।[2] जिको देषइ सु गहिलो[3] हुवै। सुद्ध काई रहै नही।

राजा सांभलि अटकाई। किणही नुं परणाव[वा] रो हुकम नही। इम करतां योवन [4]अवस्था आई[4]। एक रूप हुंतो। वले योवन आयो। ताहरा जांणे करि रूप सिणगारीयो। सेठ[5] नजर भरि देषै तउ सेठ रो ही जीव चूकइ।

तरै सेठ विचारीयो 'इयइ बेटी घर माहै राषीयां धर्म नही'[6]। जाइ राजा सूं[7] वीनती कीधी। महाराजा कन्यारत्न[8] छै। महाराज री इच्छा[9] हुवै तो महाराज परणै[10]। अर मोनु हुक्म करै तो बीजै सगं नु द्यु। पिण हमै राषी री धर्म न छै।

तरइ राजा एक पासेवांण साथि दे सयांणी बैर[11] जोवण नू मेली[12]। तू ऊठिइरा[13] वस्त्र दूरि करि देष नै [14]जिसडो रूप हुवै तिसडो[14] आइ नइ कहो।

आ बात राजलोक सांभली। जांणियो उन्मादनो आई[15] तउ

पाठान्तर—

१. ख. वले। २. ग. मडो। २ ख. तिका इसी रूपवंत जिसी विद्याधरी काइ अपछरा। ग. सो अत्यन्त रूपवत अपछरा सारिखी। ३. ख. मूर्छाई वेध्र_ध, ग. मुर्छागत। ४. ख. ज्वान अवस्था हुई, ग. वय पामी। ५. ख. ग. पिता धर्म। ६. ख. बेटी परणाया धरम रहे. ग. इणनै परणायां धरम रहै। ७. ख. सो, ग. सु। ८. ख. कन्यारतन, ग रत्नपदार्थ कन्या। ९. ख. आग्या, ग. इछा। १०. ख राषें। ११. ख. भस्त्री, ग. बडारण। १२. ख. मोकली। १३. ख. उणारा, ग. उणारा सर्व। १४. ख. हकीकत सगलें अग री, ग. सर्व अगोपांग देख आव नै मान। १५ ख. आवी।

राजा बीजी किण ही नु मानसो नही। इसडो जांणि उवां दूनां नूं कहाडीयौ। थें राजा आगें उन्मादनी री प्रसंसा मत करो। थानूं ५०० रुपईया भेला कर देस्यां[1]।

पछै उवां जाइ उन्मादनी दीठी। वर्णक[2] कहै छै।

दूहा

नैन विसाल सु क्रांति मुष, चद विराजै भालि।
[3]दसन कि [3]मुष हीरा भर्‌यौ, अधर प्रवाली पालि ।।१[4]

रक्त कमल* से पाणि पद, आंगुलि कोमल पांन।
कुच सु दांत कूंपला, दीर्घ शृगट कांन ।।२

क्षीणी मध्यप्रदेश कटि, पीन प्रचड नितब।
कनक वरण चढती कला, नाभि हुड प्रतिबिंब ।।३

त्रिविलि विराजइ अइठतइ, चलति हस गति चालि।
षडी विराजइ वीजली, वादल वस्त्र विसाल ।।४

चतुराई अगे अगि अधिक, बोलँ वइण रसाल।
अंजन मजन जउ करइ, तउ को वर्णे उहि वाल ।।५

वार्त्ता

अइसउ[5] रूप देष्यउ पिण लोभ रां लीयां जाइ कह्यउ। महाराज लाइक नही। अरु इसडौ सौण दीठो छइ जो उन्मादनी दोइ पुरुप दिन २ माराडसी[6]। विघ्नकारणी छइ। तीयइ[7] कारण महाराज जोग नही।

पाठान्तर—

१. ख. देसां। २. ख ग. रूपवर्णन। ३. ख. दसन ग. दश नख। ४. ख. ग प्रति मे आगें यह दूहा है—

"काम धनुष सी भोह (ग. भूंय) दोइ, नासा दीय सिपाह।
चिलक्यो तंन कंचन विहा, ओरसी से वलताह ।।२

५ ख. ग. इसो। ६. ख. मरावसी। ७. ख. ग. तिण।

*पत्र सं. १६ का ख. भाग पूर्ण।

तरइ[1] राजा कहीयो रत्नसेठ नुं। थारी दीकरी[2] तूं जांणै तठइ परणाय। तरइ सेठ तुरत तसलीम[3] करि घर आयो।

पछै कुटंब नुं पूछ नै नगर माहै धवलधर साह कोड री माया तिण रइ बेटो बलधर तिण नुं परणाई। घणा महोच्छव कीया। रली-रंग हूवा।

बलधर राति-दिन हीडोला षाट बेठो सुष भोगवइ[4]। उन्मादनी रो विरहो न षमाइ। इम सुष भोगवै छै।[5]

हमे एक दिन घणा दिन वितीत हूवा छइ। तरइ नगर रो राजा सिकार नीसरीयो हुंतो अनै उन्मादनी सहजइ आंपणै [6]घरि ऊपर मालीयइ चढती[6] हुंती। तरै राजा दीठी। इसडी स्त्री न होइ। विद्याधरी[7] छइ। कै [8]देवगना छै। कै अपछरा[8] छै।

राजा सांम्हो[9] जोइ रह्यो। उन्मादनी राजा नूं देषती रही। राजा ऊपर प्रेम हुवो।

राजा कहीयो। आ ऊपर चढी सु कुंण छै। तरै चाकरे कह्यो। महाराज बलधर साह री स्त्री छै।

तीयै नुं देष राजा नुं विरह-वियोग दुष हुइवा लागउ। राजा रै मन माहै वसै। भूलै नही। अन्न न षाइ। पाणी ही पीवइ नही।

दूहा

[10]कान्ह पर स्त्री रच्चरणै, को मिट्ठा पण विट्ठ।
दिवस दिवांना ज्युं गमइ, निस रोगी ज्युं निट्ठ ॥१[10]

पाठान्तर—

१. ख. ताहरा, ग. तिथारै। २. ख. ग. पुत्री। ३. ग. सलाम। ४. ख. भोगवें, ग. भोगवै। ५. आगे ख. ग. प्रतियों में यह दूहा है—

"भाग्य बडो संसार मे, पढे (ग. पडयौ) गुनै (ग. गुण्या) कछु नाहि।
दारा (ग. द्वारा) सूजा मुराद पिण, पायो उरगसाह (ग. अइसो ओरंगसाह)॥

६. ख. घर ऊपरि चढी, ग. मालिया मैं बैठी। ७. ग. देवांगना। ८. ख. अपछरा कै नागकन्या। ९. ग. सांहमो। १०. ख. ग. प्रतियो मे नही है।

वार्त्ता

राजा रो विरह सुणि[1] उन्मादनी पिण अन्न छोडीयो। विरह करवा लागी। अस्त्री अन्न न षाइ तरै सुष-भोग रइ स्वारथ करि बलधर ही अन्न न षाइ। दुष पावइ। पिण राजा नुं परचावण लागा। महाराज ! अन्न अरोगै। बलधर कुणेंरो। उन्मादणी कुंणै री। बेऊं रावला छै। जांणै तिम करौ। उन्मादनी हाजर छै। राजि तेड नै महल माहै रषावै पिण अन्न अरोगै। तरै राजा पंडिता नू पूछ्यौ[2]।

दूहा

परदारा जननी गिणइ[3], पर धन पत्थर मन्य।
आप बराबरि[4] जीव सब, जांणै सौ नर धन्य ॥१

वार्त्ता

प्रधान पुरुष बोलीया। महाराज ! पुरुष आंपणी स्त्री [5]आप ही[5] द्यइ[6] तब दोष कौ नही। सो बलधर ए* आप ही अणमांगी स्त्री आंणि द्यइ तो महाराज क्यु ऊ[अं]गीकार न करौ। अनै[7] उन्मादनी पिण अन्न न पाइ छइ। तरइ उवा पिण मरसी। बलधर पिण मरसी। [8]तीयइ कारण[8] महाराज आरोगइ। उन्मादनी हाजर[9] छै।

राजा बोलीयौ। उन्मादनी मे परणी होइ तउ अंगीकार करू। अथवा कंवारी होइ तउ परणीजू।

ताहरां पडित प्रधाने कह्यो। तउ माहाराजा विरह रो दुष क्यु करो। विरह कीया उसडो[10] हीज पाप छइ।

तरइ राजा कह्यौ। म्हारो सरीर मो सारइ[11] छइ सु हूं

पाठान्तर—

१ ख. सूण। २. ख. ग. कह्यो। ३. ख गिनै, ग. गिणै। ४. ख. ग. बराबर। ५. घ अण मागी, ग. आपरा हाथ सु। ६ ख. दे, ग. देवे। ७ ख. अरु। ८. ख तिण वास्तै। ९ ख. हाजुर। १०. ख. उसो, ग. सोई। ११. ख. सारु, ग. पासै।

*पत्र सं. १७ का क. भाग पूर्ण।

राषिसि[1]। हाथ न लगाइसि। पिण मन विरह करइ छइ। तीयै साथि मरीजसी[2]। इसडो ही लिषत जाणीजइ छइ।

राजा विरह[3] कर क्षीण[3] होइ मूवो। तिण रे प्रेम सुं उन्मादनी मूई। भोग-वियोग थी वलधर मूवौ[4]।

वइताल पूछीयो[5]। राजा! तीयां माहि 'सराहण जोग[6]' कुण अथवा दोष कुंणइ नु।

तरइ राजा विक्रमादित कह्यौ। सराहीजै राजा जीयइ सील-धर्म राषीयो अर प्राण-त्याग कीयौ। दौष पासैवांन अरु सयांणो बैर नुं जीया सुक रा पाचसइ रुपईया ले नइ झूठ बोलीयो।

इतरी वात राजा रा मुष थी साभलि वैंताल[7] जाइ सीसम री डाल लागौ[8]। राजा फिर जाइ मडउ ऊतारि मारगि ले चालतौ हूवौ।

इति श्री बैंताल-पचीसी री सोलमी कथा कही[9] ॥१६॥

पाठान्तर—

१. ख. ग. राखीस। २. ग. मरणो आयो दीसै छै। ३. ख. ग. पडित। ४. ख. मूउ, ग. मुवो। ५. ग बोल्यो। ६, ख सत्वाधिक। ७. ख. वेताल, ग. मडो। ८. ख. विलगो, ग. चढ्यो। ९. ग. संपूर्णं।

वैताल पचीसी री सत्तरमी कथा

वैताल कहै छइ। राजा सांभलिज्यो[1]। उजेणी नगरी महीसेन[2] नांमा राजा हूंतौ। तीयै रइ दैव सर्मा नाम ब्राह्मण। तीयै रो पुत्र गुणाकर नांम महा जूवारी। घर रउ वित सर्व हारीयउ। घर ही बेच्यौ।

किउं ही न रहीयउ तरै (तरै) लहणइतां[3] रै डर नासि[4] गयो। देसांतरि भमतां-भमतां जोगी दीठौ। देप नै पगे लागो। तरै जोगी [कह्यौ]। एथि भिष्या भोज्य[5] छै।

गुणाकर कह्यौ। हू भिक्षा री अन्न न षाऊं। तरै जोगी अतिथ री दया करि वट-जक्षणी रो आराध[6] कीयो।

जक्षणी[7] आइ प्राप्ति[8] हूई अर कहीयो। स्वांमी! किसी आग्या द्यौ[8] छउ[9]। जोगी कहीयो। ईयइ[10] विदेसी अतिथ नूं आहार-पांणी दीयौ चाहीजै।

तरै सामी री आज्ञा पाइ दिव्य[11] महल रचीया। [12]सतरइ भक्ष[12] भोजन कराया। कस्तूरी कपूर सहित पांन षवाइ नै आगै आइ उभी रही। तब ब्राह्मण उवइ नुं एकली देषि कामार्त्त[13] हूवउ अरु यक्षणी सूं यथेच्छा[14] करि सुष मइ रात्रि वितीत कोवी। प्रात होतां यक्षणी माया लै अलोप हुई।

ब्राह्मणी[ण] जोगी पासि आयो। जोगी ऊवइ नूं विलषो देषि पूछीयौ। तू विलषो क्यु।

पाठान्तर—

१. ख. साभलो, ग. सांमल। २. ख. महसेन, ग. महासेन। ३. ख. लेहणाइता, ग. लेणायतां। ४. ख. नीसर, ग. निकल। ५. ख. ग. भोजन। ६. ग. आराधन। ७. ग. आंण प्रत्यक्ष। ८ ग. करो। ९. ख. ग. छो। १०. ख. ग. इण। ११. ख. दिव, ग. मोटा। १२. ख. सतर जात रा, ग. षटरस। १३, ख. ग. सकाम। १४. ख. मनवछित क्रीडा।

उवई कहीयो। जक्षणी नीसरि गई। जक्षणी बिना जीवणो नहीं।

जोगी बोलीउ[1]। उवा तो विद्या रइ वल आवइ[2]। तरइ ब्राह्मण कहीयौ। हुं थारो दास हो*इसि[3]। मोनूं आ विद्या सीषाई जीयैं करि जष्यणी आवइ अरु जीमाइ।

ताहरां जोगी आपणो चेलो करि मंत्र सीषायउ अर कहीयो पांणी मांहि पैसि एक चित्त होइ मंत्र साधि। तब ब्राह्मण पांणी माहि माया-जाल मय दीठो। तिसडइ पांणी सूं नीसर जोगी नुं कहीयो। जोगी कहीयौ। पुत्र हिवइ अग्नि मांहि पैसि अरु मंत्र साधि[4]।

तब ब्राह्मण कहीयौ। एक वार[5] कुटंब-यात्रा करि पाछै अग्नि-प्रवेश करुं। तरै[6] गुर री आग्या मागि घरि आयौ।

कुटंव मिलीया। पूछण लागा। तूं कठइ हुंतो। करे षबर न लीधी।[7]

दूहा [दूहो]

माता पिता भाई प्रीया, अप[8] मुष जौ न हिंति[9]।
उर्द्धगमन तिनकुं नहो, अधोगमन वदंति[10] ॥१

पाठान्तर—

१. ख. बोल्यो, ग. बोलीयो। २. ख. आवैं, ग. आवसी। ३. ख. हूईस, ग. हूय नै रहिस। ४. ख. साध, ग. साधो। ५. ख. वैला। ६, ख. तब. ग. तिवारै। ७. ख. ग. प्रति में आगे यह पाठ है – ते (ग. थे) घर विसार (ग. वीशार) दीया (ग. दीना)। ८. ख. अप, ग. आप। ९. ख. नदत, ग. निंदंत। १०. ख. ग. मे आगे यह पाठ है—

मूड थो फिर हूं जीयो, फिर मर जाइस तेथ।
मरन जीवन हसन रुदन. कठे किसू किसू केथ ॥२॥

घडो वडो मुष साकडो, विष्टा भरीयो जांण।
हाथ न मावैं मषि कटि, केसे सुद्धि वषाण ॥२॥

---

* पत्र स० १७ का ख. भाग पूर्ण।

वार्त्ता

गुणाकर कहइ छइ। अब हूं घणो कीसू कहूं। जोगी रो चेलो हूवो। मोसु कोई मोह मत करो। मै जोग-शास्त्र साधीया। मोसूं उसडो ही भाव राखीया।

इतरो कहि जोगी पासि गयो। नमस्कार करि अग्नि-प्रवेश-विद्या साधी अरु यक्षणी रो आह्वान कीयो। जक्षणी नाई[1]।

ताहरां जोगी नै कह्यौ। जोगी बोलीयो। तोनूं विद्या नाई।

वैताल राजा [2]नूं कह्यौ[2]। ब्राह्मण साधतो किथेई[3] चूको नही अरु ब्राह्मण नुं विद्या नाई। किसै कारण ?

राजा कह्यौ। उवइ रो चित्त ठोड न रह्यौ। कुटंब सुं[4] मिलण गयो। तीयइ कारण[5] यक्षणी नाई[5]।

इतरी वात राजा रै मुप थी सांभलि वैताल सीसम री डाल जाइ लागो[6]। ताहरा राजा फिर तेथ मडो[7] ऊतारि ले आवतौ हूवउ॥

इति श्रीवैताल पचीसी री कथा सत्तरमी कही[8] १७॥

पाठान्तर—

१. ख. नावी, ग. नही आई। २. ख. ना पूछीयो। ३. ख. कठै नही, ग. कठै ही न। ४. ख. नु। ५. ख. विद्या न आवी। ६. ख. विलगो, ग. टंग्यो। ७. ख. वैताल। ८. ग. सपूर्णम्।

वैताल पचीसी री अठारमी कथा

फिर 'मार्ग जातां'[1] वैताल बोलीयउ। राजा सांभलउ छउ। वंकोल नांम नगर। तेथ[2] सुदरसेन राजा। धनपाल साह। तीये री बेटी धनी साचालक वासी गोरदत्त नुं परणाई।

तीयइ रे कितरां एक दिनां मोहनी नांम बेटी[3] ऊपनी। बेटी बरस सात री हुई। तरइ पिता मर गयौ। तीयैं रा गौत्री चुगलै राजा नुं कह्यौ। गोरदत्त अपुत्रीयो मुअउ। इण रौ धन[4] षालसइ करो। तरैं षोस नै राजा लीयो।

तरैं धनी दीठो कडुं[टु]ब इ रह्या सुष को नही। धन षोसीयो।

दूहो

देषा देषी षाईयइ, करीयइ देषा देष।
देषा देषी उठीयइ, तौ लजा रहै विशेष ॥१

तरइ धनी मन मइ दुष आंणि नइ आधी रात री बेटी नु ले नइ नीसरी[5]। रातैं[6] मारग सूझै नही। राति अंधारी। तठइ जाती जैथ चोर सूली दीधउ हूंतउ।

तठै जाई नीसरी। तरैं धनी रो चोर नुं धको लागउ। चोर पीड करि दूहो कहै पुकार्यौ[7] है। (है कर्म कहि[7] दूहो कह्यौ)।

[दूहो]

जहां मृत्यु क अरु सपदा, पीड़ा बधन थाइ।
स्त्री सुष भोजन पांन तहां, कर्म प्रेरि ले जाइ ॥१

पाठान्तर—

१. ख. मारग मांहि चालता। २. ख. ग. तठै। ३. ख. ग. पूत्री। ४. ख. माल। ५. ख. ग. नीसर गई। ६. ख. ग. अधारी रात। ७. ग. हाय-हाय करै।

जिण महूरत जिण समइ[1], जैसो लिषीयो होइ।
सुष सज्या दुष पीड पणि, सौ* अनथा[2] न होइ ॥ २

हूणहार[3] सोई होइ है, नांहि न मिटइ निवंध।
दोस अउर कुं दीजीयइ, यह वडउ कुबुद्धि प्रवंध ॥ ३

वार्ता

एतउ[4] सांभलि अंधारी मैं धनी बोली। [5]कुंण छइ तूं[5]। उवै कही। चोर सूली दीयो छुं दो पहरां री पिण जीव नीसरइ न छइ।

धनी कह्यौ। थारो जीव किउं न नीसरइ। तरइ चोर कह्यो। म्हारै धन घणो छइ। हूं परणीयो नही। तिण वास्तै जीव न नीसरै।

ताहरां धनी कह्यौ। थारई धन केथि छइ। चोर कह्यो। थारी दीकरी मोनूं परणावइ तौ धन वताउं।

धनवती लोभ री लागी वेटी चोर नै दीनी[6]। तरै चोर महुरां रो भरीयो चरु वतायउ।

दूहा

पापज होवइ लोभ तइ[7], रस तै व्याधि विशेष।
अति दुष उपजै स्नेह तइ[8], तिहु[9] छोडइ सुष देषि ॥ १

[वार्त्ता]

तरै धनी कह्यौ। ईयइ तूं किसी सीष द्यौ छउ। तरइ चोर कह्यौ। म्हारो नाम रहै त्यूं करजे[10]। म्हारी छै। मैं परणी छै। पिण तोनै म्हारी आग्या छै। रितवंती होइ तब वीर्य रो मोल दे नै संभोग

पाठान्तर—

१. ख. ग. समै। २. ख. ग. अन्यथा। ३. ख. होणहार, ग. होणहार। ४. ख. इसो, ग. इतरो। ५. ख. ग. तू कोण (ग. कुंण) छै। ६. ख. दीधी, ग. परणाई। ७. ख. ते, ग. तै। ८. ख. ग. तै। ९. ख. त्रिहुं। १०. ख. कीजो, ग. करज्यो।

---

*पत्र स० १८ का क. भाग पूर्ण।

करै। अर कदाचि बेटी होइ तो बीजी वार पिण मौल दे वीर्यसंभोग करै। धन घणो ही छै षावण नुं और थारी मर्यादा माहै प्रच्छन्न कार्य करे। म्हारो नांम राषेज्यो। इतरी सीष दे नै चोर मुवौ।

हमै धनी बेटी नुं ले नै आप रै पीहर आइ। एक जुदो ही घर मोल ले नै मां-बेटी दूनु[1] रही।

मोहनी माया[2] रै प्रभावै थोढां दिनां माहि योवनमइ हुई। प्रच्छन्न वात राषै[3]। आगै रितवंती हुइ हुंती अर स्नांन करण मालीयै ऊपरि चडी। तिसडै ब्राह्मण युवांन दीठो।

तरै मानुं बुलाइ[4] दिषायौ अनै मानूं कहीयो। [5]ईयइ सुं[5] म्हारो मन छइ। तूं इयै अठै तेड नै राषउ।

तरै मा ब्राह्मण नुं तेड नै हाथ दिषायौ। पूछीयो इण रइ कोई [6]पुत्र हुसी[6]। तरै ब्राह्मण कह्यौ। पांच बेटा हूसी। तरै धनी कह्यौ। एक पुत्र चाहीजइ[7] नै जउ तूं छांनो[8] रहइ तउ एक सौ महूर द्या।

इसडो [9]वोल कवल[9] दे नइ परदेसी ब्राह्मण नू राषीयौ।[10] स्नांन-मजन कराया। सतर भक्ष भोजन कीया[10]। पांन लवग डोडा मिठाई ले मालीयइ जाइ क्रीडा विनोद किया। मन-ईच्छा पूर्ण कीधी।

प्रात समइ उठि मोहनी मा कन्हइ[11] आई। माता पूछीयो। किसडो एक छइ। मोहनी कह्यौ। मन चाहतउ मिलीयउ। मोनूं पिण गर्भ रहीयउ

इम करतां मास सात राषि नइ १०० महूर दे नइ ब्राह्मण नुं सीष दीनी। ब्राह्मण घरे गयौ। पछै दूहा कह्या।

पाठान्तर—

१. ख. दोनु। २. ख. ग. द्रव्य। ३. ख. ग. रहै। ४. ख. बोलाइ, ग. वुलाय। ५. ख. इणसो, ग. इण पुरुष सु। ६. ख. वेटो लिष्यो छै, ग. वेटो छै क नहीं। ७. ख. चाहीजे छै। ८. ख. ग प्रच्छन। ९. ख. कोल बोल। १०. ख. ग. प्रति मे यह पाठ है—"पोषीयो दूध दही घृत (आगे ग. मे मोकलो) मिठाइ सौं।" ११. ख. पास, ग. कनै।

[दूहा]

निर्भय व्है स्त्री[1] -गुण कहइ, वय करि वरस पचीस ।
जो जी मांगै सो दीयइ, पूरइ मनां जगीस ॥ १

वात न कहु परगट करै, संभोग[2] स्वनुकूल ।*
जन्मनि श्रैसे पुरुष कौ, प्रिया न वीसरइ मूल ॥ २

वार्त्ता

पछै दसमै मास पुत्र[3] जायो । तरइ मोहनी री मा विचार
यो[4] । बेटा नुं जतन सुं मंजूस माहे घालि पासै[5] एक सो महुर दे
त्रि पाछली जाइ राजद्वारि राषि श्राई ।

तीयै[6] वेला राजा सुपनो दीठउ[7] । जो उज्वल सरीर माथइ[8]
द्र-रेपा तीन नैत्र गलै सर्प्प हाथि त्रिसूल इस्वडो[9] स्वरूप । जोगेद्र
हीयो राजा नुं । थारे द्वारि मंजूस मांहि बालक छइ । सु थारो राज्य
रक्षपाल[10] हुसी ।

इसा वचन सुणि राजा जोगी रा जागि नइ रांणी नू कह्यउ[11] ।
रइ राणी कह्यौ हमारुं[12] षबर कराडो ।

इतरइ[13] प्रभात[14] होतां राजा श्राप श्राय मंजूस दीठउ । तरै
ाजा मजूस ले रांणी श्रागै श्राणि षोलीयौ । देषइ तो बालक श्रति
ुदर कांतिसंयुक्त षेलइ छै श्ररु पासै एक सौ महुर घरी छै ।

राजा बालक नूं[15] पटरांणी री गोद मै दीयो । राजा नै हर्ष

ाठान्तर—

१. ख. श्रीय, ग. श्री । २. ख. संभोगे, ग सभोगै । ३. ख. ग. वेटो । ४. ख.
ारि, ग. कर । ५. ख. पापती । ६. ख. ग. तिण । ७. ख. ग. दीठो । ८. ख.
ाथे । ९. ख. ग. इसै । १०. ख. रष्यपाल, ग. रखवालो । ११. ख. ग. कह्यौ ।
१२. ख. श्रवारू, ग. हमार हीज । १३. ख. ग. इतरे । १४. ख. प्रात । १५. ख.
उठाइ, ग उठाय नें ।

---

*पत्र सं० १८ का ख. भाग पूर्ण ।

ऊपनो। जीयैं करि द्रव्य षरचीयौ। पुत्र-महोछव करायो। जोतषी ब्राह्मण तेडि राज-चिन्ह पूछीया।

दूहा

उर विसाल दीर्घ[1] भुजा, दीसै वदन सतेज।
अश्व[2] ललाट विशाल कटि, मात पिता अति हेज॥ १

नेत्रां अतर[3] कर चरण, अधर जीभ नष लाल।
स्वर अरु नाभि गभीर व्है, नासा नैत्र विसाल॥ २

ए [4]लक्षण प्रतेक्ष है[4], विद्यमान दीसत।
जे लक्षण अब होहिगे, सदन अष्व होसति॥ ३

पालै वचन मनुष्य कउ, मारइ नांहि न सूरि[5]।
विनय करै धोषउ न व्है, राजा चिन्ह ए पूरि॥ ४

वार्त्ता

राजा सांभलि षुसी हूवो। राजा उवइ कुमर ऊपर मन[7] कीयो अर आंपणी[8] मोतीयां री माला बालक नुं पहिराई। लोके पिण महोच्छव कीयो। मिली नै नांम दीयो हरिदत्त कुमार। प्रजा हर्ष पायो। माथै धणी हुवउ।

हिवै मोटउ हुवउ[9] तरइ भणायौ। ७२[10] कला सीषी। य्रोवन वय आउ। सोलै वरस रउ हूवौ तरइ पांणग्रहण कीयो। राज-पाट भुक्तवा लागउ। कितरेके दिवसे राजा काल प्राप्त हूवउ। हरदत्त राज्य बइठौ।

राज[11] करतां पुरांण साभलीयौ। तरै पुरांण माहै कहीयौ छइ। जउ पुत्र गया रइ कांठइ पिंड भरावइ तो पुत्र जायौ प्रमांण।

पाठान्तर—

१. ख. ग. दीरघ। २. ख. ग. उच। ३. ख. ह्वे। ४. ख. अंगे लषण हुवै। ५. ख. ग. सूर। ६. ख. पुर, ग. पूर। ७. ख. मोह। ८. ख. ग. आपरी। ९. ख. तब राजनीत सास्त्र व्याकरण पढाव्यो। १०. ख. सारी। ११. ख. राज्य।

दूहा

चित्त दया सब जीव की, अरु कृपा सबन परि होइ ।
ज्ञांन[1] मुक्त तिणि संपजइ, भस्म नसीझइ कोइ ॥ १
श्रद्धा[2]हीन क्रिया विना, डिभ मच्छर कृत जोइ ।
विफल होइ कीयो सबइ, श्राध न पितरै होइ ॥ २

इसडा[3] पुरांण रा वाक्य सांभली संघ करि गया कांठै पहुता । तेथ जाइ श्राद्ध करि [4]पिंडदांन करण लागो ।[4] तरइ[5] तीन हाथ पसारीया । तरै पूछियो । तीन हाथ कुणै रा छै । तरै कह्यौ ।

एक हाथ राजा रौ छै । २ [जो][6] हाथ ब्राह्मण रौ । ३ तीजो[7] हाथ* चोर[8] रो । तब श्राद्ध करावण हारो बाभण बोलीयउ । चौर रो हाथ किउं । तरै चोर बोलीयो । अस्त्री मै परणी हुंती । अरु ब्राह्मण रउ हाथ किऊ । ब्राह्मण कह्यौ वीर्य तउ म्हारउ । राजा रो हाथ क्युं । राजा कह्यौ । म्है षोले ले पालीयो ।

अब[9] वैताल बोलीयो । राजा वीर विक्रमादीत कहौ नइ । हरिदत्त पिंड [10]कुणै नुं भरै[11] । कुणै रे हाथ द्यै ।

राजा कहै छै वीक्रमादित्य । ब्राह्मण रो वीर्य एक सो महुर दे मोल लीयौ । अरु राजा तउ एक सो महूर दे पालीयौ । पिंड चोर नुं आवै जीयै री परणी स्त्री रो पुत्र ।

इसा वचन राजा रा मुष थी सांभलि नै नीसरि[12] गयौ । वैताल[13] सीसम री डाल जाइ विलगो । राजा फिर जाइ मडा[14] नुं ले आवतउ हूवउ ।

इति श्री वैताल पचीसी री १८ मी कथा कही[15]

पाठान्तर—

१. ख. ग ग्यान । २. ख. श्राद्ध, ग सरधा । ३ ख. ग. इसा । ४. ख पिंड भरावण चाल्यो । ५. ख. तव, ग. तिवारै । ६ ख. वीजो, ग. दूजो । ७. ख. चोर । ८. ख. ग. त्रीजो । ९. ब्राह्मण । १०. इतरी वात कहि । ११. ख कुण रे हाथ दै, ग. किण रा पिंड सरावै । १२. ख उठो । १३ ग. मडो । १४. ख. वैताल । १५ ग. संपूर्णम् ।

*पत्र सं० १६ का क भाग पूर्ण ।

वैताल पचीसी री उगणीसमी कथा

वैताल बोलीयो। राजा सांभलि। कथा कहुं।

चीत्रोड़गढ़[1] रूपसेन राजा। तिको एक दिन दूरि आहैडइ[2] गयौ। एकाएकी घोडै चढीयौ। आगैं जातां एक वडो[3] तलाव आयौ अर रूषां की मोटी छाया छै।

तठै राजा घोडा थी[4] ऊतरि घोडो कायजै[5] कीयो। आप वृक्ष री छाया बैठौ। तिसडे एक रिषि-कन्या[6] रूपवत महादेव्यंगना वृक्षां रा फल-फूल चुणती देषी। राजा सकांम हुवौ। तिसडइ कन्या फूल-फल लै नै हाली।

तरै राजा बोलीयौ। थे कुण छो। किसो थांहरो आचार छै। हूं तो थांहरइ प्राहूणौं आयौ। आज तू[7] मोनु मेल्ह नइ हाली। दुइ वात न कीवी।[8]

वातां करतां नैण मिलीया। मन षुसीयाली हूई। इतरइ रिषीसर आयौ। तीयै नू राजा देष नमस्कार कीयौ।

तरइ[9] रिषैश्वर बोलीयौ। अहो राजा! थे सिकार षेलो छउ। जीव मारो। थांहरइ रांमति हुवइ। मांस लोक षाइ। पाप सर्व थारै सिर चढइ।[10]

तरै राजा कह्यौ। रिषीसर जी मोसुं मया करनै धर्म संभलावउ।[11] रिषी बोलीयो। सांभलउ।

पाठान्तर—

१. ग चित्तोडगढ। २. ख. ग आहेडे। ३. ख. ग. वन माहि (ग. माहै) वडो। ४. ख सु। ५. ख. काइजे। ६. ख. नाइका, ग. कन्या। ७. ख. तौ, ग तु। ८. ख. ग. कीधी। आगे ख. ग. प्रतियों मे यह पाठ है—

'ब्राह्मण वरि के सूद्र कै, दूरि हु ते चलि जाहि।
जथा सक्ति पूजा करे, घर आयो गुरु आर्य ॥१॥'

९. ख. तब, ग, तरै। १०. ख चडै, ग. चढै। ११. ख ग. सुणावौ।

दूहा

जगल वसइ रु षांहि तृण, जल पीवइ घन हीन ।
तौ पिण मारै हिरण कू, कौण कहै किसू[1] कीन ।। १

विनपराध[2] मारीयै, पसु पषी नर नारि ।
जो कोई मारै गुनह विनुं, तो नरकै पडै निहारि[3] ।। २

हाथ जोडि उभो रहै, मांगै जीव सरण्य ।
जो अपराधी होइ तो, [4]पणि नहि[4] मारै राजन्य ।। ३

कोक इसइं मारीजतउ, पीडीजतो निहालि ।
प्रांण द्रव्य दे राषीयइ, सरणागति प्रतिपाल ।। ४

रहै सील कै धर्म मइ, अरु जितात्मा होइ ।
विनय होइ विद्या निपुण, मूरख कहै न कोइ ।। ५

सतोषइ[5] स्त्री[6] आंपणी, परदारा प्रतिकूल ।
लइ न किही करि अण दीयो, सो नित निर्भय मूल ।। ६

वैरी देषि वोलइ नही, मन मइ रीस ज मारि ।
सूतै* नुं मारै पछै, नरक जाइ निरधार ।।[7] ७

वरजै दैतां दांन नुं, अरु रिण करि करि षाय ।
कूवा वाव तलाव नु, बूरइ नित प्रति जाइ ।। ८

विप्र स्त्री हत्या करइ, गर्भ भरी पइ[8] जाइ ।
गिणै ण सगी सगोदरी[9], घोर नरक सो जाइ ।। ९

पाठान्तर—

१ ख. का । २ ख. ग. प्रतियो में आगे 'न' पाठ है । ३ ख. निरधार । ४. ख. नह । ५ ख य सतोषी । ६. ख. ग. त्रीय । ७. ख. ग. प्रतियो मे आगे यह दूहा अधिक है—

'चोर प्रजा ना दुष दीयें, प्रज उपरि चलै राज ।
पालण प्रज लै डड करि. चोर विनासिण-काज ।।"

८ ख ग पे । ९. ग सहोदरी ।

---

*पत्र स. १९ का ख भाग पूर्ण ।

वार्त्ता

इसा वचन रिषीसरा[१] रा सांभलि राजा बोलीयो । अहो रिषजी ! आज पछइ हुं आहेडो पाप-कर्म नही करुं । तरइ ऋषीश्वर बहुत संतोष पायो । षुसी होइ बोलीयो । राजा ! तूं मांगि । हुं तोनुं तूठो छुं । मांगै[२] सुं देइसि ।

तरै राजा कहीयो । जो राजि मोसुं कृपावंत हूवा । मोनुं तूठा । तउ थांहरी[३] बेटी परणावौ ।

तरै रिषीश्वरे बेटी परणाई । तठा पछी तीजइ दिन रिषां सुं विदा होइ घोडइ चाढि नै वीदणी नु ले हालीयो ।

विचइ[४] आवतां रात पडी । अंधारो हूवौ तरै मारग सुं टलि नै वड नीचै जाइ घोडौ बांधीयो अरु आप विछांवणा करि सूतउ[५] ।

'तीयइ वेला[६] राक्षस एक आयो । तीयइ दीठउ पुरुष तो षौरडउ दीसइ छइ अरु घोडा नु षाऊ नही । कन्या कोमल दीसै छइ[७] । इणनू षाईस ।

तरै[८] राजा नू कह्यौ । थारी स्त्री नु षाईस । राजा कह्यौ इसडी[९] मत करो । थांनुं बीजउ मुह मांगो स देईस ।

तरइ राक्षस बोलीयउ । ब्राह्मण रो सात वरस रो पुत्र तिणरो माथौ आंपणै हाथि काटि मो आगइ[१०] आणी द्यइ तउ थारी अस्त्री छोडू ।

तरै राजा कहीयौ । आज थी चोथइ दिन म्हारै घरै आए । हु देइस । इसडो वचन राषस सांभली आपणी ठोड[११] गयो ।

राजा घरै आयो । वधाई हूई । लोक षुसी हूवा । परण नई आयौ । पछइ राजा मुहतै परधांन नु कह्यौ । एक ब्राह्मण रो पुत्र ७

पाठान्तर—

२ ख रिष, ग ऋषी । २ ख मागीस, ग मांगसी । ३. ख. थारी, ग आपरी । ४ ख उरे । ५. ख. सूतो, ग. सूतो । ६ ख तिण समय, ग तिण समै । ७. ख. छें । ८. ख. तब । ९ ख ग. इसी । १०. ख आगल ग. आगै । ११. ख. गुफा ।

वरस रो जीयै[1] प्रकार उवइ[2] रा माता-पिता न रोवइ[3], दुष न करइ तीयै भांत आंण द्यौ ।

पछइ मुंहतइ परधान[4] लाक[ख][5] एक रो सोना रो पुरुष कराइ गाडी माहे मेलि नगर में फेरीयौ । कहीयो किण ही ब्राह्मण रइ सात वरस रो पुत्र हुवै तो राजा नूं द्यउ । राजा माथो काटि राक्षस नुं देसी । अरु लाष रूपईयां रो सोना रो पुरुष ल्यो नै बेटो द्यउ ।

तरइ एक ब्राह्मण रइ[6] तीन पुत्र छइ[7] । तीयइ ब्राह्मणी नुं कह्यौ । आंपणइ तीन बेटा छइ । एक बेटो द्यां तउ लाष रूपईयां रउ[8] सोनौ आवसी ।

तरइ[10] ब्राह्मणी वोली । नांन्हीयै[11] नुं तो हूं न द्यूं । तरइ ब्राह्मण कह्यौ । वडै नुं हुं न द्यू । तौ विचेट[12] नु देस्यां अनै लाष रूपईया रो सोनो लेस्यां ।

तरइ लोभी ब्राह्मण राजा पासि जाइ पुत्र दीन्हौ अरु लाष रो सोनो लीयो[13] । तीयै[14] दिन राक्षस आयौ ।

तीयै री महिमांनी करि गंध धूप दीप नेवेद्य फल तांवूल पूजा करि राक्षस रइ मुह आगइ राजा हाथि खड्ग ले शिरच्छेद करतां वालक हसीयौ ।[15]

पछै* राजा मारीयो अरु राक्षस षायौ ।

वैताल बोलियो राजा मरण समय सर्वथा रुदन चाहीजइ[16] । अनै वालक हसीयो किसै कारण ।

पाठान्तर--

१ ख जिण । २. ख. उण । ३. ख रोवें, ग, रोवे । ४. ख. ग. प्रधान । ५ ख ग लाख । ६. ख ग रे । ७ ख ग रे । ८. ख. ग. हूता । ९ ख. ग. रो । १० ख. तब, ग तरै । ११. ख. लोहडे, ग नान्हो । १२ ख. विचले, ग. विचला । १३. ख लीयो, ग लीधो । १४. ख. ग में आगे 'मगलवार रै' पाठ है । १५. आगे ख 'पछे रूनो', ग. 'नै पछै रोयो ।' पाठ है । १६. ख. चाहीजें, ग. चाहीजै ।

*पत्र सं० २० का क भाग पूर्ण ।

तब[1] राजा कहै छै। वैताल सुणि। बालक नुं बालक मारै तरै माता ऊपर करइ। [2]मोटे हूवै[2] मारै तो पिता ऊपर करै अनै मा-बाप रो वस न हवै तो राजा ऊपर करै। राजा रौ वस न होइ तौ देव समरीयै। तरै बालक मन मै कह्यो रोईजइ तो इण वास्तै कोई रोवतो देषि दया कर नइ छोडावै[3]। सु तौ म्हारै राषणहार हुता तिकै ईज सर्व मारणहार हूवा। तिणै करि किसु रोवुं। जीव तो कोई छुडावइ नही। मा-बाप-राजा तीने ई लागू हूवा। तिण कर रोयो नही नइ हसीयो [4]अर दूहो कह्यौ—

[दूहो]

राषणहार मारणा हूवा, हसण नुं लोक।
देव आप लागू हूवो, तो केहो तहां सोक॥[4]

वार्ता

[5]एतो वचन[5] राजा मुष सेती सांभलि नीसर गयो। वैताल सीस्यो[6] री डाल जाइ विलगीयौ। राजा फिर जाइ मडो ऊतारि कांधइ ले आवतउ हूवो।

इति वैताल पचीसी री १९ मो[7] [8]कथा कही॥ १९[8]

पाठान्तर

१. ग. तरै। २. ख. वडै हूया। ३. ख. छडावें, ग. छुडावे। ४. यह अंश ख. ग. प्रतियों मे नही है। ५. ख. इतरी वात। ६. ख. ग सीसम। ७. ख. ग. उग-णीसमी। ८. ख. १९॥, ग. कथा सपूर्णम्।

वैताल-पचीसी री वीसमी कथा

[1]वैताल कहइ छइ[1]। राजा सांभलि। विसालपुर नगर। विमलसिंघ राजा। तीयइ रइ आर्यदत्त वाणीयउ। विणरइ अनंगमजरी बेटी साचालक[2] नगर रइ वासी नु मणिनाभ नुं परणाई हुंती। सुं पीहर रहती। नवयोवना हूई। [3]तिसडी एक दिन[3] मेह वरस रहीयौ हूतो अरु तलाव भरीया सांभलियां पांणी रइ तमासइ देषण नुं आई। साथैं सषो लीधी छइ। तलाव जोवइ छइ।

तठै तलाव [4]जोवण नु[4] गुणाकर नांमा ब्राह्मण पिण आयौ। [5]ऊवइ रो[5] रूप-योवन देषि अनगमंजरी कांमातुर हुई। सषी नुं पूछीयो। अउ[6] पुरुष कुण छइ। इणसु म्हारो मन [7]लागो छइ[7]। तूं ईयइ रो नांम ठांम पूछ षबर ल्यै[8]।

गुणाकर अनंगमंजरी रौ रूप-योवन देषि मोहित हुइ मित्र नूं कह्यौ। ईयइ रो नांम-ठांम पूछि मोनु आइ कहि। वीच गुणाकर रो मित्र अरु अनगमंजरो री सषी आइ मिलीया। इयै ऊवइ नू पूछीयो। ऊवै ईयइ नु पूछीयो।

ईयइ कह्यौ। आर्यदत्त री बेटी। अनंगमंजरी नांम[9]। चौबारै रहै छइ। अरु गुणाकर नुं बहुत चाहै छइ। उवै[10] कहीयौ। गुणाकर ब्राह्मण परदेसी छइ। माली रइ घर डैरो छै। अनगमंजरी नुं घणुं चाहइ छई।

ताहरां गुणाकर रै मित्र गुणाकर नुं आइ कह्यौ। अनंगमंजरी री सषी अनंगमंजरी नुं आइ कह्यो। तब जांणीयै सैती दूणो विरह हूवौ। विण[11] मिलीयां [12]जीव सुष न* पावै।[12] सषी धीरज दे राषै।

पाठान्तर—

१. ख म. मारग (ग. मारग मैं) चालता वैताल वोलीयो। २ ख. तिका, ग सो। ३. ख एकै समे, ग. एकरा समाजोग रै विषै। ४. ख. रौ तमासौ देपरा। ५. ख. उरा रो, ग. इरा रो। ६ ख. यो। ७. ख छें। ८. ख ले जै, ग कह ज्यै। ९. ख. नाम छे। १०. ख उरा, ग. तरै इरा। ११. ख. विना। १२. जक पडे नही।

*पत्र सं. २० का ख. भाग पूर्ण।

अनंगमंजरी गोषि बैठी रहै। गुणाकर ऊवै गली सात वार आवै। 'देषीया विण जीव रहै नही'[1]।

[2]दूहा

नयणे नीद न जीव सुष, जबह न देषुं तुझ।
न जांणुं ते क्या कीया, प्रेम पीयारा मुझ[2] ॥ १

वार्ता

वेउ विरह कर षीण हुइवा लागा। सषी घणो ही द्यइ[3] पिण मिलणउ हूवइ नही। अरु मोटा रउ मेलणउ कठिन।

दूहा [दूहो]

नैन मिलै वचनइ[4] मिलै, [5]भेट दीयइ लीयइ[5] नित्य।
अंग स्पर्श विना मरइ[6], [7]क्षीण होइ यह सत्य[7] ॥ १

[वार्ता]

अनंगमंजरी विण मिल्यै मरण लागी। सु गुणाकर अरु सषी विना कोन जाणइ। अनगमजरी दुर्बल क्षीण हुई। तरइ वैद्य नइ तेड नइ [8]ऊषद कराया[8]। पिण रोग री व्यथा न जांणै। गुण कोई नही।

तरइ मणिनाभ नइ मांणस मेल्हि नइ तेडायउ[9]। कह्यो थाहरा मांणस दुषी छै। तरइ मणिनाभ तुरत आयो। अनगमंजरी जीवती आयी।

पाठान्तर—

१. ख विना दीठा जक्क नावै, ग. पिण बिगर दीठै जक न पडै। २. ख. ग में यहा दूहा नही है। ३. ख. प्रति मे आगे यह पाठ है—'तिण दुष करि साहजादा कुतुबदीन री अवस्था हुई। कुतबदीन रे तो ढाढीणी री साहस करि सावधान हुई। ईया रे इसो कोई नही जिण करी बचाव होवै।'
४. ख. वचना, ग. वचन। ५ ख. मीटे न दीयै नित्य। ६. ख. मिलें, ग. मरै। ७ ख. ख. षिण होय इह सित, ग. चित्त सु लागो चित्त। ८. ख. उपाव घणा ही कीया। ९. ख. तेडायो, ग. बुलायो।

मुष दीठी तरइ निश्चइ कीयउ । जो स्त्री 'जीवइ तो जीवुं'[1] । नही तो ईयइ रो साथ न छोडुं । अर पाछइ पिण मरणो छइ । इसडो साथ न छोडु । (अर पाछइ पिण मरणो छइ । इसडो साथ किउं छोडीजइ) इसडै[2] विचार करतां अनंगमंजरी मुंई[3] ।

पछइ अग्निदाघ कीयो । तरइ ऊवइरो रूप यादि करि बलती चिह मांहि पडि मणिनाभ मूवउ । पछइ गुणाकर अनंगमंजरी मुइ सुणि प्राणत्याग कीयउ ।

वइताल[4] बोलीयो । राजा ! तीनां माहि कामार्त्त[5] कुंण कहीजइ । राजा कह्यौ । स्त्री कामार्त्त[6] जिका कांमपीडित मुई । बीजा कांमी उवै रइ दुष करि मूवा । अनंगमंजरी जीवती तउ[7] [8]बेऊ जीवंत[8] । कोई मरतउ नही ।

एता[9] वचन राजा रा सांभलि गयो वैताल सीसम री डाल जाइ लागउ[10] । मडै[11] नुं ऊतारि कांधइ ले आवतउ हूवौ ।

इती श्री वैताल-पचीसी री वीसमी कथा[12] कही ॥२०॥[12]

पाठान्तर—

१. ख. जीव्या जींवू । २. ख. इसो, ग. इम । ३. ख. रो जीव नीसरयो । ४ ख ग. वेताल । ५. ख. ग. कामातुर । ६. ख. ग. कामातुर । ७. ख. तो । ८. ख. दोनु मरत नही । ९. ख. इसा । १०. ख. विलगो । ११. ख. राजा फिर जाई वेताल । १२. ग. सम्पूर्णम् ।

वैताल पचीसी री अकवीसमी कथा

'फिर मडै नं ले आवतां[1] वैताल कहै छै। राजा सांभलि[2]।

पवनस्थान नगर। तीयै[3] रो धणी बीरबल राजा। तीयै रइ विष्णुस्वामि ब्राह्मण। तीये रइ च्यारि पुत्र। एक द्युतकारी। बीजो वेश्यारत। तीजो सुरापांन। चोथो परस्त्रीरत। तीयां[4] नुं विष्णुस्वामि सीष द्यै छै।

जुवारी नुं कहै छै[5]।

दूहा

अति अनर्थ जुवौ करइ शील धर्म न रहाइ।
जइसइ मांनवलोक कौ, विष पीयै जीव जाइ॥ १
जुवारी लिषमी तजै, ज्युं वैश्या धन हीन।
कूड कपट कर्कस चवै, हास्यो दीसै दीन॥ २
जूवै दोष घणा कह्या, वेचै त्रीय घर बार।
उत्तम होइ न षेल ही, अधम एह आचार॥ ३

अथ वेश्यारत नु सीष दीयै छइ[6]—

[दूहा]

साच सील सयम नियम, सुचि सोभाग गरब्ब।
नर पैसै वेस्या सद*न, बाहिर रहइ सरब्ब॥ १
मात पिता बधव सुतन, बैर बहिन अन्न धन्न।
तिण नु ए वल्लभ नही, जिहि वाल्हो वेस्या तन्न॥ २
न सुंहावइ तीयनू बडा, सुणै न हित के बोल।
जो वेस्या सुं प्यालो पीयै, तिणरो केहो तोल॥ ३

पाठान्तर—

१. ख. मारग चालता, ग राजा मडो ले चालीयो तरै। २. ख. साभलो, ग. सुंण ३ ख. तिण, ग. तठै। ४. ख. तिका। ५. ख. प्रति मे आगे के "वेस्यारत नुं" सीष सम्बन्धी दोहे यहाँ है। ६ ख प्रति मे आगे के 'सुरापानी'—सम्बन्धी दोहे यहाँ हैं। तदुपरान्त 'जुवारी' सम्बन्धी दोहे हैं।

*पत्र सख्या २१ का क. भाग पूर्ण।

सुरापांनी नू सीष द्यइ छै—

दूहा

सुरापांन जो जो करै, सो सब भक्ष करेइ।
दुष पावइ गहिलो हुवइ, पिण फिर पात्र भरेइ॥ १
काम काज हूतो रहइ, करइ अगमिय गोण।
ज्ञान नष्ट हुइ जाइ सो, नरक पातियो होण॥ २
जूवइ षेलि दारू पीयै, फिर वेस्या घरि जाइ।
भी परदारा सूं रमइ, च्यारे विनासइ आइ॥ ३

पर स्त्रीरत[१] नूं सीष द्यइ छइ—

जीवा मारै पर त्रीया, पाडै नरकि अघोर।
गमइ वडाई जन हसइ, दुष पावइ घरि अउर॥ १
[२]विलीषाइ सुत आंपणउ, सा किम छोडै मांस।
मारै अपणइ षसम कु, तो नारी कौंण वैसास॥ २[२]
परत्रीत इ गहि बधीयइ, अरु धन जांतो जोइ।
ठोड-ठोड सकत रहइ, कलह मृत्यु पिण होइ॥ ३
अप्रिय मैथुन सोचियै, अरु खिड केरो साथ।
वुरइ कहत मन सोचियै, सोचिय रहत अनाथ॥ ४
वालापण पढीया नही, योवन व्यर्थ गमाइ।
वृद्ध भयइ कछु होइ नहि, मन पछतावो थाइ॥ ५

वार्त्ता

ताहरां विष्णुसामि रा च्यार बेटा छा। एरा[३] वचन अवधारि विद्या पढण नुं वणारसी गया।

तेथ[४] [५]केतै एक[५] कालि[६] विद्या पढि आवतां विचारीयउ[७] जो वा विद्या फुरइ कि नही। इसो जांणि जंगल माहे एक करंक[८] पडीयो

पाठान्तर—

१. ख. त्रीय राते। २ ख. प्रति में यह दोहा नही है। ३. ख ग. पिता रा। ४. ख. तठै। ५. ख. कितरैक, ग. कीतरा एक। ६. ख. वरसै, ग. वरस। ७ ख. ग. वीचारयो। ८. ख. हांड, ग. लकड।

दीठउ सीह रो। तिण नुं प्रथम विद्या कर हाड जोड़िया। बीजै विद्या रइ बलि मांस-पंड कियो। तीजै रोम सहित तुचा कीधी। ताहरा बोलीयो। ईयई नु जीवाडीयइ मारसी कुण।

तरैं चौथऊ बोलीयो। न जीवाड़ू तो म्हारी विद्या री षबरि क्युं पडइ। तरैं विद्या करि संघ जीवाडीयो।

ताहरां[1] सिंघ भूषौ ऊठियो। मुह आगै ऊभो तो तिण नुं मारियो। बीजा नाठा। तरै[2] सिंघ सगला मिरग भेला करि षांण लागो।

वेताल पूछीयो। महाराज इया पढीयां मांहि महा मूरख कुंण।

राजा कहीयउ। पहिली पूछे तिको मुरख जो इतरो ही न जांणइ। पाछइ पढीया तो च्यारै मूरष। पीण जीयै सिंघ नुं जीवाडीयो सो महा मूरष।

दूहा [दूहो]

[3]बुद्धि वडी विद्या हुतइ, घूतावे विण बुद्धि।
बुद्धि विहीना पडितां, षाधा सिहइ क्रुद्धि॥ १[3]

वार्त्ता

एती[4] राजा रा मुष थी सांभलि मडो डाल जाइ विलगउ। राजा जाइ मडै नु ले आवतउ हूवउ।

इति श्री वैताल*-पचीसी री ईकवीसमी[5] कथा। २१[6]

पाठान्तर—

१. ख. तव, ग. तरैं। २. ख. ग. तब। ३. यह दूहा ग. प्रति मे नही है। ४. इसा। ५. ख. २१ मी। ६. ग सम्पूर्णम्।

*प्रत स. २१ का ख. भाग पूर्ण।

बैताल-पचीसी री बाईसमी कथा

मारग चालता वइताल[1] बोलीयो। विश्वपुर नगर। विदग्धमणि राजा। नारायण[2] नांमा ब्राह्मण रहइ सो वृद्ध हुवो। सरीर जीर्ण हुवो अरु मन ऊसडो हीज छइ। तो जीयइ[3] प्रकार शरीर नव तन होइ सो ऊपाव कीजइ[4]।

अथ[5] नवी काया मइ प्रवेस करण री विद्या सीषीजइ तो मनोरथ पूरण होइ। [6]जीवीजइ तां लग[6] भोग भोगवीजइ। (अथ नवी काया मइ प्रवेस करण री विद्या सोषीजइ तो मनोरथ पूरण होइ। जीवीजइ तां लग भोग भोगवीजइ।

[7]इसउ विचार एकमद्दा पुरष जोगी पासि गयो। जोगी री सेवा कर पुछीयो। विद्या छइ[8] पिण ?

विद्या पढि[9] बुराई करइ तीयइ नु सीषाईजइ नही।

उवै[10] कहीयो मौनू विद्या सीषावउ[11]। हूं भलाई करीस। तब विद्या सीषावण लागउ अरु दूहा पिण कहण लागउ—

दूहा

अगि वली मस्ति कियली, दसनहीन मुष फार।
तउ पिण आसा पापणी, लागी ही रहइ लार ॥१

उठै गोडा हाथ दे, मुष न पिछाण्यौ जाइ।
कांने पिण उचो सुणे, दड विना न चलाइ ॥२

आसा तोई न छांडिहइ, जीव न कोध न कोह।
मन मइ नाणइ मरण की, आंणइ गरब सहीह ॥३

पाठान्तर—

१. ख. ग वेताल। २. ख. नाराइण। ३. ख. जिण, ग. जिण ही। ४. ख. ग. कीजें। ५. ख. अथवा। ६. ख. जीव रहैता लगै। ७. ख. एसो, ग. इम। ८. ख. स्वै। ९. सीप, ग. पढ नै। १०. ख. ग. उण। ११. ख. सिषावो, ग. शीखावो।

दिवस जाइ रजनी पडै, राती जाइ दिन होइ।
मासि मासि फिर चद्रमा, नवो पुराणो जोइ ॥४
बालक तइ तरुणो हवै, तरुणो वूढो होइ।
वूढो फिर बालक हुवौ, यहइ रीति मृत लोइ ॥५
कुण हू कुण तू लोक कुण, काहे को करइ सोक।
जो दीसइ सो विणसही, भोले भोलो लोक ॥६
सन्यासी तपीयो जती, विप्रा सिद्ध महत।
नास्तीक पणि पडिता, काल प्रमाणे जंत ॥७[1]
[2]आयो इक जाइ एकलो, साथ पुन्य अरु पाप।
कीयो कृत साथे चले, भुगते आपो आप ॥८[2]

वार्ता

इतरी सीष दे अर पछै विद्या परकाया प्रवेस री सीषाई। नारायण विद्या सीषी। एक तरुण पुरुष री काया मांही प्रवेस कीयो। आपरी काया छोडी तरै रोवण[3] लागो। पछै वले हसीयो।

तरै वेताल कहै किसो कारण। राजा कहै। ब्राह्मण रो शरीरु सुं मोह घणो[4] हुंतो। बालकपणै साथि रह्यौ। योवन समइ[5] साथि। अनै देहीरै रा लाड घणा किया। चौवा चंदन लगाया हुता। [6]तिणै कारण[6] छोडतां वियोग सेती रोयउ[7] अरू नव तन काया पाई। परकीया[8] प्रवेस री विद्या हाथ आई। [9]तिणै हर्ष[9] हसीयो।

एतो[10] राजा रै मुष से ती वचन सुणि वैताल ऊडि सीसम री डाल जाइ लागउ[11]। तरै राजा फिर जाइ मडै नुं ले आवतउ हूवो।

ईति श्री वेताल पचीसी री बावीसमी कथा। २२[12]

पाठान्तर—

१ ख. ग. में आगे यह पाठ है—
ग्यान एक पाषड बहु, पाषडां माहि ग्यान।
निश्चै करि क्यों पाइयै, रूप रग अहिनाण ॥९
सुपनो सो ससार है, मन हि विचारो आप।
याद करो तुम प्रात उठि, पूछो विवरो बाप ॥९

२. ग. प्रति मे यह दूहा नही है। ३. ख. रोवा। ४ ख. अत्यत। ५. ख. समे। ६. ख तिण वास्तें। ७ ख आसू पडीया, ग रूनो। ८. ख. परकाया। ९. तीण वास्तें, ग. तिण सु। १०. ख. इतरी वात, ग. इतरो। ११. ख. विलगो, ग. विलग्यो। १२. ग. सम्पूर्णम्।

वैताल पचीसी री तेवीसमी कथा

फिर[1] मंडै नुं ले आवतां वैताल [2]कहइ छइ[2]। राजा सांभलो।[3]

धर्मपुर* नगर। तेथ धर्मज्ञ[4] राजा। तिण रै गोविन्द नामा व्राह्मण। च्यार बेटा हरिदत्त [5]सोमेश्वर व्रह्मदेव जगिदेव। सगला सास्त्र वेद रा पाठी। तीयां माहे वडो बेटो हरिदत्त[6] (सोमश्वर व्रह्मदेव जगिदेव सगला सास्त्र वेद रा पाठी) काल करि मुवो। तीयै रो गोविन्द दुष करिवा लागो। तरइ राजा रो प्रोहित विष्णु सर्मा आइ गोविन्द नुं प्रबोधई छइ—

दू०[हा]॥

दुषी जननि के गभ मइ, विकल बालपणि होइ।
तरुणी त्रीय वियोग दुष, वृद्ध हुवो सब षोइ॥१
गर्भ अक सज्यां धर्‌या, मारग वृक्ष पहार।
घरि वाहिर आकास जलि, काल न छोड़इ लार॥२
पडित मूरष अर घनो, निवल सबल धनहीन।
राजा प्रजा सुषी दुषी, जती गृहस्थ कुलोन॥३
सूता बइठां चालतां, ऊभां ही मर जाइ।
काल सबनी कुं सधरइ, घोषा करइ बलाइ॥४[7]

पाठान्तर—

१. ग फेर। २. ख कहै, ग कह्यो। ३ ग. सुण। ४ ख. धर्मज्ञान, ग धरमधूज। ५ ग मनोहरदत्त। ६ ग. मनोहरदत्त। ७. ख प्रति मे आगे यह दूहा है—

"अवुणों सो वरस को, अघि निस ले जाई।
आधा हू आघो वले, वालक वृद्ध विलाई॥'

आगे ख और ग प्रतियों मे यह दूहा है—

"र [ग स] हितो व्याधि वियोग दुष, सो कछु चाकरी प्रीति।
तामै जीव उतावलो, जलतरग की रीत॥"

---

*पत्र स. २२ का क. भाग पूर्ण

तो प्राणी कुं सुष किसो, दुष-भांडइ ससार।
करो भलाइ हरि भजो, छांडो सोच ससार ॥५
विभो सकल घर ही रहइ, बधूजन समसानि।
काठ अग्नि शरीर लग, पाप पुन्य जीव थांनि ॥६
माता पिता न बधवां, युवती सगा न मित्त।
जम आगलि कोई नावई, गहरचो जोवइ चित्त ॥७
अब ही हसतो गावतो, क्रीडा करतऊ आहि।
सो अब ही मुयो काल करि, मन तन लषीयो ताहि ॥८
नां उषध नां दांन कछुं, नां ग्रह-पूजा काइ।
काल लीयइ छूटवे न को, सुत त्रीय बंधव धाइ ॥९

वार्त्ता

इसा ग्यांन रा वाक्य सांभलि[1] गोविन्द बहुडि यज्ञ[2] करण री ताई सावधान हूवौ। सोग भागउ। विष्णु सर्मा विदा होई घरि गयौ।

गोविन्द बेटा नु कहचउ। एक मच्छ जुग्म कुं लै आव। तरै सोमेंसर कह्यौ। हू भोजन-चतुर छूं। म्हारइ हाथ दुर्गंध आवसी। ब्रह्मदेव नुं कह्यौ। तू मछरी विदार ने भाजी कर।

तरै ब्रह्मदेव बोलीयउ। हु नारीचतुर छुं। नारी ने दुर्गंध आवसी। मन वेषातर हुसो। जगदेव तू लइ।

जगदेव बोलीयउ। हू सज्या[3] चतुर छूं। [4]इयइ री[4] दुर्गंध सेती नीद पडइ नही। हाथ गधावसी।

ईयां तीनां रो वाद सांभलि[5] राजा तेडिया[6] अरु पूछियौ। कीसूं[7] वाद थांहरइ छइ। उवइ[8] तीने बोलीया। एकण कह्यो हूं भोजनचतुर छुं। बीजइ[9] कह्यौ हूं नारी-चतुर छुं। तीजइ कह्यउ हूं सज्याचतुर छुं।

पाठान्तर–

१. ख. साभल। २. ख जगन, ग. जग्य। ३. ख. सिझ्या, ग. सिज्या। ४. ख. ग इणारी। ५. ख. देषि, ग. सांभल। ६. ख. ग. तेडाया। ७. ख. कासू, ग. कासु। ८. ख. उवै। ९. ख. ग. बीजे।

राजा कहियो। देषा थाँहरी चतुराई। प्रभातइ[1] तीनें ही निहतरीया। भगति करि भली-भांत जीमाडीया। अनेक भांत रा जीमण किया। घणी चतुराई सुं रसोई कीधी। पछै भोजन जीम नइ ऊठीया। [2]तंबोल सोपारी मुंछण दीया।[2] पछै* सज्या विछाइ सूता। नीद कर जाग नइ आषि छांटि राजा कन्हइ आया।

राजा पूछ्यउ। भोजन किसडा हूवा हूता। मन सुहावती मति कही। साच कहिज्यौ।

तरइ बीजै कह्यौ। भोजन बहूत [3]सषरा हूवा[3]। तरइ[4] भोजन-चतुर बोलीयो। बीजु तो भोजन भला हुआ पिण चावल माहि मसांण री गध[5] हूंती।

तरइ राजा मोदी नुं बुलाइ पूछीयउ। थारइ चावल कठा आया हुंता।

तरइ कहियौ। सिवपुरी हूंती आया। तरै शिवपुरी रा हाली बुलाया। चावल कठइ नीपजइ छइ।

तरै हाली एक कह्यौ। मसांण भूमि मांहि साल सषरी[6] [7]नीपजई छइ।[7] तीयै षेत्र री सुथरी साली हुँती। तरइ राजा कह्यौ। सही भोजन चतुर।

पछै तीना नूं मालीयइ सुवांणोया। पलिग विछाइ उपर सेर १० रुई रा पथरणा विछाइ बीयै ऊपरि सुथरी विछाइ ऊपरा षासै रा पछेवडा ढालि सुवाणीया।

[8]प्रभातै राजा[8] पूछीयो। बीजा तौ नीद ले जागीया। सोहरा

पाठान्तर—

१. ख. ग प्रात संमे। २. ख. ग. में यह पाठ नही है। ३. ख. सुघरीया। ४. ख. तव, ग तरै। ५ ख. सोरभ। ६ ख. भली। ७ ख. नीपजे छै, ग नीपनी छे। ८. ख. पछे।

---

*पत्र स. २२ का ख भाग पूर्ण।

सूता। गाढी सुष-निद्रा कीधी। सिज्या रा वषाण किया। ति वारै सज्याचतुर बोलीयौ। सेज घणुं[1] सषरी हुंतीं। मालियै सषरो हुतो। पिण पथरणा माहे [2]एक वाल छइ[2] तिको पसवाडै चुभीयो। तिण नीद नाई।

तरै राजा कहीयो। हालो। जोवां। तरै पथरणै माहै जोवै तो [3]माथै रो[3] केस निकलीयो।

राजा षुसी होइ कह्यौ। त्राही[4] सज्या चतुर।

पछै उवइ ही मालीयइ पाछा सुवांणीया। [5]अर नवयोवना विभचारणी[5] बुलाइ राजा कह्यौ। थे इयां नुं बहुत सुष देज्यो। प्रभात [6]हूं ईयांनइ पूछीस।[6]

ऊवे तीनै मालीयइ जाइ सुष करि सूता। प्रभाते तेड नइ पूछियो। बीजा तो सुष री वात कही। नारीचतुर बोलियो। महाराज बीजौ तो बहुत सुष पायो। पिण नायका रइ[7] मुषि[8] छाली री वास आवइ तीयइ दुर्गंध साम्हो हूवउ न गयो। [9]एक ईस पकडि सुइ रह्यउ।[9]

ताहरां राजा कुटणी तेड पूछी। आ नायका कुण छै। तरइ[10] कुटणी कह्यौ। प्रभावती री दोहीतरी[11] छइ। [12]ईयइ री[12] माई यइ नू जिण नइ तुरत मर गई। तरै घरे छाली हुती तीयइ रो दूध पाइ नइ मोटी कीधी।

राजा कह्यौ। साबासि ईयइ नू। सही अउ नारी चतुर।

वइताल[13] बोलियो। महाराजा वीर विक्रमादीत उवइ[14] राजा तो

पाठान्तर—

१. ख. घणो ही। २. ख. माथै री केस हूतौं, ग. सूसा रो केस छै। ३. ग. माही सु। ४, ख. सही, ग ओ पिण सहि। ५. ग एक नायका वरस १५ री। ६. तेड पूछियां, ग. हुआं इण नु पूछ लेस्यां। ७. ख. रा, ग. रै। ८. ख. मुष सेती, ग. मुहडै। ९. ग. प्रति में यह पाठ नहीं है। १०. ख. तब, ग. तिवारै। ११. ख. दोईत्री। १२. ख. ग. इणारी। १३. ख. ग. वेताल। १४. ख. ग. उण।

तीने सराह्या। पिण महाराजा ! कहइ तीनां ही मांही महाचतुर कुंण[1] ।

राजा कह्यौ। सिय्याचतुर अधिक। एथि[2] धूर्त्ताई चालइ नही। बीजा [3]धूर्त होइ तउ[3] पूछ सांभलि कहइ[4]। पिण केस री वात कुणै नूं पूछै।

इसा वचन राजा रा मुण थी सांभलि मडो[5] सीसम री डाल जाइ* लागो[6]। राजा ऊतारि कांधइ ले आवतउ हूवउ।

इति श्रीवइताल-पचीसी री तेवीसमी कथा [7]कही। २३[7]

पाठान्तर—

१. ख. कौण, ग. कुण। २. ख. अठै। ३. ख. ग. कपट करे तो। ४. ख. कहै। ५. ख. वैताल। ६. ख. विलगो, ग. विलगो। ७. ग. सम्पूर्णम्।

---

*इस म २३ वां म. भाग पूर्ण।

वैताल-पचीसी री चोवीसमी कथा

वइताल[1] कहइ छई। राजा सांभलि[2]। यज्ञस्थान नगर छइ। तेथ[3] यज्ञसर्मा ब्राह्मण रहइ। तीयै रइ सोमदत्त ब्राह्मण। तीयइ रइ गुणवंत पुत्र हूवउ। रूपवंत विद्यावंत भाग्यवांन अति चतुर पिण आयु नही[4]।

ऊवइ[5] नू ब्राह्मण री बेटी अज्ञातयोवना परणाइ। तीयइ[6] नूं परणि प्रथम मिलाप रो समउ हूंतउ। तेथ[7] [8]काल रइ प्रेरीयइ[8] सर्प्प आइ डसीयउ। गुणवंत मूअउ।

गारडू तेडि घणाई जतन कीया पिण जीवियो नही। ताहरां ऊवइ रा मा-बाप [9]सोकातुर हूवौ [वा][9]। कुटब रोइवा लागौ। उवइ री स्त्री भोली सी हूंती। तीयै[10] कह्यौ। भर्त्तार साथि सती हूइसि। रहूं नही।

तरै[11] राजा नू पूछि सती नूं[12] भर्त्तार[13] सहित मसांण भूम ले गया। तेथ[14] एक योगी परकीया[15] प्रवेश री विद्या जांण थकउ मसांण माहि रहतो। सु सती रो रूप देषि नवयोवना जाणि विद्या चलावी।

जेते[16] मृतक रा बधन षोलि उघाडो कीयउ अर पासै सती आई। इतरइ जोगी [रो] पिंड पडीयउ[17] अर गुणवंत रा मा-बाप-भाई-ब्रध षुसी हूवा। पिण जोगी रउ पिंड पडीयउ देषि मन माहि

पाठान्तर–

१. ख. ग. वेताल। २. ख. साभलो, ग. सुण। ३. ख. ग. तठै। ४. ख. ग. हीन। ५. ख. उण। ६. ख तिण। ७. ख. तठै। ८. ख. काल रे प्रेरीयें, ग. भाग्य जोगे। ९. ख. सौकाधीया होई रोवण लागा, ग. शोक करण लागा। १० ख. तिण, ग. तण। ११. ख. तब। १२. ख नइ। १३. ख. भरतार। १४. ख. ग. तठे। १५. ख. ग. परकाया। १६. ख तिण समय, ग. पछै। १७. पडीयो, ग. पडीयो।

सगलां जाणियो जोगी रउ[1] जीव गुणवत मांहि आयौ। सती पिण जांणियो जोगी रउ[2] जीव छइ[3] गुणवंत मांहि आयौ।

वइताल[4] बोलीयउ। महाराजा! सती होइ कि[5] न होइ। राजा बोलीयउ। सुणि भाई। विचार री वात छई[6]। शरीर विना सरीर नुं बालइ को नही। सती रो शरीर भत्तार [र]इ पिंड लारा छइ। पिंड पड़ीयां बलइ। जीवतइ रो जीव गइल जातौ किही[7] रो जोर नही। न्याव इसडो[8] सउ छइ।

इसी[9] वात राजा रा मुष री सांभली वइताल[10] गयो। राजा बाहूडि जाइ मडी[11] ऊतारि ले आवतउ हूवउ।

इति श्रीवइताल पचीसी चोवीसमी कथा।२४[11]

पाठान्तर–

१, ख ग. रो। २. ख. रौ, ग. रो। ३. ख. ग. छै। ४. ख. ग. वेताल। ५ ग. क। ६. ख. ग. छै। ७ ख किण ही, ग. किण। ८. ख. इसो। ९. ख. इतरी। १० ख. ग. वेताल। ११. ख. वेताल। ११. सम्पूर्णम्।

वैताल-पचीसी री पचीसमी कथा

पइडइ मइ वइताल बोलीयो । महाराजा म्हारी वात सांभली[1] ।

दक्षण देस देवगांम एक ठाकुर रहइ ।[2] [3]तीयै रइ[3] [4]दिसा दिसी[4] वइर[5] रजपूतां सुं । एक समइ [6]छांन सइ[6] रजपूतां भेलां हुइ गांम मारीयो । अग्नि लगाई ।

ताहरां ठाकुर रइ अउसांण[7] क्यु न आयौ । रजपूत पिण गाम रा नीसर गया । ठाकुर रइ बैटो कोई न हुंतो । ठाकुर रइ बइर[9] बेटी एकणि सेरी नीसरी गया । अरु दुसमणां कहीयौ । कठइ[10] रे ठाकुर ? ठाकुर न लाधउ[11] ।

ताहरां गांम बालि लूट ले परहा गया । ठाकुर जाइ भीलां मां[12] पडीयो । भील मागई[13] । ठाकु*र पासि क्युं ही नही । भील छोडइ[14] नही ।

ताहरइ[15] ठाकुर बैर बेटी नू कह्यौ । थे तो गांव पहूचौ । हूं ईयां नै जबाब दे आऊ । उवै दूनु गांव नुं पहूती[16] । वांसइ ठाकुर भीले मारीयो ।

ठकुरांणी अरु ठाकुर री बेटी [17]देही रइ[17] भार हाल न सकइ ।

पाठान्तर–

१. ग. सुण । २. ख ग. रहे । ३. ख ग. तिण रे । ४ ख. देसा देस, ग. दसो दस । ५. ख. ग. वैर । ६. ख. ग छानै से । ७. ख. अवसाण । ८. ख. ग. रे । ९. ख. ग वेर । १०. ख. ग. कठे । ११. ख. ग. पायो । १२. ख. माहि, ग. मांहे । १३. मागण लागा, ग. मांगै । १४- ख. ग. छोडै । १५ ख. तब, ग. तरै । १६ ख. पोहती, ग. चाली । १७. ख. नितबा रे ।

---

*पत्र सख्या २३ का ख. भाग पूर्ण ।

इतरइ[1] चंडसंघ रजपुत बेटइ[2] नु साथ ले सिकार करण नू [3]जाइ हंतउ[3] अर दोड षोज ताता दुइ[4] बाइरां रा दीठा। देष बेटइ नूं कह्यौ। दोनू माहे तू किसी लेईस।

बेटइ कह्यौ। नांन्हइ[5] पग वाली हू लेईस[6]। इसडो[7] बोल कीयउ। पछइ[8] दोउ पहुता। जाइ घेरी दीठी।

देषइ[9] तो जीयरा पग वडा सु बेटी। महा कौमल रूप नांन्हा पग वाली ऊवै रो माता। ताहरा बोल प्रमाण करि कुमारी चडसिंह राषी। ठकुराणी चडसघ रइ बेटइ नुं आई।

दूहा

देव चुकावै देव द्यै,[10] देव सिलावै सधि।
देवहि सारे रेहोया, धोषा न[11] करि निबध ॥१

वार्त्ता

तठा पछइ कितै एक कालि दुहु रइ बेटा-बेटी हुवा। वैताल कह्यौ[12]। महाराजा दुहु[13] रा बेटा-बेटी माहोमाहि कासू हुइ। अण विचारीयौ मत[14] कहो।

राजा कासूं कहै। सगाई घणा प्रकार री। राजा सोच माहि पडीयो। क्षातिसील[15] जोगी नइडो[16] आयो। राजा जाब द्यइ नही। मडो जाइ[17] सकै नही।

पाठान्तर—

१. ख. इण समय, ग. इतरै। २. ख. ग. वेटा। ३ ख गयो हूतो। ४. ख. दोइ। ५. ख. नाने, ग. नान्हा। ६. ग. लेस्यु। ७. ख. इसो, ग. इम। ८ ख. ग पाछे। ९. ख. ग. देषे। १०. ख. दें, ग. दै। ११. ग. म। १२. ख. पूछीयौ, ग. वोल्यो। १३. ख. ग दोनु। १४. ख. मति। १५. ख. षतसील, ग. खातसील। १६. ख. नेंडो, ग कने। १७. ख. नीसर।

ताहरां[1] वइताल[2] कह्यउ । राजा थारइ[3] सत साहस करि षुस्याल हुवौ कहुं छुं । क्षांतिसील[4] जोगी बत्तीस लक्षणौ छइ । जउ[5] तोनू कहइ[6] मडइ नू डडोत कासू कहावइ । किसी भात कीजइ[7] मइ कदे कीयउ[8] छइ नही । मोनूं थे करि दिषाडउ[9] । पछइ हू करिसि । जाहरा जोगी डंडोत करै ताहरां षड्ग करि जोगी रउ[10] सिर[11] काटि तेल माहि घालै । पहिली जोगी न मारीयौ तउ[12] जोगी तौनुं मारसी । थां दूनु माहे मरसी जिकौ सोनो हुसी, मारणहारौ[13]विद्याधरां रो राजा[13] हूसी ।

इसी[14] भांत राजा नूं समझाइ वैताल जुहारि करि मडा महाथी[15] नीसरि गयौ । कह्यौ राजा रो सर्वथा कल्याण हुवौ ।

राजा मडै नूं ले जोगी पासि आयौ । राती घडी च्यार[16] रही । जोगी षुसी हूवौ ।

दूहो

राजा देषि जोगी कहइ,[17] मडो उतारि धरेह ।
तो सम[18] ही या बली न कौ, अब डंडोत करेह ।।

[वार्त्ता]

जेथ[19] ऊज्जल[20] चावलां रो मंडल छइ । मनुष्य रइ रक्त भरीयो कलस ववलित[21] तेल भरयउ कढाहउ[22] तेथ[23] मडउ आणि डडोत करउ[24] ।

पाठान्तर

१ ख. तब, ग इण समै । २. ख. ग. वैताल । ३. ख. थारे, ग. थारा । ४. ख. सतसील, ग. खातसील । ५. ख. जे, ग. सो । ६. ख. कह. ग. कहसी । ७ ख, ग. कीजै । ८ ख. कीया, ग. कीधो । ९. ख दिषाला, ग देखालो । १०. ख. ग. रो । ११. ख. मस्तक, ग. माथो । १२. ख. ग. तो । १३ ख विद्याधर को पदवी, ग. विद्याधर पिण । १४. ग. इण । १५ ग. सु । १६ ख. ४. पाछै । १७ ख ग कहै । १८. ख. सौं, ग. सु । १९ ख. जठै, ग. उठै । २०. ख. उजल, ग. ऊजला । २१. ग. उकलतो । २२. ख. कडाहो. ग. कडावो । २३. ख. ग. तठै । २४ ख. ग. करौ ।

ताहरां[1] राजा कह्यउ। मोनूं डंडोत करि जोवाडउ[2] ज्यूं हु करुं। तरइ जोगी डंडवत[3] करण लागउ[4]। राजा षड्ग ले जोगी रो मस्तक[5] काटीयो। कडाहइ माहै नांषीयो। स्वर्णपुरुष हुवउ*।

वैताल आइ दर्शन दीयो। फूल वरसीया। अर यो स्वर्ण धरती मांहि गाडीयो। [6]आदारी परि[6] वधसी। जोगी री विषाद मत करउ[7]।

दूहा

करतां उपरि[8] जो करइ[9], [10]तैरो व्हैसो[10] भाग।
निरापराध न वाहियै, काहू नर सिर षाग ॥१
कथा हुई मनभावथी, ऊपनी बीकानेर।
चाहैगा जन सांभल्या[11] मिलि २ रुचि सुं फेर ॥२
कौतुक [12]कवर अनूपसिंघ,[12] कवरइ[13] लिषी वणाइ।
वात पचीस वैताल री, भाषा कहि बहु भाइ ॥२ [३]

[14]श्रीवेताल पचीसी री कथा संपूर्ण। श्रीरस्तु। शुभं भवतुः॥ संवत१७७३ वर्षे काती ९ तिथौ शुक्रवासरे। श्री आगोलाई मध्ये प० पुण्यसोम लिपीकता चतुर्मासी स्थिता। श्री[14]

पाठान्तर

१. ख तब, ग. तरै। २. ग. देखालो। ३ ख दडोत, डडोत। ४ ख ग. लागो। ५. ख ग. माथो। ६. ख आदा सूटण समान। ७. ख. ग करो। ८. ख. उपर, ग. ऊपर। ९ ख. ग करै। १० ख ग. तिणरो हुवैसो। ११. ख सामलो। १२ ख. कुवर अनोपघि, ग वर अति सिद्ध। १३. ख केरै, ग. फेरे। १४. ख. "इति श्रीवैताल-पचीसी री पचीसमी कथा सपूर्ण।' शुभ भवतु कल्याण।"स. १८२२ वरषे जेठ सुदि १० दने श्री अमरकोट मध्येः परतर वेगड गच्छे वा० श्री ५ विनेचदजी पं० गांगजी लिपीत।"

ग "इना पमाडा जीत राजा पोरसां नु ले घरे आवतां सारा ही रा मनोरथ पूरीया। मनकामना सिद्ध हुइ। राजा विक्रमादित्य तीन लोक मे वदीतो हुवो सो सारा ही जाणै छै। सुमेर पर्वत राजा विक्रमादित्य गयो। बीजो कोई जाण पावे नही। घणा राजा घणा जक्ष घणां दैत्य घणां राक्षस घणा देवता घणा मोटा मानवी नु विक्रमादित्य जितो। पर दुख काट्या पछै मन प्रसाद कीयो परनारी सहोदर। पर बल देख पाछो न भाजे। सो वरस रो राज पद भोग देव पदवी पाई॥ इति श्रीवैताल पचीसी री पचीसमी कथा सम्पूर्णम् ॥२५॥ शुभम् भवतु। कल्याणमस्तु॥

---

*पत्र सं. २४ का क भाग पूर्ण हुआ।